विलक्षण आध्यात्मिक प्रश्नोतरी

रहस्यवाद को समझने का एक पर्यास

लेखक, संयोजक

प्यारे लाल

# आध्यात्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण केंद्र
# श्री मदन धाम, माणकपुर

# विलक्षण आध्यात्मिक प्रश्नोतरी
# रहस्यवाद को समझने का एक पर्यास

- इन्सान जब से होंद में आया है, प्रकृति के नियमों की खोज करता आया है
- इसी खोज को भौतिकवाद कहा गया है और इसी को यथार्थ माना जाता है
- परन्तु क्या केवल भौतिकवाद ही यथार्थ है ?
- अध्यात्मवादी मानते हैं कि जो दिखाई देता है वह असत्य है, जो दिखाई नहीं देता वह ही सत्य है
- तो क्या वास्तव में अध्यात्मवाद ही सत्य है ?
- आज तक अध्यात्मवाद को कोई समझ नहीं सका है
- इसी लिए अध्यात्मवाद को रहस्यवाद भी कहा गया है
- क्या अध्यात्मवाद को समझा जा सकता है ? क्या कोई दैवी शक्ति होती है ?
- इन्हीं प्रश्नों के उत्तर श्री मदन धाम में क्रियात्मक रूप में दिए जा रहे हैं जिन का वर्णन इस पुस्तक में है
- तभी यह पुस्तक रहस्यवाद को समझने का एक प्रयास है
- अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने का प्रयास है

लेखक
प्यारे लाल

सर्वाधिकार प्रकाशक के अधीन हैं ©

लेखक व प्रकाशक :

प्यारे लाल
प्रबन्धक,
श्री मदन धाम, मानकपुर।
गाँव : मेदा माजरा,
डाकखाना : प्रताप नगर,
नंगल डैम, रूप नगर (पंजाब)
पिन कोड : 140 125

30 मई, 2014.

प्रथम संस्करण

मूल्य : 40 **/-** रुपए

समर्पण

मैं इस पुस्तक को

परम पूज्य

## विषय सूची


| क्रमांक | विषय | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| क. | दो शब्द ..... ..... ..... ..... ..... ..... ..... ..... ...... | |
| ख. | प्रस्तावना ..... ..... ..... ..... ..... ..... ..... ..... ..... | |
| 1 | श्री मदन एक परिचय ..... ..... ..... ..... ..... ..... ..... ..... | |
| 2. | अध्यात्मवाद एवं भैतिकवाद की खोज– एक रहस्य ..... ..... ..... ..... | |
| 3. | ईश्वर से सम्बन्धित प्रश्न ..... ..... ..... ..... ..... .... ..... | |
| | प्रश्न 1 : क्या ईश्वर है ? ..... ..... ..... ..... ..... ..... ..... | |
| | प्रश्न 2 : आप कैसे कह सकते हैं कि ईश्वर हैं ? ..... ..... ..... ..... ..... | |
| | प्रश्न 3 : ईश्वर कहाँ रहतें हैं ? ..... ..... ..... ..... ..... ..... ..... | |
| | प्रश्न 4 : ईश्वर क्या करते हैं ? ..... ..... ..... ..... ..... ..... ..... | |
| | प्रश्न 5 : " ईश्वर " इन्सान के सामने क्यों नहीं आते ? ..... ..... ..... ..... | |
| | प्रश्न 6 : जब ईश्वर ने निराकार रहते हुए सब कुछ साकार बनाया है तो अब उसने साकार होने का ऐलान क्यों किया है ? ..... ..... ..... | |
| | प्रश्न 7 : ईश्वर के अस्तित्व को इन्सान सिद्ध क्यों नहीं कर सकता ?..... ..... ..... | |
| | प्रश्न 8 : ईश्वर ने सृष्टि की रचना क्यों की है ? ..... ..... ..... ..... ..... | |
| | प्रश्न 9 : ईश्वर और इन्सान का क्या रिश्ता है ? ..... ..... ..... ..... ..... | |
| | प्रश्न 10 : "ईश्वर" इन्सान से क्या चाहता है ? ..... ..... ..... ..... ..... | |
| | प्रश्न 11 : जब इन्सान ने कर्मफल ही पाना है तब ईश्वर की पूजा, भक्ति और अराधना से क्या लाभ है ..... ..... ..... ..... ..... | |
| | प्रश्न 12 : ईश्वर को प्रसन्न कैसे किया जा सकता है ? ..... ..... ..... ..... | |
| | प्रश्न 13 : ईश्वर से इन्सान क्या प्राप्त कर सकता है ?..... ..... ..... ..... | |
| | प्रश्न 14 : ईश्वर प्राप्ति से क्या अभिप्राय है ? ..... ..... ..... ..... ..... | |
| | प्रश्न 15 : ईश्वर की प्राप्ति कैसे हो सकती है ? ..... ..... ..... ..... ..... | |
| 4. | इन्सान सम्बन्धी प्रश्न ..... ..... ..... ..... ..... ..... ..... ..... | |
| | प्रश्न 1 : इन्सान क्या है ? | |
| | प्रश्न 2 : इन्सान को किन-किन श्रेणियाँ में बाँटा जा सकता है ? | |
| | प्रश्न 3 : इन्सान दुखी क्यों रहता है ? | |
| | प्रश्न 4 : इन्सान के दुखी होने का मूल कारण क्या है ? | |
| | प्रश्न 5 : अज्ञानता क्या है ? | |
| | प्रश्न 6 : स्वयं को कैसे पहचाना जा सकता है ? | |

प्रश्न 7 : प्रभु कृपा किस पर होती है ?
प्रश्न 8 : प्रभु इच्छा कैसे प्राप्त होती है ?
प्रश्न 9 : इन्सान के जीवन में ईश्वर का क्या महत्व है ?
प्रश्न 10 : इन्सान आस्तिक से नास्तिक कैसे बनता है ?
प्रश्न 11 : नेक इन्सान में कौन-कौन से गुण होते हैं ?
प्रश्न 12 : क्या इन्सान को पूजा–पाठ, जप–तप, भक्ति आदि करना चाहिए ?
प्रश्न 13 : क्या इन्सान के अन्दर ईश्वर है ?
प्रश्न 14 : हर इन्सान को अपने अन्दर ईश्वर का अनुभव क्यों नहीं होता ?
प्रश्न 15 : क्या इन्सान की मृत्यु निश्चित होती है ?
प्रश्न 16 : मृत्यु के पश्चात मनुष्य के लिए किए गए कर्म-काण्ड क्या उसके लिए सार्थक सिद्ध होते है ?
प्रश्न 17 : इन्सान के जीवन का उद्देश्य क्या होना चाहिए ?
प्रश्न 18 : इन्सान में पाँच विकारों का अस्तित्व वरदान है या अभिशाप ?
प्रश्न 19 : इन्सान गलती का पुतला है कैसे है ?
प्रश्न 20 : स्वाभिमान एवं अभिमान में क्या अन्तर है ?

5. अध्यात्मवाद और भैतिकवाद से सम्बन्धित प्रश्न ..... ..... ..... .....

प्रश्न 1 : अध्यात्मवाद क्या है ?
प्रश्न 2 : अध्यात्मवादी कौन है ?
प्रश्न 3 : भौतिकवाद क्या है ?
प्रश्न 4 : भौतिकवादी कौन है ?
प्रश्न 5 : अध्यात्मवादी और धार्मिक व्यक्ति में क्या अन्तर है ?
प्रश्न 6 : अध्यात्मवाद के शिक्षण केन्द्र और प्रशिक्षण केन्द्र में क्या अन्तर है ?
प्रश्न 7 : अध्यात्मवाद तथा भौतिकवाद में परस्पर क्या सम्बन्ध है ?
प्रश्न 8 : अध्यात्मवाद को समझने में इन्सान असमर्थ क्यों है ?

6. श्री मदन धाम सम्बन्धी प्रश्न ..... ..... ..... ..... ..... ..... .....

प्रश्न 1 : धाम किसे कहते हैं ?
प्रश्न 2 : इस दरबार का नाम “श्री मदन धाम” क्यों है और कैसे है ?
प्रश्न 3: श्री मदन धाम क्या है ?
प्रश्न 4 : श्री मदन धाम की स्थापना किसने की है ?
प्रश्न 5: श्री मदन धाम की स्थापना के उद्देश्य क्या हैं ?
प्रश्न 6 : श्री मदन धाम के मुख्य नियम व शिक्षाएँ क्या हैं ?
प्रश्न 7: आप श्री मदन धाम में क्यों आते हो और आप श्री मदन धाम से क्या प्राप्त कर सकते हो ?
प्रश्न 8: श्री मदन धाम और दूसरे धार्मिक स्थानों में क्या अन्तर है ?

प्रश्न 9: श्री मदन धाम में निर्जीव चिह्न या प्रचलित मान्यता प्राप्त स्वरूपों की स्थापना क्यों नहीं ?
प्रश्न 10 : श्री मदन धाम में आने वालों को पूजा-पाठ, जप-तप, हवन-यज्ञ आदि पर बल क्यों नहीं दिया जाता ?
प्रश्न 11: श्री मदन धाम का विरोध क्यों है ?
प्रश्न 12: श्री मदन धाम में आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या सीमित क्यों है ?
प्रश्न 13: परम शक्ति यहाँ स्वयं सदृश्य रूप में विराजमान है फिर भी श्री मदन धाम में आने वाले श्रद्धालुओं को दूसरों लोगों की तरह दुख , कष्ट, परेशानियाँ क्यों हैं ?
प्रश्न 14 : श्री मदन धाम में श्री मदन परिवार का महत्व क्यों है ?
प्रश्न 15 : श्री मदन धाम में गुरु-दीक्षा क्यों नहीं दी जाती ?

7. कर्मफल से सम्बन्धित प्रश्न ..... ..... ..... ..... ..... ..... .....

प्रश्न 1 : क्या कर्मफ़ल होता है ?
प्रश्न 2 : कर्मफल क्या होता है ?
प्रश्न 3 : कर्मफ़ल का आधार क्या है ?
प्रश्न 4 : क्या इन्सान कर्मफ़ल भोगता है ?
प्रश्न 5 : क्या कर्मफल इसी जन्म में मिलता है या कुछ आगे भी मिलता है ?
प्रश्न 6 : कर्मफल-दाता कौन है ?
प्रश्न 7 : केवल इन्सान ही कर्मफ़ल क्यों भोगता है ?
प्रश्न 8 : जब कर्मफ़ल ही भोगना है तो ईश्वर की पूजा, भक्ति का क्या लाभ ?
प्रश्न 9 : क्या कर्मफ़ल काटा भी जा सकता है ?
प्रश्न 10 : ईश्वर ने इन्सान के प्रति क्या क्या उपकार किए हैं ?

8. विविध प्रश्न ..... ..... ..... ..... ..... ..... ..... ..... .....

प्रश्न 1: दान और पुण्य का क्या महत्व है ?
प्रश्न 2: निर्जीव चिह्न का क्या महत्व है ?
प्रश्न 3: पाप और पुण्य की क्या परिभाषा हैं ?
प्रश्न 4 : धर्म क्या है ? इन्सान का सच्चा धर्म क्या है ?
प्रश्न 5: पुरुषार्थ और कर्मफल से क्या अभिप्राय है ?
प्रश्न 6 : अक्षम्य अपराध और क्षम्य अपराध क्या होते हैं ?
प्रश्न 7 : क्या प्रार्थना करनी चाहिए ? प्रार्थना किससे, क्यों और क्या करनी चाहिए ?
प्रश्न 8 : श्री मदन धाम में धार्मिक ग्रंथों का वाचन क्यों नहीं किया जाता ?
प्रश्न 9 : श्री मदन धाम के श्रद्धालुओं को अन्य धार्मिक स्थानों व तीर्थ यात्राओं पर जाने की आवश्यकता क्यों नहीं है ?

# दो शब्द

पूर्व प्रकाशित पुस्तकों के लिए पाठकों ने जो उत्साह और जिज्ञासा दिखाई है उसने मुझे एक ऐसी पुस्तक लिखने के लिए प्रेरित किया है जिसमें पूर्व प्रकाशित पुस्तक "ईश्वर, इन्सान और इन्सानियत" में लिए विषयों को और विस्तार से पाठकों के लिए संकलित किया जाए और पाठकों की जो जिज्ञासा श्री मदन धाम के प्रति पैदा हुई है, उसे एक सही दिशा प्रदान की जा सके। पूर्व प्रकाशित पुस्तकों **"जीवन दर्पण"** और **"ईश्वर, इन्सान और इन्सानियत"** में उठाए गए विषयों के सन्दर्भ में अनेक पाठक मेरे पास अपने प्रश्नों को लेकर आए। मुझे लगा कि पाठक श्री मदन जी के बारे में और श्री मदन धाम के बारे में और जानना चाहते हैं, क्योंकि साहित्य ही किसी संस्था का अक्स होता है और जो इन्सान आध्यात्मिक साहित्य को पढ़ता है, वह धार्मिक व्यक्ति जिज्ञासु बन जाता है। धार्मिक व्यक्ति केवल अपने संस्कारों तक ही सीमित रहता है परन्तु जिज्ञासु जानना चाहता है कि ईश्वर किन-किन रंगों में खेलता है। जैसे-जैसे वह अधिक ज्ञान प्राप्त करता है, उसका अपने इष्ट के प्रति प्यार और विश्वास बढ़ता जाता है और दूसरे धर्मों और विचारधाराओं के प्रति सम्मान पैदा होता है। दूसरे धर्मों और विचारधाराओं के जानने से ही एक सच्चा जिज्ञासु सच्चा अध्यात्मवादी बन सकता है।

मेरा यह मानना है कि प्रस्तुत यह पुस्तक अध्यात्मवाद के पथ पर चलने वाले पथिक के लिए मंज़िल तो नहीं परन्तु एक मील पत्थर ज़रूर साबित होगी और एक धार्मिक व्यक्ति के मन में ईश्वर को जानने के लिए रोशनी की मीनार का काम करेगी। इस लिए इस पुस्तक का नाम **"विलक्षण अध्यात्मिक प्रश्नोतरी – रहस्यवाद को समझने का एक प्रयास "** रखा गया है जो पाठक को "**अंधकार से उजाले की ओर**" ले जाएगी। कोई भी अन्धी आस्था अंधकार है, अर्थात सचाई को जाने बिना निम्नस्तर की शक्तियों को पूजना, उनसे डरना, अंधकार है और सत्य को जान कर उससे निःस्वार्थ प्रेम करना, प्रकाश है।

इस पुस्तक को पाठकों की सुविधा के लिए कुछ खंडों में विभाजित किया गया है। प्रथम खंड में ईश्वर संबंधी प्रश्न-उत्तर हैं। दूसरे खंड में इन्सान संबंधी प्रशन-उत्तर हैं। तीसरे खंड में अध्यात्मवाद और चौथे खंड में कर्मफल के संबंध में प्रश्न-उत्तर दिए गए हैं। पांचवें खंड में श्री मदन धाम के संबंध में प्रश्न-उत्तर दिए गए हैं। इस खंड में समाज में श्री मदन धाम के प्रति लोगों की जो धारणाएँ है उन धारणाओं और शंकाओं को ध्यान में रखते हुए प्रश्न-उत्तर दिए गए हैं और अन्त में कुछ विवध प्रश्न उठाए गए हैं। यह पुस्तक, जो लोग यहाँ आते हैं, उनके लिए तो लाभकारी है ही, क्योंकि यह पुस्तक उनके द्वारा प्राप्त किए ज्ञान को और सुदृढ़ करेगी और समाज में विचरते हुए, जिन प्रश्नों का उन्हें सामना करना पड़ता है, उनके उत्तर देने में सक्षम बनाएगी। जो लोग यहाँ नहीं आते परन्तु वह ईश्वर के बारे में जानना चाहते हैं, उनके लिए भी उपयोगी सिद्ध होगी और उनके ज्ञान और आस्था में और बढ़ावा करेगी।

सर्वप्रथम मैं अपने इष्ट, श्री मदन जी को कोटि–कोटि नमन करता हूँ और उनका धन्यवाद करता हूँ कि उन्होंने मुझे अपने समीप बुलाया, अपना अनुभव दिया, ज्ञान दिया व सेवा करने का अवसर प्रदान किया। उनके श्री मुख से जो ज्ञान प्राप्त किया है, उसमें से कुछ बूँदें ही इस पुस्तक में समेट पाया हूँ। इस के अतिरिक्त मैं श्री गुरबख्श सिंह जी, श्री यशपाल सिंह डडवाल जी, श्री सुभाष आर्य जी, श्री मनदीप जी और श्री देस राज जी का आभारी हूँ, जिन्होंने इस पुस्तक के लेखन कार्य और इसे संकलित करने में अपना–अपना सहयोग दिया है।

मैं आशा करता हूँ कि यह पुस्तक भी पाठकों को पूर्व पुस्तकों की तरह पसंद आएगी और पाठक इस पुस्तक में दिए ज्ञान को अपने जीवन में धारण कर लाभान्वित होंगे।

जय श्री मदन !

प्यारे लाल
प्रबन्धक,
श्री मदन धाम प्रबन्धक कमेटी,
श्री मदन धाम, मानकपुर।
नंगल डैम -140125 ( रूपनगर )

## प्रस्तावना

ईश्वरवाद एक रहस्यवाद है। यह उन शक्तियों के बारे में ज्ञान है जो दिखाई नहीं देती अपितु उनका प्रभाव इन्सानी जीवन पर पड़ता है परन्तु इन्सान की बुद्धि इन्हें समझने में असमर्थ है। इस लिए जिनको इन शक्तिओं का अनुभव हो जाता है उनके लिए इन सब शक्तियों का अस्तित्व है, परन्तु जिन्हें इनका व्यक्तिगत अनुभव नहीं मिलता उनके लिए यह वहम, मानसिक कमजोरी, अन्धविश्वाश मात्र है। तर्क आस्था को नहीं मानता और आस्था तर्क को नहीं मानती। जिसकी जहाँ आस्था है उसे वहीं से प्रमाण मिल जाते हैं परन्तु वह प्रमाण व्यक्तिगत होते हैं। जिसे जो अनुभव मिलता है वह दूसरों को समझा नहीं सकता ठीक उसी तरह जैसे कि गूंगा मीठा खा कर उसका स्वाद नहीं बता सकता। जिन्हें दैवी शक्तिओं का अनुभव मिला या उनसे सम्पर्क हुआ, उन महान आत्माओं ने कहा कि केवल वही कर्ता हैं, इन्सान के वश में कुछ नहीं है। इन्सान के जीवन में सुख-दुख, लाभ-हानि, सफलता-असफलता, **जय-पराजय**, जीवन-मृत्यु इत्यादि, ईश्वर की इच्छा से ही घटित होता है। वे रक्षक, मददगार, मार्गदर्शक हैं। परन्तु भौतिकवादी तर्क को महत्व देते हैं। उनका मानना है कि इस सृष्टि को न किसी ने रचा है और न ही किसी ने इसे नियमों में बांधा है, न कोई कर्म फल देता है और न ही कोई किए अपराध को क्षमा करता है। इस लिए प्रार्थना करने की कोई जरूरत नहीं है क्योंकि कोई प्रार्थना सुनने वाला है ही नहीं। न कोई दर्शन देता है न ही कोई वर देता है। यह सब मति-भ्रम, नेत्र-भ्रम या दृष्टि-भ्रम हैं अर्थात अध्यात्मवाद इन्सान के मन की कपोल-कल्पना है, वास्तव में ईश्वर नाम की कोई सत्ता नहीं है।

ईश्वर है या नहीं, इस द्वंद पर से पर्दा आज तक नहीं उठ सका है। परम शक्ति ने चाहे जिसे भी अपना अनुभव दिया, उसके माध्यम से अपने नियमों, गुणों और शक्तियों का किसी सीमा तक प्रदर्शन भी किया, परन्तु अपना अस्तित्व सर्वदा अलग बनाए रखा है। जिसके माध्यम से जैसे गुणों का प्रदर्शन हुआ उसके साथ वैसा ही विशेषण लग गया। इसी लिए अनेकों ही मत हैं, अनेकों ही धर्म हैं, अनेकों ही रूप हैं, अनेकों ही पूजा पद्धतियाँ हैं, अनेक सम्प्रदाय और अनेक द्वंद पैदा हो गए हैं। यह द्वंद तब ही दूर हो सकते हैं जब वह ईश्वर स्वयं अपने बारे में ज्ञान दे और जो वह कहे उसे प्रमाणित करे। आज परम शक्ति इन्सान बनी है। उसने अपने बारे में ज्ञान देने के लिए आध्यात्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण केंद्र खोला है। जिन प्रश्नों के उत्तर पाने के लिए मानव सदियों से कोशिश करता रहा है, उन प्रश्नों के उत्तर क्रियात्मक ढंग से दिए जा रहे हैं। जैसे विज्ञान के शिक्षार्थी प्रयोगशाला में स्वयं प्रयोग करके ज्ञान प्राप्त करते हैं, उसी तरह श्री मदन धाम में परम शक्ति ने कुछ गिने चुने व्यक्तियों को अपनी शरण में लिया है और उन्हें करो और सीखो की पद्धति के अनुसार ज्ञान दिया जा रहा है। यहाँ पर पिछले अठाईस वर्षों से परम शक्ति अपनी नर लीला कर रही है। श्री मदन धाम में जो ज्ञान दिया गया है, उस ज्ञान को आधार बना कर कुछ प्रश्न-उत्तर संकलित किए गए हैं। इन प्रश्न-उत्तरों को पांच खंडों में विभाजित किया गया है। हर खंड अपने आप में पूर्ण विषय है। विषय-वस्तु को ध्यान में रखते हुए पाठकों की सुविधा के अनुसार ही विषयों का चयन किया गया है। भाषा सरल और सटीक रखने की कोशिश की गई है ताकि आम पाठक अपने आप को इन प्रश्नों से जुड़ा महसूस करे। उनके मन में जो प्रश्न हैं, जो कुछ वे जानना चाहते हैं वह उन्हें इस पुस्तक में मिल जाए। श्री मदन जी और श्री मदन धाम एक चर्चित विषय है क्योंकि यहाँ आने वाले व्यक्ति और जिसने यहाँ के बारे में सुना है, सभी के

मन में यह प्रश्न उठना स्वभाविक है कि श्री मदन धाम क्या है ? श्री मदन जी कौन हैं ? वहां कौन कार्यकर्ता है ? वहाँ किसकी पूजा होती है ? क्यों होती है ? इत्यादि। एक अध्याय में इन प्रश्नों के उत्तर साधारण पाठकों की रुचियों और मानसिक स्तर को ध्यान में रखते हुए दिए गए हैं। यहाँ आने वाले श्रद्धालुओं को जो ज्ञान परम शक्ति ने अपने श्री मुख से दिया है या क्रियात्मक ढंग से सिखाया है, उस ज्ञान को ईश्वर, अध्यात्मवाद, इन्सान, कर्मफल, के अध्यायों में प्रश्न-उत्तरों के रूप में संकलित किया गया है। इनके अतरिक्त कुछ महत्त्वपूर्ण प्रश्नों को "विवध प्रश्न" के अध्याय में संकलित किया है।

मैं आशा करता हूँ कि इस पुस्तक को पढ़ कर पाठकगण ईश्वर द्वारा दिए हुए ज्ञान को अपनाकर अपने जीवन को सफल बनाएँगे।

जय श्री मदन !

प्यारे लाल
प्रबन्धक,
श्री मदन धाम प्रबन्धक कमेटी,
श्री मदन धाम, मानकपुर।
नंगल डैम-140125 ( रूपनगर )

# अध्याय – 1

## श्री मदन : एक परिचय

इस दरबार की कार्यप्रणाली के बारे में कुछ जानने से पूर्व पाठकों को जिज्ञासा होगी कि वह कौन है जिसे परम शक्ति ने अपना शरीर घोषित किया है ? कार्यप्रणाली आरम्भ होने से पूर्व उनका जीवन कैसा था ? उनके पारिवारिक हालात कैसे थे ? ऐसे अनेकों प्रश्न पाठकों के मन में पैदा होंगे। उनकी जिज्ञासा को ध्यान में रखते हुए मैं यह अध्याय लिखने जा रहा हूँ जिसमें श्री मदन जी का कार्यप्रणाली शुरू होने से पूर्व के जीवन का संक्षिप्त विवरण देने की कोशिश की है। यह अध्याय पाठकों को इस पुस्तक में दिए विवरण को समझने में बुहत सहायक सिद्ध होगा।

वैसे तो मेरा और श्री मदन जी का बचपन से ही परिचय रहा है। परन्तु जब वो जालंधर से माणकपुर आकर रहने लगे तो मैं पुन: उनके सम्पर्क में आया। श्री मदन जी का जन्म 22 अक्तूबर 1947 को गाँव माणकपुर में हुआ। श्री मदन जी एक साधारण ब्राह्मण (अग्निहोत्री) परिवार में से हैं। आदरणीय श्री श्रीराम जी और माँ सरस्वती जी उनके माता-पिता थे। श्री मदन जी के तीन भाई और एक बहन थी। श्री मदन जी अपने भाई-बहनों में सबसे छोटे हैं। श्री श्रीराम जी एक मध्यवर्गीय परिवार से सम्बन्धित थे परन्तु उन्होंने अपने सभी बच्चों को उच्च शिक्षा दिलवाई और वह अच्छे पदों पर आसीन हुए। माँ सरस्वती जी बहुत विनम्र और शांत रहने वाले थे। मैं उनकी विनम्रता से बहुत प्रभावित था। वे अपने बच्चों को भी उनके नाम के साथ 'जी' लगा कर पुकारते थे और किसी छोटे बच्चे को भी 'जी' कह कर पुकारते थे। हर जरूरतमंद की मदद करना, हर किसी के दुख को अपना दुख समझना और करुणा भाव तो उनमें कूट-कूट कर भरा हुआ था, यहाँ तक कि यदि कोई भिखारी भी उनके दर पर आया तो वे उसे खाली हाथ नहीं भेजते थे। उन्होंने कभी भी अपने बच्चों बीच पक्षपात नहीं किया। माँ सरस्वती जी ने अपने बच्चों को बड़े ऊँचे संस्कार दिए। उन्हें एक समान शिक्षा और सम्मानपूर्वक जीवन जीने के अवसर प्रदान किए । यद्यपि वे इतने पढ़े लिखे नहीं थे परन्तु उन्होंने अपने सभी बच्चों को उच्च शिक्षा के लिए प्रेरित किया । उन्हीं के संस्कार और शिक्षा थी कि श्री मदन जी इतने विनम्र, शान्त, सरल स्वभाव वाले हैं। यहाँ एक घटना उल्लेखनीय है कि एक बार श्री मदन जी माँ सरस्वती जी से आकर बोले –

> "माँ मुझे लोग़ मजाक करते हैं, मेरी हसीं उड़ाते हैं, लेकिन मैं किसी को उत्तर नहीं दे पाता क्योंकि मुझे कोई बात सूझती ही नहीं।"

आगे से माता सरस्वती जी ने मुस्कुरा कर कहा –

> "देखो बेटा ! यह तुम्हारा अवगुण नहीं, गुण है। इसे जीवन में कभी मत छोड़ना, मज़ाक का जवाब तो हर कोई दे सकता है, मगर मज़ाक चुप-चाप सुनना, ऐसा कोई–कोई ही सकता है।"

अगर कोई और माँ होती तो अपने बच्चे को कोसती और उसे जवाब देने के लिए उत्साहित करती, परन्तु माँ सरस्वती जी ने श्री मदन जी को उकसाया नहीं, बल्कि उनके अन्दर की विनम्रता को एक नई दिशा दी। जो लोग श्री मदन जी के समीप आते हैं वे उनकी विनम्रता और सरल स्वभाव से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते। श्री मदन जी ने अपनी प्राथमिक शिक्षा गाँव के निकट ही प्राप्त की। फिर वह जालन्धर अपने बड़े भाई श्री दाता राम

जी के पास चले गए। वहीं पर उन्होंने अपनी पढ़ाई पूर्ण की और अध्यापन कार्य शुरू किया। 30 मई 1970 को जालन्धर छावनी में श्री कर्मचन्द सहोड़ और श्री कमला देवी जी की सपुत्री श्री सोमवती जी से उनका शुभ विवाह-सम्बन्ध सम्पन्न हुआ। जालन्धर में ही उनके यहाँ पुत्री श्री रेणु जी और दो पुत्र श्री पंकज जी, श्री पुनीत जी ने जन्म लिया। कुछ समय पश्चात उनकी नियुक्ति सरकारी हाई स्कूल, लालपुर बरबा में हो गई और वह परिवार सहित अपने पैतृक गाँव माणकपुर आ गए।

श्री मदन जी शुरू से ही बहुत साधारण और सरल स्वभाव के हैं। मैं और श्री मदन जी दोनों अध्यापन कार्य करते थे। मेरा उनसे अक्सर मिलना होता था और उनके साथ विचार विमर्श भी होता था। मैं उनसे मिलकर हैरान रह जाता कि वे कैसे इन्सान हैं, न किसी से ज्यादा बात करतें हैं, न किसी के काम में दखल देते हैं, न किसी की निंदा-चुगली करते हैं, अपने आप तक ही सीमित रहते हैं, वे कौन सी दुनियाँ में रहते हैं! जब भी उनके सहयोगी उन्हें मन्दिर या किसी सामाजिक समागम में चलने के लिए कहते तो वो विनम्र भाव से मना कर देते। न वो किसी मन्दिर जाते न किसी और धार्मिक स्थान पर जाना पसंद करते परन्तु किसी को जाने से रोकते भी नहीं थे। उन्होंने अपने स्कूटर के पीछे और घर के बाहर भी लिखवाया हुआ था "ॐ नमः"। लोग़ उनसे पूछते "ॐ नमः" का मन्त्र तो अधूरा है आपने अधूरा मन्त्र क्यों लिखवाया है, अर्थात् ॐ नमः शिवायः क्यों नहीं लिखवाया, तो श्री मदन जी मुस्कुरा देते, परन्तु कुछ उत्तर नहीं देते थे। उनका परिवार शुरू से ही ज्वाला जी जाता था, इस लिए वे भी उनके साथ ज्वाला जी जाया करते थे।

श्री मदन जी एक आम इन्सान की तरह साधारण जीवन व्यतीत कर रहे थे। वे सुबह से रात तक कड़ी मेहनत करके अपने परिवार का पालन पोषण करते थे। सुबह से ही बच्चे उनके पास पढ़ने के लिए, उनके घर पर आना शुरू हो जाते और यह सिलसिला देर रात तक चलता रहता। श्री मदन जी आर्थिक रूप से गरीब बच्चों को निःशुल्क पढ़ाते थे। घर में पशु भी रखे हुए थे और वे स्वयं साईकिल पर उनके लिए चारा लाते और घर के सभी कार्य करते। उनका जीवन स्कूल से घर तक ही सीमित था। न किसी से ज्यादा मेलजोल और न किसी से नफ़रत। उनके विशेष आत्मा होने के सबूत तो पहले से ही मिलते रहे थे परन्तु तब समझ नहीं आता था। एक बार की बात है कि एक जटाधारी साधु सड़क पर खड़ा था। जब श्री मदन जी उसके सामने से साईकिल पर निकले तो उस साधु ने उन्हें झुक कर नमस्कार किया। श्री मदन जी ने देखा तो रुक गए। उन्होंने साधु से कहा --

"आपने मुझे नमस्कार क्यों किया ? उल्टा मुझे आपको नमस्कार करना चाहिए। आप साधु महात्मा हैं।"

उसके उत्तर में साधु ने कहा –

"आखिर आप कब तक अपने आप को छुपाओगे ? एक दिन तो आपको प्रकट होना ही है।आप तो त्रिलोकी नाथ हो मैं तो क्या, सारा संसार आपके आगे झुकेगा। हो सकता है मैं वो दिन देखने के लिए जीवित न रहूँ। मेरी आपसे विनती है अब और अपने आप को न छुपाओ, अपने आप को प्रकट कर दो।"

श्री मदन जी ने विनम्रता से उत्तर दिया –

"महात्मा जी, मुझे तो आपकी बातें समझ नहीं आ रहीं । आप क्या कहना चाहते हो ? "

इस के बाद वह साधु हँस दिया। श्री मदन जी अपने रास्ते चले गए और वह अपने रास्ते चला गया। वह साधु दोबारा कभी दिखाई नहीं दिया ।

इसी तरह की एक और घटना वर्णनीय है। एक साधु श्री मदन जी से अक्सर मिलता था और कहता था कि मैं जब भी आपको देखता हूँ तो मुझे आपके पीछे-पीछे देवी–देवता चलते हुए नजर आते हैं। श्री मदन जी मुस्कराकर कहते कि "मुझे तो दिखाई नहीं देते।"

इन घटनाओं का उल्लेख करने का मेरा उद्देश्य केवल इतना ही है कि सृष्टि के स्वामी ने अपना अस्तित्व बताने के लिए अनेक नाटक किए, अनेक लीलाएँ हैं जो सर्वशक्तिमान ने महान आत्माओं के रूप में की हैं। आज भी सर्वशक्तिमान एक नाटक, एक लीला कर रहे हैं। उन्होंने सब कुछ पहले से ही निर्धारित किया हुआ है और एक के बाद एक अध्याय पर से पर्दा उठा रहे हैं। ईश्वर तो एक ही है पर उनकी लीला करने के ढंग अनेक हैं। इसीलिए कहते है "तू बेअंत तेरी माया बेअंत।" अर्थात हे ईश्वर ! आपकी कोई सीमा नहीं। आप असीम हो और आपकी माया की भी कोई सीमा नहीं।

मैं उन दिनों माणकपुर के स्कूल में ही पढ़ा रहा था, इसलिए मैं उनके निवास स्थान जाता रहता था। उनके व्यक्तित्व में इतना आकर्षण था कि कोई भी उनसे मिल कर दोबारा जरूर मिलना चाहता। जब माणकपुर दरबार की कार्य प्रणाली अपने आरम्भिक दौर में थी, मेरी पत्नी पुष्पा जी बीमार हो गए। उन्हें साँस की तकलीफ थी मगर समय-समय पर रोग बदल रहे थे। मैंने बुहत इलाज करवाया परन्तु कोई फर्क नहीं पड़ा। मैं अपनी पत्नी की सेहत को लेकर बहुत परेशान रहता था। बच्चे छोटे थे और घर की भी देख-भाल करनी होती थी। इस तरह कोई छ:-सात महीने मैं श्री मदन जी के सम्पर्क में नहीं रहा। एक दिन माणकपुर दरबार का एक श्रद्धालु मेरे घर किसी काम से आया। उसने मेरी पत्नी की हालत देखी। उसने मुझसे कहा कि माणकपुर में मास्टर श्री मदन जी पर मेहर हुई है। आप अपनी पत्नी को एक बार वहाँ ले जाकर देखो। उसकी बात सुनकर मैंने कहा, यह काम तो वही कर सकता है जो लच्छेदार भाषा बोल सकता हो और लोगों को गुमराह कर सकता हो। मैं श्री मदन जी को अच्छी तरह से जानता हूँ, यह काम उनके बस का नहीं है। वे न तो वे लच्छेदार भाषा बोल सकते हैं और न ही किसी को गुमराह कर सकते हैं। उसने उत्तर दिया "एक बार जाने में क्या हर्ज है ? आप एक बार जा कर तो देखो, वहाँ कई लोग़ ठीक हुए हैं। हो सकता है आपकी पत्नी भी वहाँ ठीक हो जाए।"

मैं अनमने मन से अपनी पत्नी को लेकर साईकिल पर श्री मदन जी से मिलने चल पड़ा। मैं शुरू से ही कम्युनिस्ट और तर्कशील विचारधारा से जुड़ा था। मेरा इन बातों में यकीन नहीं था। परन्तु पत्नी की बिमारी और श्री मदन जी के व्यक्तित्व के कारण मैं अनमने भाव से माणकपुर आ गया। जब मैं उनके घर पहुंचा तो श्री मदन जी ने मेरे आने का कारण पूछा। मैंने अपनी पत्नी के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने सारी बात सुनी और कुछ देर बाद बाबा बालक नाथ के रूप में कहा –

"इन्हें कुछ नहीं हुआ। इन्हें मैंने पकड़ा हुआ है, यह कष्ट मेरा दिया हुआ है। मैं इसे ठीक कर दूंगा पर मेरी एक शर्त है कि जो दवा साईकिल पर टंगी है, उसे नहर में फैंक दो। जब दवा फैंक दोगे, उसके पांच मिनट के अन्दर वह ठीक हो जाएगी।"

मेरे पैरों तले जमीन निकल गई और मैं हैरान हो गया क्योंकि यहाँ आने से पूर्व मैंने दवाई लेकर साईकिल के आगे टांग रखी थी और तब भी वो लिफाफा साईकिल के साथ ही टंगा हुआ था। यह मेरे सिवा किसी को पता नहीं था। मेरा दिमाग यह सब मानने को तैयार नहीं था पर जो सामने हो रहा था उसे झुठलाया भी नहीं जा सकता था।

मैं कुछ देर बैठा रहा और जो कुछ वहाँ हो रहा था उसे देखता रहा। जब श्री मदन जी प्रवेशता में बातें करते तो उनके हाव-भाव बदल जाते, आवाज़ बदल जाती, आने वाले पीड़ित लोगों से बड़े सख्त शब्दों में बात करते और कई व्यक्ति जो भूत प्रेत से पीड़ित थे उनसे मल्ल युद्ध भी करना पड़ता। मैं फिर पत्नी को लेकर चल दिया और रास्ते में जब नहर आई तो मैंने वो दवा नहर में फैंक दी और अपनी पत्नी से उसकी तबीयत के बारे में पूछा। उसने कहा कि वह ठीक है। मैं हैरान रह गया। वह जो एक कदम चल नहीं सकती थी, अब कह रही थी, 'मैं खुद घर चली जाऊँगी'। मैं उसे घर जाने के लिए कह कर खुद वापिस श्री मदन जी के पास आ गया। मेरे दिमाग में हजारों प्रश्न पैदा हो रहे थे, शंकाए पैदा हो रही थीं। मेरे सामने जो व्यक्ति थे, वे वो श्री मदन नहीं थे जिन्हें मैं बचपन से जानता था वे तो कोई और थे। मुझे भी और लोगों की तरह इस बात पर यकीन हो रहा था कि कोई बाहरी ताकत श्री मदन जी के शरीर में प्रवेश करके बात कर रही है। वह कौन है जो श्री मदन जी के शरीर में बात कर रहा है ? किस ने मेरी पत्नी को ठीक किया ? वह कौन हो सकता है ? इन्ही विचारों के साथ मैं वापिस श्री मदन जी के पास आ गया। उन्होंने पूछा कि अब आपकी पत्नी की तबीयत कैसी है ? मैंने कहा कि आप जानो मुझे तो पता नहीं। इस पर श्री मदन जी के माध्यम से बाबा बालक नाथ जी ने कहा कि "मैं प्रमाण तो देता हूँ मगर प्रमाण पर प्रमाण नहीं देता। मैंने उन्हें ठीक कर दिया है अब वो स्वस्थ हैं।" इस घटना ने मेरे भीतर जिज्ञासा भर दी, मेरे अन्दर इस कार्य-प्रणाली को जानने की जिज्ञासा बढ़ गई और मैं जिज्ञासावश श्री मदन जी के पास हर रोज आने लगा। श्री मदन जी एक समय मेरे मित्र थे, सह-कर्मी थे फिर मेरे गुरु बने अब वो मेरे गुरु और इष्ट दोनों हैं।

मेरा सफर यह जानने के लिए शुरू हुआ था कि श्री मदन जी के शरीर में कौन बात करता है ? इस सफर में मैंने जो देखा, समझा, और ज्ञान प्राप्त किया, उसका सारांश पाठकों के लिए प्रस्तुत कर रहा हूँ। अध्यात्मवाद में दो तरह के लोग होते हैं। एक वे जो समझ कर विश्वास करते हैं और दूसरे वे जो विश्वास करके समझते हैं। जो ईश्वर को समझना चाहते हैं वे एक न एक दिन भटक जाते हैं क्योंकि ईश्वर को समझा नहीं जा सकता। ईश्वर तो असीम है उसे इन्सान की बुद्धि पकड़ नहीं सकती। लेकिन जो विश्वास करते हैं और ईश्वर के गुणों को जानना चाहते हैं तो ईश्वर उनकी जिज्ञासा को श्रद्धा में बदल देते है। एक श्रद्धावान व्यक्ति ही ईश्वर का साक्षातकार कर सकता है। चाहे ईश्वर साकार हो या निराकार, अदृश्य हो या सदृश्य उस का भेद नहीं पाया जा सकता। श्री मदन जी के चरणों में 28 साल व्यतीत करने के उपरान्त भी मैं यह समझता हूँ कि जितना उन्होंने समझाया केवल उतना ही जान पाया हूँ परन्तु पूर्ण रूप में उन्हें जानना इन्सान के वश में नहीं है।

श्री मदन धाम मे परम शक्ति ने कुल देवता के स्तर से लेकर अपने तक पहुंचाया है।

श्री मदन धाम में कुल देवता से कार्य प्रणाली आरम्भ हुई और प्रशिक्षण के कई चरणों में से गुज़ारते हुए हम लोगों को परम शक्ति तक पहुँचाया गया। शुरू में श्री मदन जी को लोग तांत्रिक के रूप में देखते थे, फिर बाबा के रूप में, उसके बाद गुरु रूप में नाम दान दिया गया, फिर 'भगवान मदन' कहा जाने लगा और फिर अनेकों विशेषण लगे। वर्तमान में उन्हें 'पूर्ण परमेश्वर' के विशेषण से सम्बोंधित किया जाता है। श्री मदन जी ने कभी नहीं कहा कि 'मैं कुछ हूँ' वे तो अपने आप को साधारण इन्सान ही दर्शाते हैं। परन्तु परम शक्ति ने, जो भी भूमिका निभाई, उस भूमिका में श्री मदन जी को अपना शरीर कहा। आज परम शक्ति यह घोषणा कर रही है कि –

"मैं अनादि, अनंत, सर्वोच्च शक्ति घोषणा करती हूँ, कि वैसे तो मैं न नर हूँ न नारी हूँ, मैं तो एक शक्ति हूँ परन्तु मैं इस समय एक विशेष उद्देश्य को लेकर इन्सान बनी हूँ। जिस शरीर में मैं बोल रही हूँ यह शरीर मेरा है। मेरा नाम मदन हैं।"

पूर्ण परमेश्वर श्री मदन जी की जय !

अध्याय – 2

## अध्यात्मवाद एवं भौतिकवाद की खोज -- एक रहस्य

संसार में हर चीज़ का जोड़ा है जैसे दिन-रात, खुशी-ग़मी, यश-अपयश, सफलता-असफलता, लाभ-हानि आदि। एक के गुण दूसरे के विलकुल विपरीत होते हैं। इसी तरह अध्यात्मवाद और भौतिकवाद का भी एक जोड़ा है। इन दोनो का नदी के दो किनारों की तरह कभी मेल नहीं होता। परन्तु यह भी सत्य है कि एक के बिना दूसरे का कोई महत्व नहीं होता, इसलिए इन्सान के जीवन में दोनों का होना ज़रूरी है। आज तक दोनों ही विषयों में बहुत सी खोजें हो चुकीं हैं परन्तु अन्तिम सत्य क्या है ? यह आज तक एक रहस्य ही बना हुआ है।

यह तो विज्ञान भी मानता है कि इन्सान के धरती पर आने से पहले सब कुछ बन चुका था। जब इन्सान होश में आया, तो उसे धरती पर उगे पेड़, नदी-नाले, मैदान, पहाड़, पशु-पक्षी, वन, झरने, बादल, पानी, धूप, दिन, रात आदि दिखाई दिए। जो भी भू पर दिखाई देता है उसे भौतिक वस्तु कहा जाता है। इन्सान ने सभी भौतिक वस्तुओं का ज्ञान अपनी पांच ज्ञान इन्द्रियों द्वारा प्राप्त किया।

भौतिकवाद उन सभी भौतिक पदार्थों और भौतिक शक्तियों बारे ज्ञान प्राप्त करना है जो मनुष्य की ज्ञान इन्द्रियों को प्रभावित करती हैं और किसी न किसी यंत्र की पकड़ में आती हैं। जैसे कि सभी ठोस, द्रव, गैसें, बिजली, प्रकाश, ताप, चुम्बकता आदि। इनसे संबंधित ज्ञान जैसे कि भौतिकी, रसायण शास्त्र, खगोल शास्त्र, जीव विज्ञान आदि सब भौतिकवाद कहलाता है। भौतिकवादी केवल भौतिक पदार्थों को ही यथार्थ समझते हैं। किसी परा-भौतिक शक्ति की होंद को नहीं मानते।

अध्यात्मवाद उन परा-भौतिक शक्तियों बारे ज्ञान प्राप्त करना है जो मनुष्य की ज्ञान इन्द्रियों को प्रभावित नहीं करती और न ही किसी यंत्र की पकड़ में आतीं हैं परन्तु फिर भी मनुष्य के जीवन को प्रभावित करती हैं। अध्यात्मिक शक्ति हर एक प्राणी को जीवित रखती है। यही शक्तियाँ किसी इन्सान में प्रवेशता का कारण बनती हैं। कभी-कभी सभी शक्तियों की स्रोत परम शक्ति किसी व्यक्ति विशेष से सम्पर्क स्थापित करके उससे बातचीत भी करती है। उन माध्यमों को ही ऋषि-मुनि, गुरु, देवी, देव, पैगम्बर या भगवान की संज्ञा मिलती है।

आज के इन्सान ने अपने पूर्वजों की तुलना मे विज्ञान और तकनीकी क्षेत्र में तथा मानव जीवन के प्रत्येक पहलू पर अनेकों उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं। मानव जीवन को अधिक से अधिक सुखमय एवं सार्थक बनाने के लिए धरती, अंतरिक्ष और समुद्र से सम्बन्धित सूक्ष्म ज्ञान प्राप्त किया है।

आज के युग में यातायात और संचार के साधनों की खोज के होने से दुनिया पहले की तुलना में सिमटकर छोटी हो गई है। वर्तमान युग में इन्सान वायुयान द्वारा सफर करके एक देश में सुबह का नाश्ता, दूसरे में दोपहर का भोजन और तीसरे में रात का भोजन कर सकता है, भले ही उन देशों की दूरी आपस में कितनी भी क्यों न हो। इसी प्रकार एक व्यक्ति घर पर बैठे-बैठे ही बड़ी सुगमता से दूर-दूर तक देश-विदेश में संदेशों का आदान-प्रदान कर सकता है। आज संचार के बहुत से साधन हैं, जैसे टेलीफोन, मोबाईल फोन, टेलीविजन, फैक्स, ई-मेल आदि। इसी प्रकार चिकित्सा एवं विज्ञान के क्षेत्र में भी इन्सान ने आशातीत खोजें की हैं। आज युद्ध प्रणाली के क्षेत्र में भी अत्याधुनिक अस्त्र-शस्त्र, रसायनिक, परमाणु तथा जीवाणु-युक्त हथियार, मिसाईल आदि खोज लिए गए हैं जिनसे कुछ ही क्षणों मे सब कुछ नष्ट किया जा सकता है।

आज का मानव चन्द्रमा पर पहुंच कर अपनी सफलता का ध्वज फहरा चुका है। इक्कीसवीं सदी का मानव इस दुनिया के अतिरिक्त दूसरी दुनिया की खोज में प्रयत्नशील है। प्रकृति के रहस्यों को जानने के लिए इन्सान अन्तरिक्ष में

नए ग्रहों व सितारों की खोज कर रहा है। भौतिकवाद के रहस्यों को जानने के लिए जिन्होंने खोज की, उन्हें भू-वैज्ञानिक, चिकित्सा वैज्ञानिक, खगोल वैज्ञानिक, रसायन वैज्ञानिक, भौतिक वैज्ञानिक, जीव वैज्ञानिक आदि की संज्ञा दी गई है।

आज विज्ञान का युग है और विज्ञान प्रगति के शिखर पर है, लेकिन क्या इन्सान प्रकृति के रहस्यों को पूर्ण रूप से जान पाया है ? प्रकृति के सभी रहस्यों को पूर्ण रूप में जान पाना इन्सान के वश की बात नहीं है। चिकित्सा विज्ञान ने आशातीत प्रगति की है। जीवन-रक्षक दवाइयों की खोज की गई है जिस कारण इन्सान का जीवनकाल बढ़ गया है। शरीर के अंगों को बदलने की सुविधा भी उपलब्ध है, परन्तु इसके बावजूद इन्सान की मृत्यु होती है जबकि उसके सभी अंग ठीक होते हैं। क्या डाक्टर उसे पुनः जीवित कर सकते हैं ?

उपरोक्त विवरण से प्रतीत होता है कि कोई शक्ति है जो शरीर में विद्यमान रहती है, जिसके निकल जाने से इन्सान को मृत घोषित कर दिया जाता है। वह शक्ति इन्सान को दिखाई नहीं देती। धार्मिक ग्रंथों के अनुसार उसे जीव-आत्मा की संज्ञा दी गई है। जीव-आत्मा न स्थान घेरती है, न ही उसका भार होता है और न ही वह किसी यंत्र की पकड़ में आती है परन्तु वह इन्सान के शरीर का संचालन करती है और उसे जीवित रखती है। इसका सम्बन्ध अध्यात्मवाद से है।

विज्ञान इस तथ्य को भी स्वीकार करता है कि इन्सान जब अस्तित्व में आया तब जीव-निर्जीव बन चुके थे तथा सूर्य, चन्द्रमा, सितारे आदि ग्रह भी बनकर नियमों में बंध चुके थे। अर्थात सब कुछ बन चुकने उपरान्त ही इन्सान धरती पर प्रकट हुआ। इससे स्पष्ट होता है कि यह सब कुछ बनाने में इन्सान का कोई योगदान नहीं है, यद्यपि इन्सान इस धरती का सर्वश्रेठ प्राणी कहलाता है। फिर वह कौन है जिसने ये सब कुछ बनाया है ?

हर जीव के शरीर के अन्दर रक्त-संचार प्रणाली, श्वास-प्रणाली एवं पाचन प्रणाली आदि कार्यरत रहती हैं। इसी तरह इन्सानी शरीर में भी उपरोक्त प्रणालियाँ होती हैं, जैसे साँस का निश्चित गति से चलना, खाना खाने के पश्चात खाने का पाचन होना, शरीर में रक्त-संचार का निश्चित गति से होना। प्रश्न है कि क्या इन्सान इन प्रणालियों का संचालन अपनी इच्छा से कर सकता है ? यदि नहीं तो, फिर इनका संचालन कौन करता है ? जो इनका संचालन करता है वह दिखाई नहीं देता और उसीका सम्बन्ध अध्यात्मवाद से है।

इन्सानी जीवन में ऐसी परिस्थितियाँ और वातावरण बन जाते हैं जब इन्सान सब कुछ होते भी लाचार, बेबस और मजबूर हो जाता है। जो वह करना चाहता है, कर नहीं पाता और जो वह नहीं चाहता, वह हो जाता है। क्या इन्सान चाहता है कि वह जीवन मे दुख पाए, उसको अपयश मिले, उसे अपने कार्यक्षेत्र में असफलता मिले ? परन्तु इन्सान को अपने जीवन में इन परिस्थितियों में से गुज़रना पड़ता है।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि कोई और ही है, जिसके आगे इन्सान लाचार, बेबस और मजबूर होता है और जिसके हाथ में इन्सान का यश-अपयश, सुख-दुख, सफलता-असफलता, लाभ-हानि होती है। वह दिखाई नहीं देता लेकिन इन्सानी जीवन को प्रभावित करता है। उसका सम्बन्ध अध्यात्मवाद से है।

जीव-निर्जीव, ग्रह, सूर्य, चन्द्रमा, धरती, सितारे एवं इन्सानी जीवन नियमों में बंधा हुआ है; जैसे सूर्य का उदय-अस्त होना, ग्रहों का नियमित गति से चक्कर लगाना, बीजों का अंकुरित होना, निश्चित समय पर पौधों का विकास होना, उन पर फूलों का निकलना और फलों का लगना आदि। इसी तरह इन्सान का पैदा होना, शिशु अवस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था, युवावस्था, का होना, निश्चित समय पर इन्सान के कद का बढ़ना और फिर बन्द हो जाना, वृद्धावस्था का आना, बच्चे के जन्म लेते ही माँ के शरीर मे दूध का आना, जीव का पैदा होना और मरना, निर्जीव का

भी स्वरूप बदल जाना, धरती में गुरुत्वाकर्षण शक्ति का होना आदि। यदि धरती में पर्याप्त गुरुत्वाकर्षण शक्ति न होती तथा जीवन-रक्षक वायुमण्डल न होता तो क्या इन्सानी जीवन सम्भव हो सकता था ? इसी तरह धरती में उपजाऊ शक्ति का होना, धरती में खनिज-पदार्थ, तेल, पैट्रोलियम, कोयला, लोहा, चांदी, सोना, ताम्बा आदि का होना भी प्रकृति का नियम है।

उपरोक्त सभी चीज़ों को नियमों में बांधने वाला कौन है ? धरती के अंदर उन पदार्थों को पैदा करने वाला कौन है ? इन्सान तो इन सब के बारे मे ठीक ढंग से जान भी नहीं सका है। उन सभी को नियमों में बांधने वाला और उनको धरती के अंदर पैदा करने वाला इन्सान तो हो नहीं सकता, फिर वह कौन हो सकता है ? वह दिखाई नहीं देता और उसका सम्बन्ध अध्यात्मवाद से है।

विज्ञान के चमत्कारों से आज इन्सान में यह धारणा बनती जा रही है कि वह स्वयं कर्ता है तथा सृष्टि में यह जो कुछ भी हो रहा है वह स्वचलित है और यह सब प्रकृति का खेल है परन्तु सत्य कुछ और ही है। जिन्होंने इस सत्य की खोज की, उन्हें ऋषि-मुनि, सन्त आदि कहा गया। उन्होंने इस रहस्य को जाना कि शरीर के अंदर एक शक्ति है, जो शरीर का संचालन करती है परन्तु दिखाई नहीं देती। उस शक्ति के अस्तित्व से इन्कार भी नहीं किया जा सकता। ठीक उसी तरह इस सृष्टि का संचालन करने वाली भी एक शक्ति है जो अनादि, अनंत, अगम्य, अगोचर और सर्वोच्च है। वह शक्ति सृष्टि के कण-कण मे विद्यमान होते हुए भी दिखाई नहीं देती लेकिन सृष्टि का संचालन करती है। उसी शक्ति को किसी ने परम शक्ति कहा तो किसी ने ईश्वर, अल्लाह, वाहेगुरु, गॉड, राधा-स्वामी, निरंकार कहा। किसी ने उसे कुदरत, प्रकृति अथवा नेचर का नाम दिया है।

परम शक्ति कहो या ईश्वर, वह न नर है न नारी है, वह एक शक्ति है, जो अनादि, अनंत, अगम्य, अगोचर और सर्वोच्च है। वही शक्ति जीव-निर्जीव को बनाने वाली तथा नियमों में बांधने वाली है। वही इन्सान को यश-अपयश, सुख-दुख, सफ़लता-असफ़लता, लाभ-हानि, खुशी-गमी, जीवन-मृत्यु देती है। वही इन्सान की सच्ची गुरु है क्योंकि इन्सान ने जो कुछ भी सीखा है भले ही वह अध्यात्मवाद हो या भौतिकवाद, उसी से सीखा है। उसी शक्ति ने अपने बारे में ज्ञान करवाने के लिए समय-समय पर महान आत्माओं को धरती पर भेजा। देश, काल और समय की परिस्थितियों के अनुसार उनके द्वारा अपने बारे में ज्ञान करवाया ताकि इन्सान जान सके कि इस सृष्टि को कोई बनाने वाला, चलाने वाला और नियमों में बांधने वाला है। वही कर्मफलदाता है। इसी तरह भौतिकवाद में भी परम शक्ति ने देश, काल और समय की परिस्थितियों के अनुसार इन्सान की बुद्धि पर नियन्त्रण करके उसके द्वारा आविष्कार करवाए परन्तु स्वयं पर्दे के पीछे रही और उसे अपना अनुभव नहीं होने दिया। इसलिए इन्सान ने उन सभी खोजों तथा अविष्कारों का श्रेय स्वयं ले लिया। ठीक इसके विपरीत जो अध्यात्मवादी है वह अध्यात्मवाद की खोज का श्रेय उस अदृश्य शक्ति को देता है क्योंकि उस अदृश्य शक्ति ने ही उसे ज्ञान करवाया कि उसके नियम, गुण और शक्तियाँ क्या हैं।

उपरोक्त विवरण के सम्बन्ध मे इतना ही स्पष्ट करना है कि चाहे भौतिकवाद हो या अध्यात्मवाद, इन्सान उसके रहस्य को उतना ही जान पाया है जितनी परम शक्ति ने उस सम्बन्ध में खोज करवाई है। इन्सान आज तक न तो अध्यात्मवाद के रहस्यों को पूर्ण रूप से जान सका है न ही भौतिकवाद के। परम शक्ति कभी भी इन्सान को पूर्ण ज्ञान नहीं करवाती। वह इन्सान को उतना ही ज्ञान करवाती है जितना देश, काल तथा समय की परिस्थितियों के अनुसार आवश्यक होता है।

## अध्याय – 3

## ईश्वर से सम्बन्धित प्रश्न

प्रश्न 1 : क्या ईश्वर है ?

उत्तर : हाँ, ईश्वर है।

प्रश्न 2 : आप कैसे कह सकते हैं कि ईश्वर हैं ?

उत्तर : इस तथ्य को विज्ञान भी मानता है कि सृष्टि में जो कुछ भी है वह सब कुछ इन्सान के अस्तित्व में आने से पहले बन चुका था तथा नियमों में बंधा हुआ था। इसका अर्थ है कि यह सब कुछ न तो इन्सान ने बनाया और न ही इन्हें नियमों में बांधा है। प्रश्न है कि वह कौन है जिसने इस सृष्टि की रचना की और इसे नियमों में बांधा ? वह ही ईश्वर या परम शक्ति है। जिस तरह शरीर के अन्दर एक शक्ति है जो शरीर का संचालन करती है परन्तु दिखाई नहीं देती और जिसके अस्तित्व से इनकार भी नहीं किया जा सकता, ठीक उसी तरह इस सृष्टि का संचालन करने वाली भी एक शक्ति है जो अनादि, अनन्त और सर्वोच्च है। वह सृष्टि के कण-कण में होते हुए भी दिखाई नहीं देती। उसी अदृश्य शक्ति को ही परम शक्ति, ईश्वर, अल्लाह, वाहेगुरु, गॉड, राधा-स्वामी, निरंकार आदि नाम दिए गए हैं। उसे ही कुदरत, प्रकृति या नेचर कहा गया है।

आधुनिक वैज्ञानिक युग में इन्सान स्वयं को कर्ता मानने लगा है परन्तु उसके जीवन में ऐसे क्षण भी आते हैं जब वह बेबस, लाचार, मजबूर हो जाता है। जो वह चाहता है वह होता नहीं, और जो नहीं चाहता वह (घट जाता है) हो जाता है। इन्सानी जीवन में अनेक तरह के उतार-चढ़ाव उसके न चाहते हुए भी आते हैं। यह सब कुछ करने वाला कौन है ? इसका अर्थ है कि कर्ता कोई और है। वही ईश्वर है, परम शक्ति है। संसार में जितने भी जीव या निर्जीव हैं सभी की अपनी-अपनी आयु निश्चित है। किसी जीव की आयु एक वर्ष है, किसी की पांच वर्ष है तो किसी की दस वर्ष। किसी जीव की आयु तो कुछ पल ही होती है। कुछ ऐसे जीव भी हैं जिनकी आयु 400 वर्ष की भी होती है। इसी तरह इन्सान की आयु की भी सीमा है। उस निश्चित आयु सीमा के पश्चात कोई और जीव हो या इन्सान, सभी को शरीर त्याग कर इस धरा से जाना पड़ता है। इसके साथ-साथ हर जीव के जीवन में जन्म से लेकर मृत्यु तक अनेक परिवर्तन आते हैं। हर जीव वर्ग में परिवर्तन लगभग एक समान पाए जाते हैं। जीव के न चाहने पर भी ऐसा होता है। वह कौन है जो यह सब करता है ? वही ईश्वर है। इसलिए हम कह सकते हैं कि ईश्वर है।

हर जीव के शारीरिक अंग होते हैं। कुछ बाहरी अंग होते हैं तो कुछ शरीर के आन्तरिक अंग होते हैं। बाहरी अंगों का प्रयोग तो हर जीव अपनी इच्छा से करता है परन्तु शरीर के आन्तरिक अंग जैसे श्वास प्रणा ली, रक्त संचार प्रणाली, पाचन प्रणाली का प्रयोग या नियंत्रण अपनी इच्छा से नहीं कर सकता। ये स्वचालित प्रक्रियाएँ हैं। वह कौन है जो इन अंगों को सुचारू रूप से चलाता भी है और उनका नियंत्रण भी करता है। वह वही अदृश्य शक्ति है जिसे ईश्वर कहा जाता है।

संसार में जितने भी धर्म हैं उनके संस्थापकों के माध्यम से या तो ईश्वर ने बातचीत की या उनसे सम्पर्क स्थापित किया। उन संस्थापकों में से किसी ने कहा कि मुझ से मेरा अलोही ही बात करता है तो किसी ने कहा मुझ से अल्लाह बात करता है। किसी ने कहा मुझ से मेरा पिता जो सब का मालिक है, वह बात करता है। किसी महान

आत्मा ने कहा, 'धुर की बाणी' (ईश्वर की आवाज़) आई है। इसी विश्वास पर ही सभी धर्म चल रहे हैं और जो इन धर्मों के अनुयायी हैं इसी आधार को मान कर ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं।

प्रश्न 3: ईश्वर कहाँ रहते हैं ?

उत्तर : ईश्वर न नर है न नारी है, वह तो एक शक्ति है। शक्ति का कोई रूप नहीं होता। वह शक्ति अनादि, अनंत, अगम्य, अगोचर, सर्वरूपिणी, सर्वभुवन वन्दनीय तथा सर्वोच्च है। जिस शक्ति का न आदि है न अन्त है, जिस तक पहुँचा नहीं जा सकता और न ही वह आँखों से दिखाई देती है फिर उसके सम्बन्ध में निश्चित रूप से कोई कैसे कह सकता है कि वह कहाँ रहती है ? परन्तु फिर भी जो उसको मानने वाले हैं उनकी अपनी अलग-अलग धारणाएँ हैं। कुछ एक का मानना है कि ईश्वर सातवें आसमान पर रहता है, तो कुछ एक का मानना है कि वह ब्रह्मलोक में निवास करता है और कुछ एक का मानना है कि वह परमधाम में रहता है। जब वह शक्ति है तो उसका कोई रूप नहीं अर्थात वह निराकार है। निवास स्थान तो उसका होता है जो शरीर रूप में हो, अर्थात साकार हो। ईश्वर निराकार रूप में तो सृष्टि के कण-कण में वास करता है। जो ईश्वर की भक्ति करते हैं वे उसे सदृश्य रूप में देखकर ही सन्तुष्ट होते हैं। अपने भक्तों को सन्तुष्ट करने के लिए ईश्वर समय-समय पर अपने माध्यमों के द्वारा अपना नया नाम, नया रूप तथा मुकाम निश्चित करवाते हैं। जिस शरीर को वह अपने रूप में मान्यता देते हैं और उसके माध्यम से अपने नियमों, गुणों और शक्तियों का किसी सीमा तक प्रदर्शन भी करते हैं तो वह रूप जहाँ पर निवास करता है वही उसका निवास स्थान कहलाता है। परन्तु जब वह स्वयं अदृश्य से सदृश्य बन कर इन्सानी रूप में आती है तो जहाँ पर वह रूप निवास करता है वही उसका निवास स्थान कहलाता है। समय उपरान्त वह स्थान तीर्थ स्थलों के रूप में परिवर्तित हो जाते हैं जिनकी यात्रा करने से मनुष्य को संसारिक लाभ पहुँचते हैं। ईश्वर जब अदृश्य है तो वह एक शक्ति है, उसका कोई नाम, रूप और मुकाम नहीं होता।

प्रश्न 4: ईश्वर क्या करते हैं ?

उत्तर: सृष्टि की रचना से पहले ईश्वर ने सोचा कि मैं एक ऐसे जीव की रचना करूँ जो मुझे जाने, माने और मेरा साझीदार बने। ऐसा जीव बनाने के लिए उसने इन्सान की कल्पना की, लेकिन उसे बनाया नहीं। बनाने से पहले ईश्वर ने सोचा कि इन्सान रहेगा कहाँ ? उसे जीवित रहने के लिए क्या-क्या आवश्यक होगा, भाव इन्सानी जीवन जीने के लिए जो कुछ भी ज़रूरी था, ईश्वर ने पहले उसे बनाया। जैसे ब्रह्मांड, सौर मण्डल, सूर्य, धरती, जल, वायु, अग्नि, आकाश, आदि। जब सब कुछ बनकर तैयार हो गया और उन सब को नियमों में बांध दिया तब अन्त में इन्सान को बनाया।

ईश्वर ने अपना कर्तव्य निभाते हुए समय समय पर महान-आत्माओं को धरा पर भेजकर उनके द्वारा इन्सान को अपने बारे में ज्ञान दिया तथा अपना रूप व नाम निश्चित करवाया। ईश्वर ने अपने तथा इन्सानी कार्यक्षेत्र में एक सीमा रेखा बना रखी है। जो कार्य इन्सानी कार्यक्षेत्र में हैं वे ईश्वर नहीं करते, उन्हें इन्सान ने ही करना होता है और जो कार्य इन्सानी कार्यक्षेत्र से बाहर हैं, उन्हें ईश्वर करता है, जैसे धरती को बनाना, उसमें गुरुत्वाकर्षण शक्ति पैदा करना, धरती में उपजाऊ शक्ति को पैदा करना, धरती के अन्दर खनिज पदार्थों के भण्डार बनाना। सौर मण्डलों को बनाना, उन्हें नियमों में बांधना इत्यादि। धरती पर से अधर्म का नाश करना। धरती पर संतुलन बनाए रखने के लिए ईश्वर

समय-समय पर महामारियों एवं प्राकृतिक आपदाओं को पैदा करता है और आवश्यकता पड़ने पर भू-तल परिवर्तन और विनाश भी करता है। अर्थात ईश्वर वही कार्य करता है जो इन्सानी कार्यक्षेत्र से बाहर होता है।

प्रश्न 5: " ईश्वर " इन्सान के सामने क्यों नहीं आते ?

उत्तर : ईश्वर ने सृष्टि की रचना से पहले "इन्सानी जीव" को बनाने की कल्पना की। इन्सान को ही सब प्राणियों में से सर्वश्रेष्ठ बनाया। उसे ही तीव्र बुद्धि दी और सोचने समझने की शक्ति प्रदान की। उसे ही अपना साझीदार बनाया। ईश्वर यह भी चाहता है कि इन्सान उसे जाने, माने, प्यार करे; उसके बारे में ज्ञान प्राप्त करे। फिर ऐसा क्या कारण है कि ईश्वर इन्सान के सामने नहीं आता अर्थात उसके लिए वह अधिकतर अदृश्य ही रहता है।

1. पहला कारण यह है कि यदि ईश्वर अपने ईश्वरीय रूप में इन्सान के सामने आ जाए तो इन्सान उस रूप के तेज को सहन नहीं कर सकता।

2. दूसरा कारण है कि यदि ईश्वर एक साधारण इन्सानी रूप में इन्सान के सामने आ जाए तो इन्सान उसे पहचान ही नहीं पाता। इन्सान उसे भी एक साधारण इन्सान समझने लगता है और जो ईश्वर का मान-सम्मान होना चाहिए वह नहीं कर पाता। यदि ईश्वर उसे अपना अनुभव करवाने लगता है तब भी इन्सान के मन में अनेक शंकाएँ उत्पन्न होने लगती हैं, क्योंकि उसने तो कभी ईश्वर को देखा नहीं होता। इसलिए उन शंकाओं के अन्तर्गत वह ईश्वर का आदर सत्कार जो होना चाहिए नहीं कर पाता ।

3. इन्सान स्वभाव से ही स्वार्थी है। वह ईश्वर से अशुभ और अनुचित इच्छाओं की पूर्ति चाहता है जो न तो देश के कानून के अंतर्गत होती हैं और न ही नैतिकता पर आधारित होती हैं। इन इच्छाओं की पूर्ति के लिए इन्सान ईश्वर को अपनी इच्छा अनुसार चलाने की आशा करता है जो सर्वथा अनुचित है।

4. ईश्वर कर्मफलदाता है, उसे हर किसी को कर्मफल देना होता है। जब ईश्वर सामने साकार रूप में हो कर कर्मफल देता है तो इन्सान उसे मानने से इन्कार कर देता है और ईश्वर से गिला शिकवा करने लगता है। यहाँ तक कि वह ईश्वर को दोषी मानने लगता है और उससे नाराज़ हो जाता है। ऐसा करने से वह एक और दुष्कर्म कर लेता है। इसलिए ईश्वर इन्सान से अपनी दूरी बनाए रखने के लिए अधिकतर अदृश्य ही रहता है।

प्रश्न 6 : जब परम शक्ति कण-कण में विद्यमान है तो घोषणा क्यों कर रही है कि वह इन्सान बनी है ?

उत्तर : परम शक्ति, ईश्वर, अल्लाह, गॉड, वाहेगुरु, राधा-स्वामी, निरंकार, ये सब एक ही शक्ति के नाम हैं। उसी शक्ति ने इस सृष्टि की रचना की है और नियमों में बांधा है। वह शक्ति अनादि अनन्त, अगम्य, अगोचर और सर्वोच्च है। उस ताकत को आज तक किसी ने नहीं देखा परन्तु उस ताकत के अनेकों नाम हैं, अनेकों रूप हैं और

अनेकों स्थान हैं। उसके बारे में असंख्य ग्रन्थ लिखे गए हैं। जब इन्सान ने उसे देखा नहीं, उस तक पहुंचा नहीं, तो इन्सान को उसके बारे में पता कैसे चला ? इस का उत्तर है कि उस ताकत ने ही अपनी इच्छा से इन्सान को जितना जरूरी था अपने बारे में ज्ञान दिया। उसने इन्सान को अपने बारे में ज्ञान देने के चार ढंग अपनाए।

1. शरीर धारण करना : परम शक्ति कण-कण में विद्यमान है, हर शरीर के भीतर भी है और बाहर भी। शरीर धारण करने का अभिप्राय यह है कि परम शक्ति अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु किसी इन्सान का चुनाव करती है और उसके शरीर में अपने आप को प्रकट करती है और उसकी चेतना पर कुछ समय के लिए अपना नियन्त्रण करती है। उस समय उसके मुख से जो कहलाया जाता है वह पूर्ण होता है और चमत्कार भी करवाए जाते हैं। उन अलौकिक प्रदर्शनों के कारण उस इन्सान को समाज में विशेष स्थान मिलता है और लोग उसका मान सम्मान करना शुरू कर देते हैं। समय पाकर उस जैसे व्यक्तियों की पूजा देवी-देवताओं, वीरों–पीरों, भगवानों इत्यादि के रूप में होने लगती है।

2. सजीव रूप को मान्यता देना : परम शक्ति अपना अस्तित्व बताने के लिए किसी इन्सान को अपने सजीव रूप में मान्यता देती है। जिन्हें परम शक्ति अपने सजीव रूप में मान्यता देती है उनके शरीर को कुछ समय के लिए धारण नहीं करती अपितु उनकी बुद्धि पर नियंत्रण रखती है। शरीर धारण करने में और मान्यता प्राप्त रूप में अन्तर यह होता है कि जिस शरीर को परम शक्ति धारण करती है उस शरीर को विशेष अवस्था में कुछ समय के लिए प्रयोग किया जाता है। उस समय जो कहा जाता है वह किसी सीमा तक ठीक होता है। मान्यता प्राप्त रूप की बुद्धि पर परम शक्ति हर समय नियन्त्रण रखती है वह जिसे जो कहते हैं वह अधिकतर ठीक होता है। परम शक्ति दोनों रूपों द्वारा ज्ञान भी देती है और अलौकिक प्रदर्शन भी करती है, परन्तु स्वयं पर्दे के पीछे रहती है। लोग उनके द्वारा अलौकिक प्रदर्शन देख कर उन्हें ही ईश्वर मानने लगते हैं। उन रूपों को मानने से परम शक्ति उनके याद करने वालों को दर्शन भी देती है और उनकी मनोकामनाएँ भी पूर्ण करती है। इसी कारण आज ऐसे अनेकों व्यक्ति हैं जिन्हें ईश्वर के रूप में याद किया जा रहा है।

3. निर्जीव चिह्नों को मान्यता देना : परम शक्ति द्वारा कई बार न तो शरीर धारण किया जाता है और न ही अपने रूप में मान्यता दी जाती है। परम शक्ति किसी व्यक्ति के साथ संपर्क स्थापित करती है, उसे आवाज देती है परन्तु उसे कोई रूप नहीं दिखाती। उसे जो कहा जाता है वह ठीक होता है, उसे जो आवाज आती है केवल उसे ही सुनाई देती है। वह व्यक्ति ईश्वर से जो ज्ञान प्राप्त करता है वह अन्य लोगों में बांटता है। इस तरह उसके कुछ अनुयायी बन जाते हैं। परम शक्ति उसके द्वारा अपना नया नाम और नया निर्जीव चिह्न स्थापित करवाती है। उन व्यक्तियों को परम शक्ति अपने रूप में मान्यता नहीं देती न ही उनकी पूजा होती है। पूजा निर्जीव चिह्नों की होती है परन्तु परम शक्ति उन व्यक्तियों को महान-आत्मा के रूप में मान्यता देती है और उनका भी नाम रखती है।

4. स्वयं जन्म ले कर आना : ऊपर दिए रूपों में परम शक्ति अपने गुणों और नियमों का किसी सीमा तक प्रदर्शन करती है। लेकिन अपना पूर्ण भेद नहीं देती जिस कारण उपरोक्त रूप अपने जीवन में लाचार, बेबस रहते है। इस लिए जिसका भी सम्पर्क परम शक्ति से हुआ उसने ही कहा "तू बेअन्त, तेरी माया बेअंत" अर्थात परम शक्ति ने अपना पूर्ण भेद किसी को नहीं दिया, जितना जरूरी समझा उतना ही ज्ञान दिया उतना ही प्रदर्शन किया। इस लिए आज अनेकों नाम हैं, अनेकों रूप हैं, अनेकों स्थान हैं, असंख्य विचारधाराएँ हैं, जिस कारण असंख्य द्वंद्व हैं। परम शक्ति सौवें संगम-युग पर भू-तल परिवर्तन से कुछ समय पूर्व इन्सान बन कर धरती पर आती है और अपने बारे में सत्य का ज्ञान देती है और अपना अस्तित्व सिद्ध करती है।

उपरोक्त दिए ढंगों द्वारा परम शक्ति अपना अस्तित्व इन्सान को सिद्ध करके दिखाती है। अब प्रश्न है कि परम शक्ति जब सब कुछ अदृश्य रह कर ही करती है तो उसे सदृश होने की क्या जरूरत है ? वह कौन-कौन से कारण हैं जिनके कारण परम शक्ति को इन्सान बन कर आना पड़ता है।

1. कर्म फल देने के लिए : जैसा कि इतिहास बताता है कि आदि काल से भक्त ईश्वर की खोज कर रहे हैं, उसकी भक्ति कर रहें हैं। जब किसी भक्त की भक्ति पूर्ण हो जाती है तो परम शक्ति उसके सामने प्रकट हो कर उन्हें दर्शन देती है। जो परम शक्ति को निराकार मानते हैं उन्हें वो दर्शन नहीं देती परन्तु उन्हें आवाज देती है और अपना अस्तित्व सिद्ध करती है। जब भक्त प्रार्थना करते हैं, वर मांगते हैं कि उन्हें अपने निज-रूप में दर्शन दो, आप कहाँ हो, हमें अपने चरणों की सेवा दो, इत्यादि। परम शक्ति कर्म फल दाता है। परम शक्ति को उनकी भक्ति का फल देने के लिए, उन वरदानों को पूरा करने के लिए, धरा पर इन्सान बन कर आना पड़ता है।

2. अपना अस्तित्व सिद्ध करने के लिए :- परम शक्ति ने इन्सान के आस्तित्व में आने पूर्व उसके लिए जो जरूरी था उसकी व्यवस्था की और सब कुछ नियमों में बांध दिया। परम शक्ति भी इन्सान से चाहती है कि इन्सान उसे जाने, माने और प्यार करे। परम शक्ति ने अपना अस्तित्व इन्सान को बताने के लिए महान-आत्माओं को धरती पर भेजा और अपना अस्तित्व इन्सान को बताया। आज जब विज्ञान का युग है इस समय विज्ञान अपनी चर्म सीमा पर है। विज्ञान के चमत्कारों के कारण आज इन्सान ईश्वर के अस्तित्व को मानने से इन्कार कर रहा है और महान आत्माओं के द्वारा दिया ज्ञान उसे यथार्थ से परे लगता है । इस लिए परम शक्ति को चिरस्थाई और शंका रहित ज्ञान देने के लिए स्वयं इन्सान बनना पड़ता है। परम शक्ति अपने पूर्ण गुणों का प्रदर्शन किसी माध्यम के द्वारा नहीं करती, इसलिए उसे अपने पूर्ण गुणों, नियमों और शक्तियों का प्रदर्शन करने के लिए स्वयं इन्सानी रूप में धरती पर आना पड़ता है

3. सत्य का ज्ञान देने के लिए : परम शक्ति ने ही समय-समय पर महान-आत्माओं को अपने बारे में समय, काल और स्थान के अनुरूप ज्ञान दिया। जिस कारण अनेकों ही विचारधाराएँ और मतभेद पैदा हो गए हैं। ईश्वर को कोई निराकार मानता है, कोई साकार

मानता है, कोई सातवें आसमान पर मानता है, कोई बैकुंठ धाम में मानता है। इस लिए सत्य का ज्ञान करवाने के लिए धरती पर परम शक्ति को इन्सान बन कर आना पड़ता है।

4. अध्यात्मवाद के द्वन्द्वों पर से क्रियात्मक रूप में पर्दा उठाने के लिए : अध्यात्मवाद में अनेकों द्वंद्व हैं जैसे कि ईश्वर निराकार है, साकार है, ईश्वर नर है या नारी है, ईश्वर जन्म लेता है या नहीं, ईश्वर है या नहीं, ईश्वर कर्मफल दाता है या नहीं, ईश्वर एक है या अनेक। ये कुछ द्वंद्व और प्रश्न ऐसे हैं जिन पर से पर्दा उठाने के लिए परम शक्ति को धरती पर इन्सान बन कर स्वयं आना पड़ता है।

5. मोक्ष प्रदान करने के लिए : इन्सान कर्मफल पाने के लिए जन्म लेता है। वह कर्म करता है, मरता है फिर जन्म लेता है। इन्सान को जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त करने के लिए और मोक्ष का रास्ता बताने के लिए परम शक्ति स्वयं इन्सान बन कर आती है। परम शक्ति साकार रूप में ही बता सकती कि उसके नियम क्या हैं ? सिद्धांत क्या है ? वह इन्सान से क्या चाहती है ? उन शिक्षाओं और सिद्धांतों का अनुसरण करके इन्सान मोक्ष प्राप्त कर जन्म मरण के बन्धन से मुक्त हो सकता है।

6. विश्वबन्धुत्व की स्थापना के लिए : सम्पूर्ण मानवता एक परिवार है । परम शक्ति ने सभी महान आत्माओं के द्वारा प्रेम, करुणा और क्षमा का संदेश दिया। परन्तु समाज धर्म, जाति, सम्प्रदाय, भाषा, रंग भेद में बँट गया। ईश्वर ने तो इन्सान ही बनाया परन्तु इन्सान ने लकीरें खींच कर लोगों को बाँट दिया। मानवता को विश्वबन्धुत्व का पाठ-पढ़ाने और विश्वबन्धुत्व की स्थापना करने के लिए परम शक्ति को स्वयं इन्सान बन कर धरा पर आना पड़ता है।

7. क्रियात्मक रूप में ज्ञान देने के लिए : आज विज्ञान के युग में इन्सान ईश्वर के अस्तित्व को ही नहीं मानता। अगर मानता भी है तो वह देवी-देवता, वीर-पीर, भगवान, गुरु तक ही सीमित है। परम शक्ति तक बहुत कम व्यक्ति पहुँचते हैं। कहते सभी हैं कि ईश्वर एक है परन्तु जो व्यक्ति जिसे मानता है उसी को सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान मान रहा है। हर रूप में कार्य परम शक्ति ही करती है। जिनके भी आज नाम हैं उनकी मान्यता परम शक्ति ने ही रखी है। वास्तव कोई अपने आप में कुछ नहीं होता। हर रूप में कर्ता परम शक्ति है। इस बात को क्रियात्मक रूप में सिद्ध करने के लिए परम शक्ति को इन्सान बन कर धरा पर आना पड़ता है और जो कार्य वह अदृश्य रूप में नहीं कर सकती वे कार्य उसे साकार रूप में कर के बताने पड़ते है।

प्रश्न 7 : ईश्वर के अस्तित्व को इन्सान सिद्ध क्यों नहीं कर सकता ?

उत्तर : संसार में अनेकों देवी-देवों, वीरों-पीरों या भगवानों के स्थान हैं। लोगों की किसी सीमा तक इन स्थानों पर मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं, पर हर किसी की समस्या हर स्थान पर हल नहीं होती। इन्सान स्वभाव से ही स्वार्थी है। जिसकी जहाँ पर मनोकामना पूर्ण हो जाती है उसका वहीं पर ही विश्वास बन जाता है। क्योंकि लोगों को

कर्ता के बारे में ज्ञान नहीं होता इसलिए वे देवी देवताओं को ही कर्ता मान लेते हैं और कर्ता यानि ईश्वर के बारे में जानने की कोशिश ही नहीं करते। कुछ लोग ऐसे भी हैं जिनका मानना है कि ईश्वर नाम की कोई शक्ति नहीं है, वे कहते हैं कि यदि वह है तो उसका अस्तित्व सिद्ध करके दिखाओ। बहुत से लोग दावा तो करते हैं कि उनके पास शक्ति है, उनके माध्यम से चमत्कार भी होते हैं परन्तु वे भी सिद्ध नहीं कर सके कि उनके पास दैवी शक्ति है। वास्तव में कोई भी इन्सान ईश्वर के अस्तित्व को न तो आज तक सिद्ध कर सका है और न ही कर सकेगा। उसके निम्नलिखित कारण हैं :-

1. ईश्वर या परम शक्ति सदैव ही अपना अस्तित्व अलग बनाए रखती है।
2. ईश्वर के बिना कोई भी सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान नहीं है।
3. कोई भी इन्सान ईश्वर का प्रयोग अपनी इच्छा से नहीं कर सकता, जबकि ईश्वर हर इन्सान का प्रयोग अपनी इच्छा से करते हैं।
4. ईश्वर अपनी शक्तियाँ किसी को नहीं देते, जब कि वे किसी माध्यम द्वारा स्वयं अपनी इच्छा से शक्तियों का प्रदर्शन करते हैं।
5. किसी भी इन्सान के पास कोई दैवी शक्ति नहीं होती। यदि होती तो इन्सान उसका प्रयोग अपनी इच्छा से कर सकता।
6. ईश्वर अपनी इच्छा से उस इन्सान को ही अपना अस्तित्व सिद्ध करके बताते हैं जिसको वह ज़रूरी समझते हैं।
7. ईश्वर किसी की भी चुनौती, धमकी व हठ स्वीकार नहीं करते। उनका अनुभव तो केवल श्रद्धा, विश्वास, लगन और प्यार से ही पाया जा सकता है।
8. ईश्वर अपनी इच्छा से किसी के भी माध्यम से अपना अस्तित्व सिद्ध करने के लिए चमत्कार कर सकते हैं परन्तु कोई भी माध्यम अपनी इच्छा से ऐसा नहीं कर सकता।

प्रश्न 8 : ईश्वर ने सृष्टि की रचना क्यों की है ?

उत्तर : अध्यात्मवादी मानते हैं कि इस सृष्टि की रचना ईश्वर ने की है। ईश्वर ने यह रचना क्यों की ? उसका उद्देश्य क्या था ? इस प्रश्न का उत्तर इस प्रकार दिया जा सकता है कि जैसे माता-पिता घर बनाते हैं परन्तु बच्चों के बिना घर सूना सूना लगता है। वे अकेलापन महसूस करते हैं, इसलिए वे चाहते हैं कि उनकी संतान हो ताकि उनका भी मनोरंजन हो सके, उनको जानने, मानने और प्यार करने वाला कोई हो। ठीक उसी तरह अनादि, अनन्त शक्ति ने सोचा कि वह अकेली है, उसे जानने, मानने वाला कोई हो, जो उसका राज़दार बनकर उससे प्यार कर सके। यही सोचकर उसने इन्सान की कल्पना की और इन्सान के जीवन यापन के लिए जो आवश्यक था पहले उसका निर्माण किया और फिर इन्सान की रचना की। भाव सृष्टि की रचना इन्सान के लिए की और इन्सान को अपने लिए बनाया। दूसरे शब्दों में यह भी कह सकते हैं कि ईश्वर ने सृष्टि की रचना केवल अपने लिए की है ताकि इन्सान उसे जान सके, मान सके और उससे प्यार करके अपने जीवन को सफल बना सके।

प्रश्न 9 : ईश्वर और इन्सान का क्या रिश्ता है ?

उत्तर : ईश्वर ने हर चीज़ का जोड़ा बनाया है जैसे दिन-रात, खुशी-गमी, लाभ-हानि, साकार-निराकार, गुरु-शिष्य, भगवान-भक्त आदि। उसी तरह रचना और रचयिता का भी जोड़ा है। ईश्वर और इन्सान का रिश्ता रचयिता और रचना का है। इन्सान ईश्वर की रचना है और ईश्वर रचयिता है।

प्रश्न 10 : "ईश्वर" इन्सान से क्या चाहता है ?

उत्तर : ईश्वर ने जो कुछ भी बनाया इन्सान के लिए ही बनाया है। हर चीज़ का प्रयोग प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में इन्सान ही करता है। इसलिए ईश्वर, जो सब कुछ करता ही इन्सान के लिए है, वह भी इन्सान से कुछ चाहता है। वैसे तो ईश्वर दाता है, इन्सान उसे क्या दे सकता है ? फिर भी ईश्वर इन्सान को कुछ देने से पहले चाहता है कि :

1. इन्सान ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करता हुआ उससे प्यार करे।
2. इन्सान ईश्वर को माने, जाने, उसके बारे में ज्ञान भी प्राप्त करे। इस लिए उसने समय समय पर महान आत्माओं को धरा पर भेजकर अपने बारे में ज्ञान दिया। इन्सान का भी कर्तव्य है कि वह उनसे सम्पर्क स्थापित करे या उनके द्वारा दिए गए ज्ञान का अध्ययन करके ईश्वर के गुणों, नियमों के बारे में जानकारी प्राप्त करे।
3. ईश्वर में विश्वास रखते हुए नेक कर्म, सदव्यवहार और सभी से प्यार करे।
4. सुख में ईश्वर का शुक्रगुज़ार रहे और दुख में ईश्वर से प्रार्थना करे।
5. ईश्वर सत्य, न्याय और प्यार के प्रतीक हैं। वे किसी से भी अन्याय नहीं करते। जो कुछ किसी के साथ हो रहा है वह उसके अपने ही पूर्व कर्मों का ही फल होता है। इसलिए ईश्वर चाहते हैं कि अपने दुखों, कष्टों, परेशानियों के लिए कोई उन्हें दोषी न माने, उन्हें बुरा भला न कहे, उनसे नाराज़ न हो।
6. ईश्वर चाहता है कि इन्सान हर अवस्था में उसकी रज़ा में राज़ी रहे।

प्रश्न 11: जब इन्सान ने कर्मफल ही पाना है तब ईश्वर की पूजा, भक्ति और अराधना से क्या लाभ है ?

उत्तर : यह सत्य है कि ईश्वर के अतिरिक्त हर इन्सान कर्मफल को भोगता है, क्योंकि ईश्वर ही अनादि, अनन्त, अगम्य, अगोचर तथा सर्वोच्च है, इसलिए वह कर्मफल दाता है। ईश्वर ने इन्सान की रचना केवल अपने लिए की है। ईश्वर की अपेक्षा होती है कि इन्सान उसके अस्तित्व को स्वीकार करे, उसे माने, जाने, याद करे तथा उससे प्यार करे। जो इन्सान आस्तिक हैं, ईश्वर के अस्तित्व को मानते हैं, जप-तप, भक्ति, स्मरण आदि करते हैं वे भी कर्मफल भोगते हैं। जो नास्तिक हैं, जो ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करते, पूजा-पाठ, भक्ति, स्मरण, जप-तप नहीं करते, वे भी कर्मफल पाते हैं। जब दोनों ही स्थितियों में कर्मफल ही भोगना है तब जप-तप, पूजा-पाठ, भक्ति, अराधना, से क्या लाभ ?

उपरोक्त विवरण के सम्बन्ध में इतना ही कहना है कि वे जो ईश्वर के अस्तित्व को नहीं मानते, न ही पूजा-पाठ, भक्ति आदि करते हैं, ईश्वर उन्हें अपने नियमों के अधीन जो कर्मफल बनता है उन्हें दे देते हैं। ठीक इसके विपरीत जो ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करते हुए उनकी पूजा-पाठ, भक्ति करते हुए उनके नियमों पर चलते हैं, उन्हें प्यार करते हैं, उनकी रज़ा में राज़ी रहते हैं, ईश्वर उन पर प्रसन्न होकर उनके दुष्कर्मों को क्षमा करते हुए अपनी कृपा करते हैं।

उन्हें नेक राह पर चलाकर नेक इन्सान बनाते हैं। जिससे उनका वर्तमान जीवन तो सार्थक होता ही है परन्तु इस के साथ–साथ आने वाला जीवन भी सफल होता है। धीरे धीरे व्यक्ति ईश्वर को प्राप्त होता है और जीवन-मरण के बन्धन से मुक्त हो जाता है। अर्थात वह ईश्वर की कृपा का पात्र बनता है।

ईश्वर सत्य, न्याय और प्यार के प्रतीक हैं, किसी से भी पक्षपात नहीं करते। परन्तु इसके साथ-साथ वह दयालु और कृपालु भी हैं। तभी कहा है कि ईश्वर केवल न्यायाधीश ही नहीं है, कि उसने केवल दण्ड ही देना है। वह तो इन्सान को इन्सान बनना ही सिखाते हैं। जो इन्सान ईश्वर से प्यार करते हुए अपने दुष्कर्मों को स्वीकार करते हैं तथा पश्चाताप करते हुए सच्चे मन से क्षमा याचना करते हैं, ईश्वर उन पर दया करके उनके दुष्कर्मों की सज़ा को कम कर देते हैं तथा उन्हें दुष्कर्म करने पर दृष्टान्त भी देते हैं ताकि इन्सान दुष्कर्म करने से बचे और आने वाले जीवन को सफल वना सके। इस तरह उनकी पूजा-पाठ, भक्ति से प्रसन्न होकर ईश्वर उनके दुष्कर्मों को क्षमा करते हुए अपनी कृपा करते हैं, नेक राह पर चलाकर नेक इन्सान बनाते हैं जिससे उनका यह जीवन और आने वाला जीवन सफल होता है।

प्रश्न 12: ईश्वर को प्रसन्न कैसे किया जा सकता है ?

उत्तर : ईश्वर ने इन्सान की रचना केवल अपने लिए की है और उसके अतिरिक्त सृष्टि में जो कुछ भी बनाया, वह इन्सान के लिए बनाया है। इसलिए ईश्वर भी इन्सान से चाहता है, कि वह उसके अस्तित्व को स्वीकार करे, उसके बारे में ज्ञान प्राप्त करे, उसका स्मरण करे, उससे प्यार करे। अर्थात ईश्वर भी चाहता है कि इन्सान उसे प्रसन्न करे।

ईश्वर को प्रसन्न कैसे किया जा सकता है, इसका उत्तर कोई इन्सान नहीं दे सकता। इसका उत्तर तो वही दे सकता है जो स्वयं सर्वज्ञ, सर्वव्यापक तथा सर्वशक्तिमान है। वही सर्वशक्तिमान ईश्वर इन्सानी रूप में स्वयं माणकपुर दरबार में क्रियात्मक रूप में स्पष्ट कर रहे हैं कि उन्हें प्रसन्न कैसे किया जा सकता है। उन्ही के श्री मुख से ईश्वर को प्रसन्न करने के बताए गए कुछ एक ढंग निम्नलिखित है:-

1. ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करना।
2. ईश्वर के बारे में ज्ञान प्राप्त करना।
3. ईश्वर से निःस्वार्थ प्यार करना।
4. नेक कर्म, सदव्यवहार तथा सभी से प्यार करते हुए जीवन यापन करना।
5. ईर्ष्या, द्वेष, जलन, नफरत से रहित होना।
6. अपने दुखों, कष्टों, परेशानियों के लिए ईश्वर को दोषी न मानना।
7. मन में यह विश्वास करना कि ईश्वर जो करता है इन्सान की अच्छाई के लिए ही करता है।
8. क्रोध और अहं से रहित होते हुए ईश्वर की रज़ा में राज़ी रहना।
9. ईश्वर द्वारा इन्सान के लिए बनाए गए नियमों का अनुसरण करना।
10. दूसरों से वैसा व्यव्हार करना जैसा उनसे अपने लिए चाहते हो।
11. किसी को कुछ कहने से पहले सोचना कि यदि मुझे ऐसा कहा जाए तो मुझे कैसा लगेगा।
12. किसी की भावना को ठेस न पहुँचाना व किसी के मन को न दुखाना।
13. बदले की भावना न रखते हुए अपना कर्म करना तथा फल ईश्वर की इच्छा पर छोड़ देना।

उपरोक्त विवरण के अतिरिक्त ईश्वर का जप-तप, पूजा-पाठ, स्मरण करना तथा ईश्वर का गुणगान करना, करवाना तथा सुनना, तीर्थ यात्रा करना तथा अपनी नेक कमाई में से उचित स्थान पर दान-पुण्य करना इत्यादि सभी बातें ईश्वर को प्रसन्न करने में सहायक सिद्ध होती हैं।

अन्त में यही कहना है कि ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए किसी को भी अपना दुश्मन न समझो। यदि कोई तुम्हे अपना दुश्मन समझता है उससे भी प्यार करो। ईश्वर द्वारा बताए गए उपरोक्त नियमों पर चल कर व उनकी आज्ञा का पालन करके ही उन्हें प्रसन्न किया जा सकता है।

प्रश्न 13: ईश्वर से इन्सान क्या प्राप्त कर सकता है ?

उत्तर : ईश्वर से इन्सान क्या प्राप्त कर सकता है इस प्रश्न का उत्तर जानने से पहले यह जानना अति आवश्यक है कि ईश्वर और इन्सान का आपस में क्या सम्बन्ध है ? ईश्वर या परम शक्ति ही सृष्टि की कर्ता, धर्ता और हर्ता, है। उसने सृष्टि रचना से पहले सोचा कि मैं एक ऐसी रचना करूँ जो मुझे जाने, माने और मुझसे प्यार करे तो उसने इन्सान कि कल्पना की। ऐसा विचार करने के उपरान्त ईश्वर ने जो कुछ भी बनाया, इन्सान के लिए बनाया। जीवों में सर्वश्रेष्ठ प्राणी इन्सान को बनाया और इन्सान को ही ईश्वर ने विवेकशीलता और भाषा दी जिसके आधार पर इन्सान हर चीज़ का निर्णय ले सके। जब ईश्वर ने इन्सान अपने लिए बनाया है तो ईश्वर चाहता है कि इन्सान प्रसन्न रहे और उसका जीवन सुखमय और खुशहाल हो। अपने बारे में ज्ञान देने के लिए ईश्वर ने समय-समय पर महानात्माओं को भेजा। जब इन्सान ज्ञान प्राप्त करके उसके गुणों के आधार पर ईश्वर से प्यार करता है तो ईश्वर उस पर प्रसन्न होते हैं। ईश्वर और इन्सान एक दूसरे के पूरक हैं। यदि ईश्वर न हो तो इन्सान हो ही नहीं सकता और यदि इन्सान न हो तो ईश्वर को जानने वाला कोई नहीं होगा। ईश्वर और इन्सान का सम्बन्ध रचयिता और रचना का है। यदि रचना अपने रचयिता के प्रति कर्तव्यों को निभाते हुए अपना जीवन यापन करती है तो उसे ईश्वर से माँगने की जरूरत ही नहीं पड़ती। ईश्वर समयानुसार उसकी सभी जरूरतें स्वयं पूरी करते हैं। परन्तु इन्सान स्वभाव से ही स्वार्थी है। इन्सान कभी भी सन्तुष्ट नहीं होता। इन्सान की आकांक्षा होती है कि जब वह सर्वशक्तिमान की शरण में आ गया तो उसे वह सब कुछ मिलना चाहिए जिसकी वह कामना करता है।

यदि इन्सान श्रद्धा, विश्वास, लगन के साथ ईश्वर से निस्वार्थ प्यार करता है और ईश्वर द्वारा इन्सान के लिए बनाए गए नियमों पर चलने की कोशिश करता है तो वह ईश्वर से बहुत कुछ प्राप्त कर सकता है जैसे :-

1. जीवन में शारीरिक सुख, मानसिक शान्ति, तन्दुरुस्ती और खुशहाली प्राप्त कर सकता है।
2. भ्रमों और आडम्वरों पर से ऊपर उठकर आदर्श जीवन यापन कर सकता है।
3. देवी-देवता, वीर-पीर, भगवान इत्यादि के बारे में वास्तविकता का ज्ञान प्राप्त करने के उपरान्त वह सदमार्ग पा सकता है।
4. ईश्वर से इन्सान अध्यात्मवाद के साथ-साथ भौतिक सुखों की प्राप्ति भी कर सकता है।
5. ईश्वर की शरण प्राप्त करने के उपरान्त ईश्वर से सम्पर्क स्थापित कर सकता है।
6. वास्तविकता का ज्ञान जो मोक्ष का द्वार खोलता है, प्राप्त करके उसे अपने व्यवहारिक जीवन में अपनाकर वह मोक्षद्वार में प्रवेश कर सकता है। वह 90% से अधिक सद्कर्म करके मोक्ष भी प्राप्त कर सकता है।

प्रश्न 14: ईश्वर प्राप्ति से क्या अभिप्राय है ?

उत्तर : आम लोग ईश्वर प्राप्ति को दुनियावी सुखों से तोलते हैं। जिनके पास जीवन का हर सुख , भाव धन, दौलत, कोठियाँ, महल-मीनारें हैं, लोग कहते हैं उन पर ईश्वर की बड़ी कृपा है। किसी सीमा तक यह बात सत्य भी है क्योंकि यह सब कुछ उसे ईश्वर ने उसके पूर्व जन्म के संस्कारों के फलस्वरूप दिया है परन्तु आज वह धन, वैभव और शोहरत पा कर उसका दुरुपयोग कर रहा है। जैसे कहावत है कि तप से राज और राज से नरक। तप करके उसे सब कुछ मिल गया। वो राजा बन गया परन्तु आगे के लिए वह कुछ नहीं कर रहा। उसका अगला जन्म इतना सुखमय नहीं होगा जितना कि अब है। स्पष्ट है, केवल दुनियावी सुखों की प्राप्ति ईश्वर प्राप्ति नहीं है तो ईश्वर प्राप्ति क्या है ?

अध्यात्मवाद में ईश्वर प्राप्ति का अर्थ ईश्वर के साथ सम्पर्क से है। जब ईश्वर इन्सान को आवाज दे कर उसका सही मार्गदर्शन करे कि क्या गलत है और क्या ठीक है तब वह गलत कार्य नहीं करता। ईश्वर प्राप्ति की पहचान है कि इन्सान कभी भी अपने कष्टों परेशानियों के लिए ईश्वर को दोषी नहीं मानता। वह हर परेशानी के लिए अपने कर्म को ही दोषी मानता है। वह कभी भी ईश्वर से नाराज़ नहीं होता। हर अवस्था में ईश्वर की रज़ा में राज़ी रहता है। वह कर्म करता है और फल की इच्छा नहीं रखता। ऐसे व्यक्ति पर ही ईश्वर की कृपा होती है। ईश्वर प्राप्ति का अर्थ है ईश्वर से अभेद होना।

प्रश्न 15: ईश्वर की प्राप्ति कैसे हो सकती है ?

उत्तर : ईश्वर अनादि, अनन्त, अगम्य, अगोचर और सर्वोच्च है। वह न नर है न नारी, परन्तु सर्वरूप होने के नाते नर और नारी दोनों रूप धारण कर सकता है। वह सर्वगुणसम्पन्न, सर्वश्रेष्ठ, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, त्रिकालदर्शी, अन्तर्यामी, पूर्ण और अजय है। ईश्वर असीम है उसे किसी सीमा में नहीं बांधा जा सकता। उसने सर्वश्रेष्ठ प्राणी इन्सान बनाया है और उसके लिए ही हर चीज़ बनाई है। ईश्वर ने जो कुछ भी किया है और जो कुछ भी करता है इन्सान के लिए ही करता है। ईश्वर भी इन्सान से चाहता है कि वह उसके बारे में जाने, उसे माने, प्यार करे और उसे प्रथम स्थान दे। इन्सान चाहता है कि यदि ईश्वर है तो उसे उसका अनुभव हो, परन्तु ऐसा होता नहीं क्योंकि ईश्वर ने अपने और इन्सान के बीच एक सीमा रेखा खींच दी है। जो काम इन्सान कर सकता है, ईश्वर वह काम नहीं करता। ईश्वर वही कार्य करता है जो इन्सान नहीं कर सकता। ऐसी बातों का ज्ञान देने के लिए ईश्वर ने समय-समय पर महान-आत्माओं द्वारा ज्ञान दिया है। इन्सान के लिए ईश्वर क्या करता है, इन्सान के ईश्वर के प्रति क्या कर्तव्य हैं, ईश्वर को इन्सान कैसे प्रसन्न कर सकता है, ईश्वर को इन्सान कैसे प्राप्त कर सकता है आदि बातों का ज्ञान महान आत्माओं द्वारा दिया है। इन्सान का भी कर्तव्य बनता है कि वह उन महान-आत्माओं से अपना सम्पर्क स्थापित करे व उनके द्वारा दिए गए ज्ञान को अपने जीवन में अपना कर अपना जीवन सफल बनाए और ईश्वर प्राप्ति की ओर बढ़े।

ईश्वर प्राप्ति इन्सान अपनी इच्छा से नहीं कर सकता फिर भी ईश्वर ने कुछ विकल्प दिए हैं जिनके आधार पर इन्सान ईश्वर की प्राप्ति कर सकता है :-

1. ईश्वर प्राप्ति इन्सान को उसके पूर्व जन्म के संस्कारों के आधार पर होती है।
2. इन्सान का व्यवहारिक जीवन यदि ईश्वरीय नियमों के अनुसार है तो वह ईश्वर को प्राप्त हो जाता है।
3. ईश्वर की अपनी भी इच्छा होती है, यदि ईश्वर की इच्छा हो जाए तो वह किसी के गुण अवगुण नहीं देखता।
4. जो इन्सान ईश्वर के अस्तित्व को मानता है, उसके बारे में जानकारी प्राप्त करता है, ईश्वर के नियमों पर चलता है, तो स्वभाविक है कि उस इन्सान को ईश्वर से प्यार हो जाता है। ईश्वर का दूसरा नाम ही प्यार है। प्यार के बन्धन में बन्धकर ईश्वर उसे प्राप्त हो जाते हैं।
5. जो व्यक्ति ईर्ष्या, द्वेष, नफरत, चुगली, निंदा से रहित है और वह विकारों का सदुपयोग करते हुए जीवन-यापन करता है, ईश्वर उस पर प्रसन्न होते हैं। ईश्वर की प्रसन्नता ही ईश्वर की प्राप्ति है।
6. जब इन्सान अपने दुखों-कष्टों, परेशानियों के लिए ईश्वर को दोषी नहीं मानता और उसकी रज़ा में राज़ी रहता है, हर दशा में ईश्वर का शुक्रगुजार रहता है, यह भी ईश्वर प्राप्ति की ओर एक कदम है।
7. व्यक्ति यदि ईश्वर द्वारा इन्सान के लिए बनाए गए इस नियम की पालना करता है कि जैसा व्यवहार वह दूसरों से अपने लिए चाहता है वैसा ही व्यवहार वह दूसरों से करे तो वह भी ईश्वर प्राप्ति की ओर बढ़ रहा होता है।

अन्त में इतना ही कहना है कि जो इन्सान ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करते हुए तथा गृहस्थ में रहता हुआ जीवन-यापन करता है, अपने कर्तव्यों का निष्ठा से पालन करता है, वह ईश्वर को जल्दी प्राप्त कर लेता है। जो अपने दुनियावी फर्जों को छोड़कर, गृहस्थ त्याग कर ईश्वर को प्राप्त करना चाहते हैं, ईश्वर उन्हें जल्दी प्राप्त नहीं होते।

प्रश्न 16: इन्सान को कैसे पता चले कि वह ईश्वर प्राप्ति की ओर बढ़ रहा है ?

उत्तर : इस सृष्टि में ईश्वर ने हर चीज़ का जोड़ा बनाया है, जैसे दिन-रात, खुशी-गमी, लाभ-हानि, जीवन-मृत्यु, गुरु-शिष्य, भगवान-भक्त इत्यादि। इसी प्रकार ईश्वर और इन्सान का भी जोड़ा है। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। एक के बिना दूसरे का कोई महत्व नहीं। ईश्वर रचयिता है और इन्सान उसकी सर्वश्रेष्ठ रचना है। ईश्वर ने जो कुछ भी बनाया, इन्सान के लिए बनाया, इसलिए ईश्वर भी चाहता है कि इन्सान उसे माने, जाने और उसे प्यार करे। ईश्वर ने अपने बारे में इन्सान को जानकारी देने के लिए समय-समय पर महान-आत्माओं को धरती पर भेजकर अपना फर्ज़ निभाया है। उन महान-आत्माओं में से अधिकतर ने यह दावा किया है कि ईश्वर ने उनसे सम्पर्क किया है और ईश्वर उनसे बात करते हैं। उन्होंने यह भी कहा है कि ईश्वर उनको बलपूर्वक अपनी इच्छानुसार चलाते हैं और उनका मार्गदर्शन करते हैं, यही ईश्वर प्राप्ति का मूल आधार है।

आज भी इन्सान ईश्वर प्राप्ति के लिए प्रयत्न कर रहा है, जैसे जप-तप, स्मरण, चिन्तन, मनन करना आदि। इन्सान कैसे जाने कि उसे ऐसा करने से लाभ हो रहा है ? ईश्वर प्राप्ति के लिए इन्सान को निम्नलिखित पड़ावों में से गुज़रना पड़ता है, जिन्हें जान कर इन्सान अनुमान लगा सकता है कि वह ईश्वर प्राप्ति की ओर कहाँ तक पहुँचा है :-

1. पहला पड़ाव – यदि इन्सान को ईश्वर को याद करते समय बार-बार जम्हाई आए तो समझ लेना चाहिए कि ईश्वर उसके अंग-संग है और उसकी पुकार सुन रहा है। ऐसी स्थिति में इन्सान की आँखों में से आंसू भी बहने लगते हैं।

2. दूसरा पड़ाव - जब इन्सान ईश्वर को पुकारता है, ईश्वर की याद में मग्न हो जाता है, तो अगर उसके शरीर में सरसराहट शुरू हो जाती है या विशेष किस्म की कम्पन होती है, ऐसी स्थिति में इन्सान को समझ लेना चाहिए कि उसने दूसरे पड़ाव में प्रवेश कर लिया है।

3. तीसरा पड़ाव – इस पड़ाव में जिज्ञासु बेसुध हो जाता है या उसका सिर जोर से हिलने लगता है। कई बार तो वह इतना अस्त-व्यस्त हो जाता है कि उसे अपनी सुध नहीं रहती। इसे प्रवेशता, हवा आना या खेल आना आदि कहते हैं। आम लोगों में इसके प्रति एक विशेष भ्रान्ति हो जाती है कि कहीं इसे भूत-प्रेत, देवी देवता या वीर पीर की पकड़ तो नहीं या बाहरी कसर तो नहीं। ऐसी बातें सुन कर जिज्ञासु घबरा जाता है। यह पड़ाव हर किसी पर नहीं आता। यह उन पर ही आता है जिनके मन में दो पड़ावों में से गुजरने के बाद ईश्वर के बारे में शंकाएँ उत्पन होती हैं। इस पड़ाव तक ईश्वर के दर्शन भी नहीं होते, न ही आवाज़ आती है, न ही अनुभव होता है। इसलिए शंका बनी रहती है कि कहीं यह सब मेरी सोच या मनोस्थिति तो नहीं ? अपने बारे में भी शंका हो जाती है कि कहीं मुझे शारीरिक रोग या मानसिक रोग तो नहीं ?

   इस पड़ाव में इन्सान को घबराना नहीं चाहिए और न ही उपरोक्त समस्याओं को देख कर मार्ग छोड़ देना चाहिए, बल्कि ईश्वर से विनम्र भाव से प्रार्थना करनी चाहिए कि वह उसे सदमार्ग प्रदान करते हुए मंजिल तक पहुंचाए। यह पड़ाव इन्सान के विश्वास की परीक्षा का होता है जिसमें ईश्वर इन्सान को हर तरफ से बांध कर रख देता है। अगर इन्सान ईश्वर के प्रति दृढ़ विश्वास और लग्न बनाए रखता है तो अगले पड़ाव आसानी से पार कर जाता है।

4. चौथा पड़ाव – इस पड़ाव में इन्सान को अन्दर से या बाहर से ईश्वर की आवाज़ आती है। उस आवाज़ को सुनकर इन्सान गद्-गद् हो उठता है। यह ईश्वर प्राप्ति का एक महत्व पूर्ण पड़ाव है। इस पड़ाव में उस व्यक्ति के साथ और लोग भी सम्पर्क करते हैं। लोग अपने कष्ट परेशानियों के सम्बन्ध में उससे सम्पर्क करते हैं। ईश्वर उसके माध्यम से लोगों की जटिल समस्याओं का भी समाधान कर देते हैं। कई बार ऐसी स्थिति में व्यक्ति में अहम् भाव भी आ जाता है। वह ईश्वर को यश ना दे कर स्वयं यश लेने लगता है। यदि कोई ऐसा करता है तो ईश्वर उससे अप्रसन्न होते हैं और उस व्यक्ति को किसी न किसी समस्या में उलझा देते हैं। ऐसा होने पर उसका मान, यश, शोहरत बढ़ने की अपेक्षा कम हो जाती है। इसके विपरीत यदि कोई स्वयं यश न ले कर ईश्वर को यश देता है, स्वयं को कर्ता नहीं समझता तो उसके माध्यम से काम भी अधिक होते हैं व ईश्वर उसे और अधिक मान, यश, शोहरत देते हैं। अधिकतर लोग यहाँ तक ही सीमित हो कर रह जाते हैं। इन्सान को यहाँ तक सीमित न रह कर आगे बढ़ना चाहिए।

5. पांचवाँ पड़ाव – जब इन्सान से परम शक्ति बात करती है तो व्यक्ति इच्छा होती है कि उसे ईश्वर के दर्शन हों। यदि उसको दृढ़ विश्वास तथा सच्चा प्यार है तो उसे ईश्वर खुली आँखों से या बन्द आँखों से भी दिखाई देने लगते हैं। जब ऐसा हो तो इन्सान को समझ लेना चाहिए कि वह ईश्वर प्राप्ति के पांचवें पड़ाव में प्रवेश कर गया है। इस पड़ाव में ईश्वर द्वारा कही बात पत्थर पर लकीर होती है।

6. छठा पड़ाव – जब इन्सान ईश्वर से प्यार करते हुए उसकी रहमत का हर समय शुक्रगुज़ार रहता है, ईश्वर दर्शन उपरान्त अपने आपको धन्य समझता है। स्वयं को ईश्वर का दास समझते हुए स्वयं को ईश्वर के हवाले कर देता है। अनुचित इच्छाओं को त्याग कर नेक कर्म, सद्व्यव्हार और सबसे प्यार करता है और ईश्वर की रज़ा में राज़ी रहता है तो ऐसी स्थिति में इन्सान आखिरी पड़ाव में प्रवेश कर जाता है। इसे अभेदता का नाम भी दिया जाता है। ईश्वर उस भक्त के सम्मुख हो कर बातचीत करता है। ईश्वर उसे सही और गलत का अनुभव कराते हैं और हमेशा सद् मार्ग प्रदान करते हैं। इस प्रकार इन्सान ईश्वर भक्ति में लीन हो कर अनुमान लगा सकता है कि वह कहाँ तक पहुँचा है।

प्रश्न 17: ईश्वर का इन्सान के जीवन में क्या महत्व है ?

उत्तर : जब कुछ भी नहीं था तब भी ईश्वर था। जब कुछ भी नहीं रहेगा तब भी ईश्वर रहेगा। इसलिए ईश्वर को अनादि, अनन्त कहा गया है। वह जड़ नहीं, चेतन है। ईश्वर ने सोचा कि "मैं अकेला हूँ। मैं कोई ऐसी रचना करूँ जो मुझे माने, जाने और मुझसे प्यार करे। जिसको मैं अपना राजदार और साझीदार बनाऊँ।" यह सोचकर ईश्वर ने इन्सान की कल्पना की लेकिन इन्सान बनाया नहीं। ईश्वर ने सोचा कि इन्सान की क्या आवश्यकताएँ होंगी, वह कहाँ रहेगा, उसको जीवित रखने के लिए किन-किन चीजों की आवश्यकता होगी, यह सोच कर ईश्वर ने सर्वप्रथम जीवन के मूल आधार पाँच तत्वों की रचना की। अग्नि (सूर्य), धरती, जल, वायु, आकाश। उसके बाद चाँद, सितारे, अनेकों सौर मण्डल बनाए और नियमों में बाँध दिए। वातावरण के अनुसार पेड़, पौधे और जीव-जन्तु बनाए। जब सब कुछ बन कर तैयार हो गया और वातावरण इन्सान के योग्य हो गया तब इन्सान की रचना की। इससे अधिक इन्सान के जीवन में ईश्वर का और क्या महत्व हो सकता है ? यदि हम गहराई से सोचें तो इन्सान के जीवन में कोई भी क्षण ऐसा नहीं है जो ईश्वर के महत्व को नहीं दर्शाता। जल न होता तो क्या होता ? वायु न होती तो क्या होता ? धरती में उपजाऊ शक्ति न होती तो क्या होता ? इन्सान, ईश्वर के बिना हो ही नहीं सकता। ईश्वर ने इन्सान को और इन्सान के लिए जरूरी वस्तुओं को टिकाए रखने के लिए धरती में गुरुत्वाकर्षण शक्ति पैदा की। यदि यह न होती तो धरती पर कुछ भी न रहता। यह बातें इन्सान के जीवन में ईश्वर का महत्व समझने में सहायक हैं।

ईश्वर ने इन्सान का शरीर इस ढंग से बनाया है कि वह स्वतंत्रता पूर्वक विचरते हुए कर्म कर सके। इन्सान को सबसे अधिक बुद्धि तत्व और भाषा दे कर बाकी जीवों से भिन्न रखा है। इन्सान की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए धरती में खनिज पदार्थ पैदा किए। यदि पैट्रोल न होता, कोयला न होता, लोहा न होता, सोना न होता तो इन्सानी जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता ! क्या ये बातें इन्सानी जीवन में ईश्वर के महत्व को नहीं दर्शातीं ?

जब इन्सान समाज में रहने लगा तो वह सोचने लगा कि यह सब कुछ जो दिखाई दे रहा है किसने बनाया। उस समय ईश्वर ने अपना कर्तव्य समझते हुए इन्सान को अपने बारे में ज्ञान देने के लिए समय-समय पर महानात्माओं को धरती पर भेजा। उनके माध्यम से अपने गुणों, नियमों और शक्तियों का किसी सीमा तक प्रदर्शन किया। इन्सान का जीवन सुचारू रूप से चल सके उसके लिए नियम बनाया कि इन्सान दूसरों से ऐसा व्यव्हार करे जैसा वह दूसरों से अपने लिए चाहता है। इन्सान के लिए ही ईश्वर स्वयं भी इन्सानी रूप में धरती पर आते हैं। ईश्वर ही इन्सान का सच्चा गुरु और रहबर है। वही कर्मफल दाता और इन्सान के भाग्य का विधाता  है। शरीर त्यागने के उपरान्त इन्सान को ईश्वर के पास ही जाना होता है। ईश्वर उसे कर्मफल के आधार पर पुन: जन्म देता है। ये सभी बातें इन्सान के जीवन में ईश्वर के महत्व को दर्शाती हैं।

प्रश्न 18 : पूजा के योग्य कौन है ?

उत्तर : इन्सान स्वभाव से ही स्वार्थी है। हर इन्सान की रुचियाँ, स्वभाव, आदतें, सोच और चरित्र एक दूसरे से भिन्न हैं। इसलिए किसी भी विषय पर इन्सान का दृष्टिकोण समय और स्थान के अनुसार बदल जाता है। आज तक इन्सान उसी की पूजा करता आया है जिससे उसे लाभ हो या जिससे डर लगता हो। जैसे धरती, जल, वायु, अग्नि, सूर्य आदि। इन्सान उन पेड़ों और जानवरों की भी पूजा करता है जिससे उसे लाभ होता है। यह सब कुछ इन्सान अज्ञानतावश ही करता है। वे सर्वज्ञ, सर्वव्यापक और सर्वशक्तिमान नहीं हैं। इनमें से अधिकतर वस्तुएँ निर्जीव हैं जो किसी की पुकार या प्रार्थना नहीं सुन सकतीं। वास्तव में सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान सृष्टि में केवल एक ही है, वही पूजा के योग्य है। वही हर इन्सान का सच्चा गुरु और इष्ट है। भले ही वह चाहता है कि हर इन्सान उसे जाने माने और उसे प्यार करे लेकिन इन्सान का कर्म ईश्वर तक पहुँचने के लिए बाधा बन जाता है। ईश्वर ने अपने बारे ज्ञान देने के लिए जिन-जिन महान-आत्माओं को अपने रूप में मान्यता दी उन्होंने अपने जीवन काल में कभी सुख नहीं पाया। उन्होंने ईश्वर के उद्देश्य की पूर्ति के लिए सारा जीवन लोगों का विरोध सहन करने में या लोगों के इल्जाम व अफवाहें सुनने में ही व्यतीत किया। ईश्वर ने उन महान-आत्माओं का महत्व रखने के लिए इन्सान को उनके रूपों में प्रमाण दे कर उन तक ही सीमित कर दिया। इन्सान उन महान-आत्माओं तक ही सीमित हो कर रह गया। अन्त में इतना ही कहना है कि भले ही पूजा के योग्य केवल ईश्वर ही है परन्तु ईश्वर उनकी भी पूजा करवाते हैं जिनको वह मान्यता दे देते हैं।

प्रश्न 19 : क्या इन्सान को ईश्वर की खोज करनी चाहिए ?

उत्तर : इन्सान इस धरती का सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। विज्ञान भी मानता है कि इन्सान के धरती पर आने से पहले ही सूर्य, धरती, चाँद, सितारे, वायुमण्डल आदि सब कुछ बन चुका था। इन्सान यह सब नहीं बना सकता तो फिर वह कौन है जिसने सब कुछ बनाकर नियमों में बांधा। धरती में गुरुत्वाकर्षण शक्ति, धरती में उपजाऊ शक्ति, खनिज पदार्थ, समुद्र, पहाड़, जलवायु, अग्नि जो इन्सान के लिए जरूरी हैं किसने बनाए ? ये सब इन्सान को सोचने के लिए मजबूर कर देते हैं कि वह कौन है ?  कैसा है ? कहाँ है ? जिसने यह सब कुछ बनाया है ? इसलिए इन्सान को रचयिता की खोज करनी चाहिए। जिन्होंने भौतिकवाद में कुदरत के नियमों की खोज की उन्हें वैज्ञानिक कहा गया है। इसी प्रकार जिन्होंने अध्यात्मवाद में ईश्वर के गुणों, नियमों बारे खोज की उन्हें ऋषि-मुनि कहा गया है। स्पष्ट है कि ईश्वर व ईश्वर के नियमों की खोज अध्यात्मवादी और भौतिकवादी आदिकाल से ही करते आए हैं। परन्तु ईश्वर और ईश्वर के नियम असीम हैं। ईश्वर के बारे में बहुत कुछ जानने के बाद भी कहना पड़ा है, "हे ईश्वर ! तू बेअन्त ! तेरी माया बेअन्त

! तेरीयाँ तू ही जाने !" यह बात स्पष्ट करती है कि इन्सान को ईश्वर व ईश्वर के नियमों की खोज करते रहना चाहिए ताकि इन्सान अपने जीवन में उन्नति करते हुए अपने जीवन को सार्थक कर सके।

प्रश्न 20 : क्या ईश्वर के दर्शन से पाप कटते हैं ?

उत्तर : ईश्वर सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान है जिसके लिए कुछ भी असम्भव नहीं है। इन्सान उसकी सर्वश्रेष्ठ रचना है। ईश्वर ने जो कुछ भी बनाया है इन्सान के लिए ही बनाया है इसलिए ईश्वर भी चाहता है कि इन्सान उसे माने, जाने और उससे प्यार करे ताकि इन्सान का जीवन सुखमय रहे और सुचारू रूप से चलता रहे।

ईश्वर ने इन्सान के लिए नियम बनाया है कि "जैसा वह अपने लिए दूसरों से चाहता है वह दूसरों से भी वैसा ही करे"। जब-जब इन्सान इस नियम को तोड़ता है, तो वह गुनाह कर रहा होता है, जिसका फल उसे भोगना पड़ता है। कर्मफल के आधार पर ही इन्सान के जीवन में सुख-दुख, लाभ-हानि, यश-अपयश, सफलता-असफलता, शान्ति-अशान्ति आदि आते हैं। क्योंकि इन्सान चाहता है कि उसका जीवन सुखद हो इसलिए वह ईश्वर से यह सोच कर प्रार्थना करता है कि ईश्वर दयालु होते हुए उसके गुनाहों को माफ़ कर देगें। परन्तु ऐसा होता नहीं।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि जब इन्सान ईश्वर के नियमों का पालन करते हुए जीवन-यापन करता है तब वह ईश्वर की कृपा का पात्र बन जाता है। ईश्वर उसे जब दर्शन देते हैं तो उसके सारे दुखों, कष्टों का निवारण हो जाता है। निःसन्देह ईश्वर के दर्शन हो जाने से इन्सान पाक और पवित्र हो जाता है। यह किस समय और किस तरह होता है ? जब इन्सान ईश्वर की भक्ति अर्थात चिंतन-मनन, जप-तप, पूजा-पाठ आदि करता है तो उसका मन एक अबोध बच्चे की तरह निर्मल हो जाता है। उसके मन से ईर्ष्या, द्वेष, नफरत, वैर भाव मिट जाते हैं। वह हर किसी से सद्व्यवहार और प्यार करता है। उसका मन ईश्वर के प्यार से भर जाता है। जब इन्सान ईश्वर के योग्य हो जाता है तो ईश्वर उसके प्यार से प्रसन्न हो कर उस रूप में प्रकट होकर उस व्यक्ति को दर्शन देते हैं जिस रूप में वह ईश्वर को याद करता है। ईश्वर जो कह देते हैं वह हो जाता है तब उसके दुख कष्ट दूर हो जाते हैं।

वैसे तो इन्सान मूर्तियों या चित्रों में भी ईश्वर के दर्शन करता है पर वास्तव में दर्शन वह होते हैं जब उसको परम शक्ति उसके इष्ट के रूप में प्रकट हो कर दर्शन देती है। तब और केवल तब ही इन्सान पापों से मुक्त होता है। जिससे इन्सान को मोक्ष प्राप्त होता है।

प्रश्न 21 : प्रभु कृपा किस पर होती है ?

उत्तर : आम लोगों का मत है कि जिस व्यक्ति के पास दुनियावी सुख सुविधाएँ अधिक हैं उस पर ईश्वर की उतनी ही अधिक कृपा है। आज का इन्सान भौतिक सुखों से ही ईश्वर कृपा की तुलना करता है। यह सत्य है कि दुनियावी सुख भी इन्सान को उसके पूर्व जन्म के संस्कारों के आधार पर ही मिलते हैं। यह प्रभु कृपा का आधार नहीं है बल्कि कर्मफल का आधार है। वास्तव में प्रभु कृपा उसे ही माना जाता है जब इन्सान का ईश्वर से सम्पर्क हो जाए। सम्पर्क में ईश्वर उससे बातचीत करे, सही गलत का अनुभव दे और अपनी इच्छानुसार उसे सदमार्ग पर चलाए। ये सब कुछ प्रभु इच्छा पर निर्भर करता है परन्तु प्रभु इच्छा भी इन्सान पर तब ही होती है यदि उसके पूर्व जन्म के संस्कार अच्छे हों। इन्सान नेक कर्म, सदव्यवहार और सभी से प्यार करे। वह कष्टों, परेशानियों के लिए कभी भी ईश्वर को

दोषी न माने। ईश्वर की रज़ा में राज़ी रहने का प्रयास करे। वह इन्सान जो गृहस्थ जीवन में रहते हुए सांसारिक कर्तव्यों को निभाता है और ईश्वर से प्यार करता है, उससे ईश्वर प्रसन्न होते हैं। ईश्वर की प्रसन्नता ही इन्सान के लिए ईश्वर कृपा का वरदान बन जाती है, भाव प्रभु कृपा उसी पर होती है जिस पर प्रभु की इच्छा हो जाए।

प्रश्न 22 : क्या ईश्वर भी प्यार करते हैं ?

उत्तर : जब कुछ भी नहीं था, उस समय भी ईश्वर था, इसीलिए उसे अनादि कहा है। जब कुछ भी नहीं रहेगा ईश्वर तब भी रहेगा, इसलिए उसे अनन्त कहा है। जो अनादि, अनन्त है वही सर्वोच्च है। वह सर्वगुण सम्पन्न, सर्वश्रेष्ठ, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, त्रिकालदर्शी, अन्तर्यामी, पूर्ण और अजय है। वह प्रायः इन्सान के लिए अगम्य, अगोचर रहता है। उसके मन में विचार पैदा हुआ कि मैं अकेला क्या महत्व रखता हूँ। मेरा कोई राजदार, साझीदार होना चाहिए जो मुझसे प्यार करे और मैं उससे प्यार करूँ। प्यार के आधार पर ईश्वर ने इन्सान की रचना से पहले सृष्टि की रचना की, इन्सान के लिए जो जरूरी था वह सब बनाकर अन्त में इन्सान की रचना की। इससे स्पष्ट होता है कि ईश्वर भी प्यार चाहता है और प्यार करता है।

ईश्वर भी इन्सान से प्यार करता है। इस बात पर इन्सान को तब शंका होती है जब उसे कष्ट, परेशानियाँ और समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इन्सान सोचता है कि यदि ईश्वर प्यार करता होता तो उसे कष्ट, परेशानियाँ, समस्याएँ न होतीं, क्योंकि ईश्वर तो सर्वशक्तिमान है जिसके लिए असम्भव शब्द ही नहीं है। निस्संदेह ईश्वर इन्सान से बेहद प्यार करता है। ईश्वर का दूसरा नाम ही प्यार है। ईश्वर ने प्यार में ही सृष्टि की और इन्सान की रचना की है। ईश्वर चाहता है कि इन्सान प्रसन्न रहे, उसके जीवन में तन्दुरुस्ती, खुशहाली, मानसिक शान्ति और शारीरिक सुख हों। लेकिन ऐसा होता नहीं। जैसे सरकार देश में अमन और शान्ति चाहती है। इस के लिए नियम और कानून बनाती है। जब इन्सान नियमों को तोड़ता है तो सरकार को उन नियमों के अधीन कारवाई करनी पड़ती है। इसी प्रकार ईश्वर ने इन्सान के लिए ही सब कुछ बनाया है। उसका जीवन सही ढंग से चले, उसके लिए नियम बनाया कि "दूसरों से ऐसा व्यवहार करो जैसा आप उनसे अपने लिए चाहते हो।" जब इन्सान इस नियम का उलंघन करता है तो दोषी बनता है। इस दोष के अधीन ही कष्ट, परेशानियाँ, समस्याएँ आती हैं। यदि हर इन्सान इस नियम की पालना करे तो हर इन्सान कह उठेगा कि ईश्वर इन्सान से बहुत प्यार करता है।

कुछ लोग सोचते हैं कि ईश्वर को क्रोध आता है और वह क्रोध में इन्सान को सजा देता है। यह सोच निराधार है। ईश्वर को किसी के प्रति भी क्रोध नहीं आता। जितना किसी से अधिक प्यार करते हैं उसे उतना ही नेक राह पर चलाने के लिए दृष्टांत के तौर पर कष्ट देते हैं। ईश्वर का यह उद्देश्य नहीं होता कि इन्सान को सजा देनी है। ईश्वर चाहते हैं कि इन्सान, इन्सान ही बना रहे। यदि इन्सान गलती करके सर्वशक्तिमान से प्रार्थना करता है, भूल स्वीकार करके आगे के लिए गलती न करने का वायदा करता है, तो ईश्वर उसे माफ़ कर देते हैं। इस बात से स्पष्ट होता है कि ईश्वर न्यायकारी होते हुए भी दयालु और कृपालु हैं।

प्रश्न 23 : क्या ईश्वर भी सोचते हैं ?

उत्तर : ईश्वर चेतन है, जड़ नहीं। जो चेतन है उस को इन्सान का हर कार्य प्रभावित करता है। ईश्वर कर्मफल दाता है। इन्सान कर्म करता है और कर्मफल भोगता है। ईश्वर को कर्मफल देने के लिए निर्णय लेना होता है। उसके लिए सोचना भी पड़ता है कि किस गुनाह की कौन सी सजा है।

ईश्वर ने सृष्टि की रचना करके उसे नियमों में बांध दिया। क्या यह सब ईश्वर ने बिना सोचे समझे ही कर दिया ? हर जीव-निर्जीव बना कर उसे नियमों में बांधा। हर किसी की औसत आयु निश्चित की। यह सब कुछ ईश्वर ने सोच समझकर ही किया है। ईश्वर भी सोचते हैं। यदि न सोचते होते तो कर्मफल न देते, हर चीज नियमों में न बंधी होती, समय-समय पर परिवर्तन न होते। समय-समय पर महान-आत्माओं को धरा पर भेजकर अपना कर्तव्य न निभाते। भाव सृष्टि में हर कार्य नियमित ढंग से चल रहा है जो ईश्वर की सोच का ही स्पष्ट प्रमाण है।

प्रश्न 24 : क्या ईश्वर भी प्रशंसा चाहते है ?

उत्तर : ईश्वर जिसने सब कुछ इन्सान के लिए बनाया है वह चाहता है कि इन्सान उसे माने, जाने और उसे प्यार करे। ईश्वर चाहता है कि इन्सान उसका गुणगान करे। उसके नियम, गुण और शक्तियों के बारे में जाने। उसकी लगन में मग्न रहे, भाव ईश्वर चाहता है कि इन्सान जैसे और दुनियावी कार्यों के लिए समय निकालता है उसी तरह ईश्वर के लिए भी समय निकाले। लोग अज्ञानतावश इस बात का यह अर्थ निकालते हैं कि ईश्वर शायद अपना गुणगान, सिमरन, चिन्तन, मनन आदि से खुशामद चाहता है। लेकिन यह मत उन व्यक्तियों का हो सकता जो केवल भौतिकवादी हैं। अध्यात्मवादी, जिन्हें ईश्वर के बारे में ज्ञान है उनका मत भिन्न होता है। वे जानते हैं कि इन्सान का अस्तित्व ही ईश्वर के कारण है। यह नश्वर शरीर त्याग कर उन्होंने ईश्वर के ही पास ही जाना है। ईश्वर ने ही कर्मफल देना है। जैसे ईश्वर ने इन्सान के प्रति कर्तव्य निभाए हैं उसी तरह इन्सान को भी ईश्वर के प्रति अपना कर्तव्य निभाते हुए ईश्वर के लिए समय निकालना चाहिए। जैसे इस भौतिक शरीर को स्वस्थ रखने के लिए भौतिक चीजों की जरूरत है, अच्छी खुराक, व्यायाम, साफ-सफाई के लिए साबुन व जल की जरूरत है। इसी प्रकार शरीर में एक जीवात्मा भी है, उसकी भी खुराक है और उसकी खुराक है ईश्वर से किया प्यार, ईश्वर का किया स्मरण, ईश्वर की याद में बिताया समय। जो व्यक्ति अपने कर्तव्य निभाते हुए ईश्वर के प्रति भी अपने कर्तव्य निभाता है, वह ईश्वर की कृपा का पात्र बनता है। इन्सान इसे प्रशंसा कहे या खुशामद, यह उसके दृष्टिकोण पर निर्भर करता है।

प्रश्न 25 : परम शक्ति को दो रूप क्यों रखने पड़ते हैं ?

उत्तर : परम शक्ति को सर्वशक्तिमान होते हुए भी दो रूप रखने पड़ते हैं - एक साधारण इन्सानी रूप का और दूसरा ईश्वरीय विशेष रूप का। इसके निम्नलिखित कारण हैं :-

1. इन्सानों के बीच रहने के लिए ईश्वर को अधिकतर साधारण रूप अपनाना पड़ता है क्योंकि ईश्वर के इन्सानी रूप को वह साधरण इन्सान ही समझ बैठता है। यदि ईश्वर हर समय विशेष रूप ही बनाए रखे तो इन्सान का उनके पास रहना असम्भव हो जाएगा।

2. ईश्वर साधारण रूप इस लिए भी अपनाते है कि कोई उन्हें समझ न सके और उनके नजदीक इन्सानों की भीड़ इकठ्ठी न हो सके।

3. ईश्वर जब इन्सानी रूप में धरा पर आते हैं तो उन्होंने एक निश्चित समय धरती पर व्यतीत करना होता है। वे हर समय विशेष रूप में नहीं रह सकते। इस लिए उन्हें साधारण रूप अपनाना पड़ता है।

4. परिवार और सम्बन्धियों के बीच विशेष रूप में नहीं रहा जा सकता।

5. हर कोई विशेष रूप के समीप आने के योग्य भी नहीं होता।

6. कर्मफल देने के लिए भी उन्हें साधारण रूप अपनाना पड़ता है और परम शक्ति की ओर संकेत करना पड़ता है।

7. इन्सान स्वभाव से ही स्वार्थी है। वह ईश्वर से अनुचित मांगों की अपेक्षा करता है। ईश्वर उन अनुचित मांगों को नकारने के लिए भी कहता है कि मैं तो आप जैसा हूँ। जो करना है वो तो ईश्वर ने ही करना है। इस लिए भी ईश्वर को साधारण रूप अपनाना पड़ता है।

8. जब किसी को सत्य बात बतानी होती है तो ईश्वर विशेष रूप बना लेते हैं।

## अध्याय – 4

### इन्सान सम्बन्धी प्रश्न

प्रश्न 1 : इन्सान क्या है ?

उत्तर : इन्सान का शाब्दिक अर्थ है मनुष्य, आदमी, मानव। प्रश्न यह है कि इन्सान किसे कहते हैं। यह जो शरीर है क्या इसे इन्सान कहते है। यदि उसको इन्सान कहते हैं तो मृत्यु के उपरान्त उसे शव क्यों कहा जाता है। यदि देखा जाए तो यह शरीर चर्बी, हड्डियाँ, नसें, रक्त, आँत, दिल, फेफड़े, गुर्दे, मांस तथा चमड़ी आदि का समूह ही है जो एक शव में भी होते हैं। तो फिर उस शरीर में क्या था जो उसे जीवित रखे हुए था और शरीर का संचालन करता था। वह एक अदृश्य शक्ति है जिसे जीव-आत्मा या आत्मा कहा गया है। जब जीव-आत्मा शरीर में से निकल जाती है तो वही इन्सान शव बन जाता है। अब प्रश्न यह है कि जीव-आत्मा क्या है ? जीव आत्मा दो शक्तियों का पुंज है, एक ईश्वरीय शक्ति और दूसरी चेतन शक्ति। ईश्वरीय शक्ति ईश्वर का ही अंश है जो मूक दर्शक है और इन्सान के कर्म को देखता रहता है। वही अंश इन्सान के अन्दर श्वास प्रणाली, रक्तसंचार प्रणाली और पाचन प्रणाली आदि पर नियंत्रण करता है। जब ईश्वरीय अंश शरीर छोड़ देता है तो यह प्रणालियाँ कार्य करना बन्द कर देती हैं और इन्सान की मृत्यु हो जाती है। जब इन्सान प्रार्थना करता है तो यही अंश उसकी प्रार्थना सुनता है और इन्सान को साक्षी भाव से कर्म करते हुए देखता है। इन्सान के कर्मों के आधार पर ही इन्सान को अगला जन्म मिलता है। दूसरा है जीव-आत्मा का इन्सानी अंश, जिसे चेतना भी कहा जाता है। चेतना ही इच्छा, अनुभव और अभिव्यक्ति करती है। उसे ही सुख-दुख, लाभ-हानि, यश-अपयश, सफ़लता-असफलता का अहसास होता है। वह अंश ही प्यार और नफ़रत करता है और उसे ही भूख-प्यास लगती है। चेतन शक्ति स्पर्श, दृष्टि, सुगंध, स्वाद, श्रवण आदि का आभास शरीर की

ज्ञानेन्द्रियों द्वारा अर्जित करती है और वाणी द्वारा अभिव्यक्त करती है। हर इन्सान की अपनी सोच, रुचियाँ, स्वभाव, और आदतें होती हैं। इन्सान पूर्व जन्म के संस्कारों और इस जन्म के संस्कारों के अन्तर्गत कर्मफल भोगता है और नए कर्म करता है अर्थात इन्सान कर्म करने में स्वतंत्र है परन्तु फल भोगने के लिए परतन्त्र है।

ईश्वरीय अंश ज्यादातर मूकदर्शक रहता है परन्तु कुछ, गिने-चुने व्यक्तियों के अन्दर वह अंश उजागर हो जाता है और उन शरीरों पर नियन्त्रण करके उनके पूर्व जन्म के संस्कारों के आधार पर कुछ समय के लिए और किसी सीमा तक ईश्वरीय गुणों, नियमों का प्रदर्शन भी कर देता है। अर्थात देवी-देवता, वीर-पीर, गुरु, भगवान, ऋषि-मुनि, सब इन्सानों में से चुने जाते हैं, परन्तु उन इन्सानों में परम शक्ति का अंश उजागर हुआ होता है। जिसके माध्यम से जैसा प्रदर्शन होता है उस इन्सान के नाम के साथ वैसा ही विशेषण लग जाता है। जिनके भी आज समाज में नाम हैं वे सब साधारण इन्सान ही थे परन्तु परम शक्ति की कृपा प्राप्त करने के बाद वे सब महान बन गए। इसी लिए उनके आज नाम हैं और उनकी आज पूजा हो रही है।

प्रश्न 2 : इन्सान को किन-किन श्रेणियाँ में बाँटा जा सकता है ?

उत्तर : संसार में अनगिनत इन्सान है। सबके अलग-अलग स्वभाव हैं, आदते हैं, सोच है, रुचियाँ हैं। इन गुणों के आधार पर इन्सानों को निम्न भिन्न-भिन्न श्रेणियों में बाँटा जा सकता है :-

1. पहली श्रेणी उन इन्सानों की है जिनके अन्दर इन्सानियत नाम की कोई चीज़ नहीं होती। वे अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए कुछ भी करने को तैयार हो जाते है। उनके अन्दर ईर्ष्या, नफरत, जलन कूट-कूट कर भरी होती है। वे दूसरों को दुख में देख कर आनन्द महसूस करते हैं। उनकी सोच में शैतानियत, हैवानियत और दुष्ट विचार भरे होते हैं। उनका कर्म केवल दूसरों को दुख देना, उनका उपहास उड़ाना, उनकी मजबूरी का लाभ उठाना इत्यादि होता है। इस तरह के इन्सान ईश्वर को न मानने वाले नास्तिक होते हैं।

2. दूसरी श्रेणी उन इन्सानों की है जिनमें अच्छाई तथा बुराई दोनों का समावेश होता है। ज्यादातर ऐसे इन्सान अपने स्वार्थों तक ही सीमित रहते हैं और विकारों के अधीन कार्य करते हैं। इनकी सोच अपने परिवार, सगे-सम्बन्धी तथा दोस्तों तक ही सीमित रहती है। स्वार्थ-वश वे ईर्ष्या, द्वेष, जलन, नफरत छल-कपट तथा बदले की भावना का सहारा लेते हैं। अपने भौतिक सुखों की प्राप्ति के लिए वे अच्छे-बुरे दोनों ढंगों का सहारा लेते हैं। विवेकशीलता के अभाव के कारण वे ठीक-गलत का निर्णय नहीं कर पाते। इनमें से कुछ ऐसे भी होते है जो स्वार्थों से ऊपर उठ कर जीवन यापन करते हैं। वे इन्सान आस्तिक एवं नास्तिक दोनों तरह के होते हैं, इन को साधारण इन्सान का दर्जा मिलता है।

3. तीसरी श्रेणी उन इन्सानों की है जिनमें अच्छे गुणों की भरमार होती है और अवगुण नाम मात्र के ही होते हैं। विकार तो हर इन्सान में होते हैं परन्तु ऐसे इन्सान इनका सदुपयोग करते हैं। इनका स्वभाव शांत तथा सरल होता है। ऐसे इन्सानों का भौतिक सुखों के प्रति आकर्षण कम होता है। उनको जो कुछ भी मिलता है वे उसमें ही सन्तुष्ट रहते हैं। ऐसे इन्सान ज्यादातर सद्कर्म करते

हैं। वे आस्तिक होते हैं और ईश्वर के साथ निस्वार्थ प्यार करते हैं तथा ईश्वर के बनाए सिद्धान्तों को आधार बना कर अपना जीवन व्यतीत करते हैं, उन्हें महान आत्मा का दर्जा मिलता है।

4. चौथी श्रेणी उन इन्सानों की है जो सदगुणों के भंडार होते हैं। ऐसे इन्सान अपनी इच्छा से कुछ नहीं करते, सब कुछ ईश्वर की इच्छा पर छोड़ देते हैं। उनका व्यवहार सत्य, न्याय और प्यार पर आधारित होता है। उनमें त्याग की भावना अधिक प्रबल होती है, इसलिए वे भौतिक सुखों की कामना नहीं करते। ऐसे इन्सान आदर्श जीवन जीते हैं। वे अधर्म का नाश करने के लिए किसी भी नीति का प्रयोग करते हैं। ऐसे इन्सान दयालु, कृपालु और दया के सागर होते है और वे किसी को अपना दुष्मन नहीं मानते । ऐसा इन्सान एक समय में गिनती में केवल एक होता है और वह निश्चित होता है और उसे भगवान का दर्जा मिलता है ।

इन्सान की सोच और विश्वास के आधार पर उसे निम्न श्रेणिओं में बांटा जा सकता है :-

1. मनमत - ऐसे इन्सान केवल अपनी बुद्धि पर विश्वास करते हैं। जो कुछ उनके मन में आता है उसे ही वे श्रेष्ठ मानते हैं।

2. शास्त्रमत - दूसरी श्रेणी में वे इन्सान आते हैं जो केवल धार्मिक ग्रन्थों और शास्त्रों से ज्ञान प्राप्त करना ही उचित मानते हैं।
3. गुरुमत - तीसरी श्रेणी उन इन्सानों की है जो गुरु द्वारा दिए गए ज्ञान को ही महत्व देते हैं। उनके गुरु जो कहते हैं वे उसी को सत्य मानते हैं।

4. श्रीमत - चौथी श्रेणी उन इन्सानों की है जो न तो अपनी सोच से काम लेते हैं, न ही शास्त्रों, ग्रन्थों को मानते हैं और न ही किसी गुरु या महान आत्मा के ज्ञान को मानते हैं। वे केवल उस ज्ञान को महत्व देते है जो ज्ञान ईश्वर किसी शरीर का प्रयोग करके या स्वयं अपने इन्सानी रूप में अपने मुख से देते हैं।

उपरोक्त के अतिरिक्त निम्न श्रेणियां इन्सान के मनोबल पर आधारित हैं:-

1. साधारण मनोबल - इस श्रेणी में वे इन्सान आते हैं जो कठिनाई, परेशानियों के डर से कार्य आरम्भ ही नहीं करते, अर्थात बिना मेहनत किए हुए वे सब कुछ पाना चाहते हैं।

1. मध्यम मनोबल - इस श्रेणी में वे इन्सान आते है जो अपनी मंजिल को पाना चाहते हैं। उसके लिए वे प्रयास भी करते हैं परन्तु उनकी राह में यदि रुकावटें परेशानियाँ आ जाएँ तो वे धीरज छोड़ देते हैं और निराश होकर रास्ता बदल लेते हैं और अपनी मंजिल तक नहीं पहुंच पाते।

3. उच्च मनोबल - तीसरी श्रेणी उन इन्सानों की है जो अपनी मंजिल पाने के लिए हर तरह की रुकावट, समस्या या कठिनाई का सामना दृढ़ता से करते हैं। उनका मनोबल किसी भी अवस्था में डोलता नहीं। अंततः वे अपनी मंजिल को पा लेते हैं ।

निम्नलिखित कुछ श्रेणियां हैं जो इन्सान की बुद्धिमता पर आधारित हैं :-

2. पहली श्रेणी ऐसे इन्सानों की है जिनको कोई ज्ञान नहीं होता परन्तु इसके बावजूद वे ज्ञानी होने का दावा करते हैं। ऐसे व्यक्ति मूर्ख होते हैं। उनसे दूरी बनाए रखें ।

3. दूसरी श्रेणी ऐसे इन्सानों की है जिनको ज्ञान नहीं होता परन्तु वे जानते हैं कि उन्हें ज्ञान नहीं है और वे ज्ञान प्राप्त करने की चेष्ठा करते हैं। ऐसे इन्सान जिज्ञासु कहलाते हैं। उन्हें ज्ञान देना चाहिए।

4. तीसरी श्रेणी उन इन्सानों की है जो ज्ञान तो रखते हैं परन्तु वे उस ज्ञान के प्रति सजग नहीं होते। वे सोए हुए हैं। उन्हें जगाना चाहिए ।

5. चौथी श्रेणी ऐसे इन्सानों की है जो ज्ञान भी रखते हैं और वे उस ज्ञान के प्रति सजग भी होते हैं । वे बुद्धिमान होते हैं । ऐसे इन्सानों का अनुसरण करना चाहिए।

प्रश्न 3 : इन्सान दुखी क्यों रहता है ?

उत्तर : कहते हैं यह संसार दुखों का घर है, यहाँ कोई भी सुखी नहीं है। कोई सन्तान न होने के कारण, कोई सन्तान के होने के कारण, कोई शारीरिक बीमारी के कारण तथा कोई किसी और परेशानी के कारण दुखी है । इस संसार में ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं है जो कह सके कि वह पूर्णतः सुखी है । हर किसी को कोई न कोई दुख अवश्य है, चाहे वह अमीर है या गरीब, जवान है या वृद्ध, पुरुष है या स्त्री, हर किसी के दुख अलग-अलग प्रकार के हैं, कारण भी अलग-अलग हैं।

हर इन्सान शारीरिक-सुख, मानसिक शान्ति और खुशहाली चाहता है। वह चाहता है कि हर सुख-सुविधा उसे मिले। परन्तु जैसे-जैसे उसे सांसारिक सुख मिलते जाते है वैसे-वैसे उसकी इच्छाएँ भी बढ़ती जाती हैं। इससे वह अशुभ व अनुचित मांगें करने लगता है जो नैतिकता पर आधारित नहीं होती। ईश्वर तो हर इन्सान से न्याय ही करता है। इन्सान को वही मिलता है जिसके वह योग्य होता है। परन्तु जो उसके पास है इन्सान उससे खुश नहीं है, जो उसके पास नहीं है उसके ना होने से दुखी है। ईश्वर इन्सान की अशुभ तथा अनैतिक इच्छाएँ पूर्ण नहीं करते । इन्सान इससे भी दुखी होता है ।

इन्सान के दुखी होने के कुछ और भी कारण हैं जो निम्नलिखित हैं :-

1. शारीरिक अपंगता या रोगों के कारण दुखी होना।
2. अनैतिक इच्छाओं के कारण दुखी होना ।

3. योग्यतानुसार प्राप्ति न होने के कारण दुखी होना।
4. स्वयं से सन्तुष्ट न होने के कारण दुखी होना।
5. निराशावादी सोच के कारण दुखी होना।
6. ईर्ष्या- द्वेष के कारण दुखी होना।
7. लालच के कारण दुखी होना।
8. गरीबी के कारण दुखी होना।
9. अशुभ व अनुचित इच्छाओं के कारण दुखी होना।

प्रश्न 4: इन्सान के दुखी होने का मूल कारण क्या है ?

उत्तर : अज्ञानता।

प्रश्न 5: अज्ञानता क्या है ?

उत्तर : स्वयं को न पहचानना।

प्रश्न 6: स्वयं को कैसे पहचाना जा सकता है ?

उत्तर : प्रभु कृपा से।

प्रश्न 7: प्रभु कृपा किस पर होती है ?

उत्तर : जिस पर प्रभु इच्छा हो जाए ।

प्रश्न 8: प्रभु इच्छा कैसे प्राप्त होती है ?

उत्तर : प्रभु इच्छा ही एक ऐसा स्रोत है जिससे इन्सान के दुखों का अन्त हो सकता है। परन्तु प्रभु इच्छा प्राप्त होने का भी आधार होता है जैसे पूर्व जन्मों के संस्कार, वर्तमान जीवन में किया सद्व्यवहार तथा ईश्वर से किया गया निस्वार्थ प्यार, श्रद्धा, लगन, विश्वास तथा ईश्वर की रज़ा में राज़ी रहना इत्यादि।

प्रश्न 9 : इन्सान के जीवन में ईश्वर का क्या महत्व है ?

उत्तर : यह वैज्ञानिक सत्य है कि जो कुछ भी सृष्टि में बना है जैसे सूर्य, धरती, जल, वायु-मंडल, अग्नि, ग्रह-नक्षत्र आदि यह सब इन्सान के अस्तित्व में आने से पहले ही बना हुआ था। प्रश्न है कि फिर इस सृष्टि को किसने बनाया है ? कोई उसे कुदरत कहता है तो कोई उसे प्रकृति, तो कोई उसे नेचर कहता है। जिसे कुदरत प्रकृति या नेचर कहा, वही ईश्वर है जो किसी को दिखाई नहीं देता। जब कुछ भी नहीं था ईश्वर तब भी था, अब भी है और आगे भी रहना है, तभी उसे अनादि और अनंत कहा है। जो कुछ इस सृष्टि में बना है उसका प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रयोग इन्सान ही करता है। इन सब प्रमाणों के बावजूद इन्सान ईश्वर के अस्तित्व से इन्कार करता है क्योंकि इन्सान को ईश्वर दिखाई नहीं देता। परन्तु ईश्वर का अस्तित्व है और इन्सान के जीवन में ईश्वर का सर्वाधिक महत्व है। निम्नलिखित कुछ कारण हैं जो दर्शाते हैं कि इन्सान के जीवन में ईश्वर का क्या महत्व है।

1. सृष्टि रचना में ईश्वर की इन्सान के लिए देन :

   ईश्वर ने इन्सान के जीवन को सम्भव बनाने और उसकी जरूरतों को पूरा करने के लिए उचित व्यवस्था की, अर्थात सूर्य, चन्द्रमा, सितारे, धरती, आकाश, वायुमण्डल, वनस्पति, जीव-जन्तु इत्यादि की रचना की। ईश्वर ने ही सृष्टि की रचना के पश्चात इन्सान को बनाया तथा उसकी जरूरतों का उचित प्रबन्ध किया। यदि ईश्वर ने ये सब न बनाया होता तो इन्सान का जीवन सम्भव हो ही नहीं सकता था।

2. धरती में गुरुत्वाकर्षण शक्ति :

   ईश्वर ने धरती में गुरुत्वाकर्षण शक्ति पैदा की। यदि धरती में गुरुत्वाकर्षण शक्ति न होती तो धरती पर कुछ भी नहीं ठहर सकता था। उस अवस्था में जीवन कैसे सम्भव हो सकता है ?

3. जल-वायु व खनिज पदार्थ :

   सर्वप्रथम जीवों को जीने के लिए हवा, पानी, खाद्य पदार्थ इत्यादि की आवश्यकता होती है। ईश्वर ने इसका बड़े ही सुनियोजित ढंग से प्रबन्ध किया है। परम शक्ति कहो या ईश्वर, उस ने हर चीज़ का उचित प्रबन्ध पहले से ही किया हुआ है। धरती में खनिज पदार्थ, पैट्रोलियम, बिजली यह सब कुछ ईश्वर ने पहले से ही पैदा किए हुए है। इन्सान ने केवल उनकी खोज की है।

4. कर्म-फल और पुनर्जन्म :

   सृष्टि में चाहे जीव है या निर्जीव, सब कुछ नियमों में बंधा हुआ है। उसी तरह इन्सान का जीवन भी नियमों में बंधा है। इन्सान का जन्म है तो उसकी मृत्यु भी है। इन्सान ने अपने जीवन काल में कुछ कर्म किए होते हैं जिनके आधार पर ईश्वर उसको कर्मफल देता है। नया जन्म, माता-पिता, भाई-बहन, पति-पत्नी, शरीर, रंग-रूप, बुद्धि आदि की प्राप्ति कर्मफल के अनुसार ही होती है। इन्सान के जीवन का अधिकांश घटनाक्रम इन्सान के पूर्व जन्म के आधार पर घटता है। सफलता-असफलता, सुख-दुख, लाभ-हानि, यश-अपयश, जय-

पराजय आदि सब कुछ ईश्वर की इच्छा से होते है। इन्सान ईश्वर को माने या न माने ईश्वर का इन्सान के जीवन में अहम स्थान है।

5. इन्सान का सच्चा गुरु :

विज्ञान का भी यह मानना है कि जब से इन्सान अस्तित्व में आया है तब से ही प्रकृति से प्रेरित हो कर उसने धीरे-धीरे प्रगति की, अर्थात इन्सान ने जो कुछ भी सीखा या खोज की वह प्रकृति की रचना से प्रेरित हो कर ही की। जैसे उसने पक्षियों से उड़ना तथा पानी के जीवों से तैरना सीखा। जिसने पक्षिओं को उड़ना तथा पानी के जीवों को तैरना सिखाया , उसी से इन्सान ने सब कुछ सीखा। वास्तव में प्रतक्ष तथा परोक्ष रूप में ईश्वर ही इन इन्सान का सच्चा गुरु है। उसी से इन्सान ने सब कुछ पाया और सीखा।

संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि इन्सान का जीवन ईश्वर की देन है। इसलिए इन्सान को चाहिए कि वह ईश्वर के अस्तित्व को माने, उसके बारे में ज्ञान प्राप्त करे और सदा उसका शुक्रगुज़ार रहे।

प्रश्न 10 : इन्सान आस्तिक से नास्तिक कैसे बनता है ?

उत्तर : आस्तिक का अर्थ है, ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करने वाला और नास्तिक का अर्थ है, ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार न करने वाला। कुछ लोग आस्तिक होते हैं, उनकी अपने इष्ट के प्रति गहरी आस्था होती है परन्तु परिस्थितियाँ और हालात ऐसे बन जाते है कि वे लोग नास्तिक बन जाते हैं और कुछ लोग नास्तिक होते हैं, वे ईश्वर पर विश्वाश नहीं करते परन्तु वे ईश्वर के अनन्य भक्त बन जाते हैं। निम्नलिखित कुछ कारण बताए गए है जिनके कारण इन्सान आस्तिक से नास्तिक बन जाता है :-

1. ईश्वर की प्राप्ति का मार्ग अत्यधिक कठिन मार्ग है। जब इन्सान ईश्वर को पाने के लिए अपने कदम आगे बढ़ाता है तो उसके मार्ग में रुकावटें आने लगती हैं। जब इन्सान को कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है तो वह निराश तथा हताश तो जाता है। उसे सब कुछ बेकार लगने लगता है अंतत: वह ईश्वर से बेमुख हो जाता है।

2. जब इन्सान ईश्वर की प्राप्ति के लिए आगे बढ़ता है तो ईश्वर भी उसके विश्वास की परख करते हैं। इसलिए ईश्वर इन्सान के समक्ष विपरीत परिस्थितियाँ पैदा कर देते हैं। ज्यादातर इन्सान शारीरिक, आर्थिक और सामाजिक तौर से टूट जाते है और उनका विश्वास डगमगा जाता है, फलस्वरूप वो नास्तिक हो जाते हैं।

3. ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास रखने वाला व्यक्ति जब श्रद्धा, विश्वास, लगन के साथ ईश्वर का जप-तप करता है, ईश्वर के सिद्धान्तों पर चल कर अपना जीवन व्यतीत करता है। यदि फिर भी इन्सान को ईश्वर का अनुभव नहीं मिलता तो उसके मन में शंका पैदा हो जाती है और इन्सान का विश्वास टूट जाता है। इन्सान को अपना मनोरथ पूर्ण होता दिखाई नहीं देता। अन्त में वह व्यक्ति नास्तिक हो जाता है।

4. इन्सान अपनी योग्यता से अधिक पाने की लालसा करता है परन्तु उसे उतना ही मिलता है जितना उसके भाग्य में होता है। इन्सान अपनी मेहनत और ईमानदारी से आगे बढ़ने का प्रयास करता है परन्तु उसे सफलता नहीं मिलती। इसके लिए वह ईश्वर से बार-बार प्रार्थना भी करता है पर प्रार्थना फलीभूत नहीं होती। तब उसे लगने लगता है कि ईश्वर नाम की कोई सत्ता नहीं है और वह ईश्वर से विमुख हो जाता है।

5. हर इन्सान को पूर्व जन्म में किए कर्मों का फल भोगना पड़ता है, इसलिए इन्सान का जीवन सुख और दुख का मिश्रण होता है। जब इन्सान अपने जीवन में दुष्कर्मों का फल भोगता है तो उसे कठिनाइयों, परेशानियों, मुसीबतों का सामना करना पड़ता है। इन्सान इन सब से राहत पाने के लिए ईश्वर को याद करता है तथा वह वो सब कुछ करता है जिससे उसे लगता है कि कठिनाइयों से राहत मिलेगी। परन्तु जब ऐसा नहीं होता तो धीरे-धीरे उसका विश्वास ईश्वर पर से उठने लगता है और इन्सान धीरे-धीरे नास्तिकता की और बढ़ जाता है।

प्रश्न 11: नेक इन्सान में कौन-कौन से गुण होते हैं ?

उत्तर : जिस इन्सान में इन्सानियत है, वह एक नेक इन्सान कहलाता है। परन्तु इन्सान में इन्सानियत है, इस तथ्य को कैसे निर्धारित किया जाए ? इसका उत्तर है इन्सान का दूसरों के प्रति व्यवहार, अर्थात "जैसा वह अपने लिए दूसरों से चाहता है वैसा ही दूसरों से करता है" वही इन्सानियत है। इन्सान का दूसरों के प्रति आचरण, व्यवहार, चरित्र, दृष्टिकोण, सोच-विचार ही इन्सानियत का आधार है। ज्यादातर आचरण का अर्थ व्यवहार से लिया जाता है। वास्तव में व्यवहार और सिद्धांत का संयुक्त सुमेल है आचरण। इन्सान का आचरण और व्यवहार इन्सान के पूर्वजन्म के संस्कार, जन्म से माता-पिता द्वारा मिले संस्कार और परिवार व समाज के वातावरण पर निर्भर करता है। इसके साथ-साथ अच्छे चरित्र का होना भी अति आवश्यक है, जैसे सत्य बोलना, सत्य का साथ देना, निष्ठावान होना, बड़ों का सम्मान तथा छोटो से प्यार करना। ईश्वर के अस्तित्व को मानना, ईश्वर के बनाए सिद्धांतों का पालन करना। नेक कर्म करना, ईर्ष्या, द्वेष, जलन, नफरत न करना। सबसे सद्व्यवहार करना। क्षमामय, दयामय और करुणामय होना और किसी के उपकार को न भुलाना। इन्सानी कर्तव्यों का पालन ईमानदारी से करना तथा दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करना जैसा दूसरों से अपने लिए चाहना। इसके साथ- साथ नेक कर्म सद्व्यवहार और सभी से प्यार करना। अपने दुखों , कष्टों के लिए ईश्वर को न कोसना। ईश्वर से कभी नाराज न होना इतिआदि।

जो इन्सान उपरोक्त गुणों एवं नियमों को अपने जीवन में अपनाता है, वास्तव में वही इन्सान कहलाने का हक़दार होता है और उसे ही नेक इन्सान कहा जा सकता है।

प्रश्न 12: क्या इन्सान को पूजा–पाठ, जप–तप, भक्ति आदि करना चाहिए ?

उत्तर : प्राय: इन्सान पूजा-भक्ति अपने सांसारिक सुखों, शारीरिक तंदुरुस्ती तथा अपने दुखों कष्टों के निवारण के लिए करता है और चाहता है कि उसका जीवन खुशहाल रहे। प्रश्न है कि इन्सान के जीवन में दुख, कष्ट, परेशानियाँ आती ही क्यों है ? इन्सान के जीवन में सुख दुख का आना उसके द्वारा किए गए कर्मों का फल होता है।

ऐसा महान आत्माओं ने भी कहा है कि ईश्वर कर्मफल दाता है और ईश्वर हर इन्सान को उसके द्वारा किए गए कर्मों का फल देता है। यदि इन्सान ने कर्मों का फल ही भोगना है तो फिर पूजा-भक्ति का क्या महत्व है ? इस सम्बन्ध में इतना ही कहना है कि ईश्वर भी इन्सान से कुछ चाहता है, उसकी भी कुछ इच्छाएँ हैं, ईश्वर इन्सान से चाहता है कि इन्सान उसे जाने, माने और उसे याद करे। जो इन्सान ईश्वर के बारे में ज्ञान प्राप्त करता है, उसके लिए अपनी दिनचर्या में से समय निकालता है, उसे याद करता है, कोई भी महत्वपूर्ण कार्य करने से पूर्व ईश्वर से प्रार्थना करता है, कार्य पूर्ण होने पर उसका शुक्रगुजार होता है, उससे कभी भी नाराज नहीं होता अपितु सदैव उसकी रजा में राजी रहता है तो वह इन्सान ईश्वर की कृपा का पात्र बनता है। तब ईश्वर उस इन्सान को नेक राह पर चलाते है, उसका मार्गदर्शन करते है, गलत कार्य करने पर उसे दृष्टांत देते है, अपना अनुभव प्रदान करते हैं, ईश्वर केवल जज्ज ही नहीं है अपितु न्यायकर्ता होने के साथ साथ दयालु और कृपालु भी है। वे केवल सज़ा ही नहीं देते। यदि ईश्वर इच्छा हो जाए तो इन्सान का बड़े से बड़ा गुनाह भी क्षमा कर देते हैं। जो इन्सान ईश्वर के सत्य स्वरूप को जान कर उसकी पूजा करते हैं, उसके द्वारा दिए हुए ज्ञान को अपने जीवन में लागू करते हैं तथा अपने मन में ईश्वर का डर बनाए रखते हैं तो वे लोग दुष्कर्म करने से बचे रहते हैं। जीवन में आने वाली परेशानीयों में ईश्वर उनकी मदद करते हैं तथा विकट परिस्थितियों में धैर्य शक्ति प्रदान करते हैं, जिससे इन्सान का जीवन सुखमय और शांतमय हो जाता है। इसलिए इन्सान को ईश्वर के लिए कुछ समय अवश्य निकालना चाहिए।

प्रश्न 13: क्या इन्सान के अन्दर ईश्वर है ?

उत्तर : उपरोक्त प्रश्न का उत्तर जान लेने से पहले यह जान लेना आवश्यक है कि हर इन्सान अपने शरीर के बाहरी अंगों का प्रयोग तो अपनी इच्छा और बुद्धि के अनुसार कर लेता है, परन्तु शरीर के अन्दरूनी अंग जैसे पाचन-क्रिया प्रणाली, रक्त-संचार प्रणाली तथा श्वास-क्रिया प्रणाली का प्रयोग वह अपनी इच्छा या बुद्धि के अनुसार नहीं कर सकता। इन प्रणालियों को कौन है जो नियन्त्रण कर रहा है ? जब इन्सान गहरी निद्रा में होता है या दुर्घटनाग्रस्त होने पर इन्सान का अपने शरीर पर नियन्त्रण नहीं रहता अर्थात् बेहोशी में चला जाता है तब कौन है जो उसकी श्वास प्रणाली, रक्त संचार प्रणाली को चला रहा होता है ? जब ये कार्य-प्रणालियाँ कार्य करना बन्द कर दें तो कोई वैज्ञानिक, कोई डाक्टर इसे दोबारा चलाना शुरू नहीं कर सकता। इसका अर्थ है कि इन्सान के अन्दर कोई और है जो इन सब पर नियन्त्रण कर रहा है।

उपरोक्त के अतिरिक्त जब इन्सान मन ही मन अपने दुखों कष्टों परेशानियों के लिए ईश्वर को प्रार्थना करता है तो उस समय मन में की गई प्रार्थना को कौन सुनता है ? सुन तो वही सकता है जो शरीर के अन्दर विराजमान है। इसका अर्थ है कि शरीर के अन्दर वही शक्ति विराजमान है जो सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान है। वह केवल ईश्वर ही है जिसे कहा है कि वह जग के कण-कण में व्यापक है। जो कण-कण में व्यापक है वही शरीर के अन्दर भी है और बाहर भी है, जो इन्सान के हर कर्म का लेखा-जोखा भी कर रहा है, जिसके आधार पर उसने इन्सान को कर्मफल देना है।

प्रश्न 14: हर इन्सान को अपने अन्दर ईश्वर का अनुभव क्यों नहीं होता ?

उत्तर : इन्सान सब पर विश्वास करता है पर उस पर विश्वास नहीं करता जिसने उसके जन्म लेने से पूर्व माँ के गर्भ में उसकी खुराक का प्रबन्ध किया, पैदा होने पर माँ के भीतर दूध पैदा किया, साँस लेने के लिए हवा दी, खाने के

लिए अनाज पैदा किया। उसकी हर एक आवश्यकता की उसके जन्म से पहले ही उचित व्यवस्था की। इन्सान के अन्दर भी शक्ति है जो उसके शरीर का संचालन कर रही है। उस शक्ति का स्वामी भी कोई है।

कई लोगों का मानना है कि ईश्वर नाम की कोई शक्ति है ही नहीं। इस सृष्टि का सृजन करने वाला कोई नहीं है। यह सब अपने आप हो रहा है। यदि इन्सान उसे जानने की कोशिश भी करता है तो ईश्वर की बेअन्त माया में उलझ कर रह जाता है। इन्सानी बुद्धि की एक सीमा है जो ईश्वर की बेअन्त माया को समझने में असमर्थ है। ईश्वर ही अपनी इच्छा से इन्सान को अपनी पहचान करवाता है, अपना अस्तित्व दर्शाता है तथा बोध करवाता है। वैसे तो ईश्वर अनादि, अनन्त, अगम्य, अगोचर, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक सर्वशक्तिमान है। वही जग के कण-कण में व्यापक है। वह हर इन्सान के अन्दर भी है और बाहर भी है। हर इन्सान अपने अन्दर उसका अनुभव इसलिए नहीं करता क्योंकि वह मूक दर्शक है। ईश्वर अपना अनुभव केवल उनको ही करवाता है जिसके पूर्व संस्कार अच्छे होते हैं, या जब इन्सान ईश्वर के बारे में ज्ञान प्राप्त करके उससे सम्पर्क बनाने की कोशिश करता है, या फिर जिस पर ईश्वर की इच्छा हो जाए उस को ईश्वर अपना अनुभव करवाता है और उसे अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रयोग भी करता है। परन्तु इन्सान तो केवल शारीरिक सुखों की दौड़ में लगा हुआ है। उसके पास अपने रचयिता को जानने का समय ही नहीं है। यदि किसी के पास समय है भी और वह कोशिश भी करता है तो इन्सान विकारों के अधीन होने के कारण पथ भ्रष्ट हो जाता है। उसके विकार उसे पथभ्रष्ट कर देते हैं। जब कोई इन्सान ईश्वर का अनुभव प्राप्त करने का प्रयास करता है तो ईश्वर उसकी परख करते हैं। इन्सान उस परख में डोल जाता है और स्वार्थवश पथभ्रष्ट हो जाता है।

हर इन्सान के भीतर ईश्वर है। इन्सान जब आँखें बन्द करके मन में प्रार्थना करता है तो उसकी प्रार्थना किस ने सुनी ? किस ने पूरी की ? वही पूरी करेगा जो उसके भीतर है। इन्सान के भीतर ईश्वर हैं परन्तु वे दिखाई तभी देते हैं जब ईश्वर इच्छा हो जाए या उसे पूर्ण गुरु मिल जाए जो उसे आत्मसाक्षात्कार करवा दे।

प्रश्न 15: क्या इन्सान की मृत्यु निश्चित होती है ?

उत्तर : इस सम्पूर्ण सृष्टि में अनादि और अनन्त तो गिनती में केवल एक है और वह स्वयं ईश्वर है। उसके अतिरिक्त जो कुछ भी सृष्टि में है वह अनादि-अनन्त नहीं है। यह भी अटल सत्य है जिसका आदि है उसका अन्त भी है अर्थात जो बना है उसने मिटना भी अवश्य है भले ही वह जीव है या निर्जीव है। ईश्वर ने हर चीज़ का जोड़ा बनाया है जैसे, अनादि-अनन्त, उसी तरह आदि-अन्त और जीवन-मृत्यु का भी जोड़ा है। यह अटल सच्चाई है कि जिसका जन्म हुआ है उसकी मृत्यु भी निश्चित है। तभी कहते है कि ईश्वर और मृत्यु को सदा याद रखो।

संसार में जितने भी जीव हैं, जैसे कि पशु-पक्षी, जानवर, धरती पर विचरने वाले , जल में रहने वाले या फिर आकाश में उड़ने वाले हैं, उन सब की औसत आयु अलग-अलग है। इसी तरह निर्जीव जैसे पहाड़ हैं, उल्का पिंड हैं, पेड़ पौधे हैं, सभी की अवधि निश्चित है। इसी तरह इन्सान की आयु भी निश्चित होती है। यदि ऐसा न हो तो धरती पर किसी भी जीव का जीवन सम्भव ही न हो सकता। सृष्टि का क्रम-चक्कर सुचारू रूप से चलाने के लिए ही ईश्वर ने यह नियम बनाया है। मान लो यदि मृत्यु न होती तो क्या इन्सान अपने जर्जर शरीर के साथ अपना जीवन सम्भव कर पाता। इसलिए ईश्वर ने जो भी सिद्धांत बनाए हैं वे सभी जीवों के हित में ही बनाए हैं। इसलिए इन्सान की भी मृत्यु निश्चित है।

प्रश्न 16 : मृत्यु के पश्चात मनुष्य के लिए किए गए कर्म-काण्ड क्या उसके लिए सार्थक सिद्ध होते है ?

उत्तर : इस सृष्टि में इन्सान को इन आँखों से जो कुछ दिखाई दे रहा है भले ही वह जीव हो या निर्जीव, एक न एक दिन उसका अन्त अवश्य होता है। कुदरत का भी नियम है कि जिसका आदि है उसका अन्त भी है। ईश्वर ने सभी प्राणियों में से उत्कृष्ट रचना इन्सान की ही की है और उसे ही सर्वश्रेष्ठ प्राणी बनाया है, परन्तु अन्त उसका भी निश्चित है।

यहां यह विचारणीय है कि मृत्यु किसकी होती है। हर इन्सानी शरीर में दो शक्तियां मौजूद रहती है एक, जिसे चेतन शक्ति या इन्सानी शक्ति कहा गया है, जो कर्मफल भोगती है, सुख-दुख, खुशी-गमी का अनुभव करती है। दूसरी शक्ति ईश्वरीय अंश है जो शरीर में मूक दर्शक बना रहता है। दोनों ही शक्तियाँ अदृश्य हैं जो किसी को दिखाई नहीं देतीं। इन्सानी चेतन शक्ति की मृत्यु नहीं होती अपितु वह शरीर को त्यागती है, इस लिए कहते है देहांत अर्थात देह का अन्त हो गया है।

हर धर्म में जन्म, मृत्यु, विवाह इत्यादि के समय अपने-अपने कुछ रीति-रिवाज किए जाते हैं। इसी तरह मृत्यु उपरान्त जो समाज के रीति-रिवाज होते है सगे-सम्बन्धी उन्ही के अनुसार मृत शरीर का दाह-संस्कार करते हैं। उसके उपरान्त कई वर्षों तक तरह-तरह के कर्म–कांड किए जाते हैं। प्रश्न है कि मृत्यु के उपरान्त उस मनुष्य के लिए किए गए कर्म-काण्ड उसके लिए सार्थक सिद्ध होते हैं ?

सभी प्राणियों में से इन्सान ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना हैं। उसे ही ईश्वर ने सभी प्राणियों का सरताज बनाया है। इन्सान पर ही कर्मफल का नियम लागू होता है। इन्सान तब तक कर्म करता है जब तक वह जीवित रहता है और उसे जीवन में जो कुछ भी मिलता है सभी उसे अपने किए हुए कर्मों का फल मिलता है। इसलिए मृत्यु उपरान्त भी उस जीव आत्मा को नया जीवन भी उसके द्वारा किए गए कर्मों के आधार पर मिलता है और उसके जीवन में जो कुछ भी घटित होता है उसके कर्मों का फल होता है। इसलिए सगे-सम्बन्धी मृत्यु उपरान्त उस इन्सान के लिए जो कुछ भी क्रिया कर्म करते हैं उससे उस जीव-आत्मा को कोई लाभ नहीं पहुँचता। इन्सान सभी प्राणियों में ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना है इसलिए मृत्यु उपरान्त उसका अन्तिम संस्कार आदर-सहित किया जाना चाहिए, तथा शोक ग्रस्त परिवार को सामान्य जीवन में लाने के लिए उन्हें सांत्वना देनी चाहिए। शोक ग्रस्त परिवार के साथ सहानुभूति रखते हुए उस दुख की अवस्था में कुछ दिन के लिए उनका सहारा बनना चाहिए।

प्रश्न 17 : इन्सान के जीवन का उद्देश्य क्या होना चाहिए ?

उत्तर : संसार में हर इन्सान के जीवन का कोई न कोई उद्देश्य अवश्य होता है। प्रत्येक इन्सान की इच्छाएँ, स्वभाव, आदतें व रुचियाँ भिन्न-भिन्न होने के कारण उनके जीवन का उद्देश्य भी अलग होता है। जब इन्सान का जन्म होता है तो ईश्वर द्वारा उसके जीवन का उद्देश्य पूर्व जन्मों के संस्कारों के आधार पर निश्चित किया होता है परन्तु वह इन्सान की समझ से बाहर होता है।

साधारणत : इन्सान के जीवन का उद्देश्य रोटी, कपड़ा और मकान की मूल आवश्यकताओं की पूर्ति से आरम्भ होता है। उसके पश्चात इन्सान चाहता है कि वह अपने कार्यक्षेत्र में उन्नति करे, उसमें सफलता प्राप्त करे, उसे नेक संतान मिले, संतान का भविष्य उज्ज्वल हो, आर्थिक खुशहाली हो, शारीरिक तंदुरुस्ती हो, समय और वातावरण

के अनुसार उसकी इच्छाएँ पूर्ण हों। इन्सान का जीवन इन उद्देश्यों की पूर्ति करने में ही व्यतीत होता है। जब ये इच्छाएँ पूर्ण नहीं होती तो उसे ईश्वर की आवश्यकता महसूस होती है। इन्सान, ईश्वर को जिस भी रूप में याद करे, उसका उद्देश्य अपनी इच्छाओं की पूर्ति ही होता है। इन्सान इन आवश्यकताओं के साथ जन्म लेता है और इन आवश्यकताओं के साथ समाप्त हो जाता है लेकिन उसकी इच्छाएँ समाप्त नहीं होतीं।

उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए इन्सान हर सम्भव कोशिश करता है परन्तु समय के साथ–साथ उद्देश्य बदलते जाते हैं। जैसे-जैसे इन्सान की सोच विकसित होती है, वह अपने दृष्टिकोण से संसार को देखना शुरू कर देता है तथा अपनी मानसिकता के अनुसार अपने जीवन का उद्देश्य निर्धारित करता है। इन्सान सब पर विश्वास करता है परन्तु उस पर विश्वास नहीं करता जिसने उसके जन्म लेने से पहले ही माँ के अन्दर दूध पैदा किया, सांस लेने के लिए हवा दी, खाने के लिए अनाज पैदा किया, उसे जो चाहिए था वह उसके जन्म से पहले ही पैदा किया तथा उसकी हर आवश्यकता की उचित व्यवस्था की। इसलिए इन्सान के जीवन का उद्देश्य केवल एक ईश्वर को जानना, उसे मानना और उसे प्राप्त करना होना चाहिए। लेकिन खेद की बात है कि इन्सान उसका अस्तित्व मानने से भी इन्कार करता है। क्यों ?

जो सृष्टि का रचयिता है वह अनादि, अन्नत, अगम्य, अगोचर तथा सर्वोच्च है। उसे ही ईश्वर कहा है। जब ईश्वर इन्सान को कभी दिखाई ही नहीं दिया और यदि इन्सान ने उसे ढूंढने की कोशिश भी की तो ईश्वर की बेअंत माया में उलझ कर रह गया। जिस इन्सान को ईश्वर का अनुभव नहीं मिलता वह कहता है ईश्वर नहीं है और इस बात को मान कर चलता है कि सृष्टि में जो कुछ हो रहा है अपने आप ही हो रहा है। किन्तु ईश्वर ने भी समय-समय पर महान आत्माओं को धरा पर भेज कर उनके माध्यम से अपने बारे में ज्ञान दिया, अपना नाम रखवाया तथा निर्जीव चिह्नों को स्थापित करवाया ताकि इन्सान उसके अस्तित्व को माने और उससे प्यार करे। इन्सान के प्यार का, विश्वास का ईश्वर पर प्रभाव पड़ता है। जब इन्सान ईश्वर से प्यार करता है तो ईश्वर भी उससे प्यार करता है।

हर इन्सान किसी न किसी से प्यार, विश्वास की आशा करता है, परन्तु उसको यह विश्वास और नि:स्वार्थ प्यार प्राप्त नहीं होता। इस प्यार की खोज में इन्सान ईश्वर की शरण में आता है क्योंकि एक ईश्वर ही है जो इन्सान से निस्वार्थ प्यार करता है। वह भक्त वत्सल है, ममतामय है, करुणामय तथा सर्वसुख दाता है। इन्सान कर्मफल भोगने के लिए ही जन्म लेता है, इन्सान के जीवन का उद्देश्य होना चाहिए कि वह जन्म-मरण के बंधन से मुक्त हो जाए। कर्मफल का सिद्धांत है कि "दूसरों के साथ ऐसा व्यवहार करो जैसा कि आप दूसरों से अपने लिए चाहते हो"। इस सिद्धांत के आधार पर ही इन्सान को कर्मफल मिलता है। इसीलिए इन्सान का कर्तव्य बनता है कि जिस ईश्वर ने किया ही सब कुछ इन्सान के लिए है, उसके बारे में ज्ञान प्राप्त करे, उससे प्यार करे और उससे डरे भी। जिसके अन्दर ईश्वर का डर रहता है, वह कोई भी कर्म करने से पहले सोचता है। जब इन्सान सच्चे मन से इस नियम पर चलता है या चलने की कोशिश करता है तो यदि ईश्वर इच्छा हो तो उसे मोक्ष भी मिल जाता है। इसलिए इन्सान का उद्देश्य ईश्वर प्राप्ति होना चाहिए। ईश्वर प्राप्ति किसी वस्तु की प्राप्ति नहीं है, न ही किसी व्यक्ति की प्राप्ति है, ईश्वर की प्राप्ति का अर्थ है ईश्वर के प्यार की प्राप्ति जिससे इन्सान आवागमन के चक्कर से मुक्त होता है।

प्रश्न 18: इन्सान में पाँच विकारों का अस्तित्व वरदान है या अभिशाप ?

उत्तर : कहते हैं कि इन्सान में काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार नाम के पाँच विकार हैं। कोई कहता है कि यह पांच चोर हैं इन्हें खत्म कर दो, तो कोई कहता है कि यह इन्सान में पाँच भूत है इन्हें भगा दो। परन्तु यह सभी सच्चाई से दूर की बातें हैं। सभी कहते है कि इन्सान को इन विकारों पर नियन्त्रण रखना चाहिए लेकिन इतिहास साक्षी है कि जितने भी शरीरधारी धरा पर आए कोई भी पूर्ण रूप से इन पर नियन्त्रण नहीं कर पाया। जिसने भी जितना इनका अपने जीवन में सदुपयोग किया वह उतना ही महान कहलाया।

साधारण इन्सान इनका सदुपयोग कर ही नहीं सकता। उसके मन में क्रोध, लोभ व मोह वश वातावरण एवं परिस्थितयों के आधार पर अनेकों उद्गार बरबस पैदा हो जाते हैं। जैसे ईर्ष्यावश किसी की हानि पर प्रसन्नता का अहसास। किसी की बेबसी, लाचारी, मजबूरी, शारीरिक कमजोरी, असफलता, शारीरिक अपाहिजता व किसी की मन्दबुद्धि पर मन ही मन उसका उपहास उड़ाना आदि। अहंकार वश किसी व्यक्ति को दूसरों की दृष्टि में नीचा दिखाना, इन्सानियत के विपरीत कार्य करना। ऐसे व्यक्ति मन में छल–कपट रखकर दूसरे व्यक्तियों को बर्बादी के कगार पर खड़ा कर देते है।

इस सृष्टि को रचने वाली एक शक्ति है, जो न नर है न नारी है, वो अनादि-अनंत है और प्रायः इन्सान के लिए अगम्य और अगोचर रहती है। इन्सान ईश्वर की सर्वश्रेस्ठ रचना है। संसार तथा इन्सान के जीवन को सुचारू रूप से चलाने के लिए ही सर्वशक्तिमान ने इन्सान के अन्दर पांच प्रवृतियों का निर्माण किया है। यदि उपर्युक्त पांच प्रवृतियाँ इन्सान में न होती तो क्या इन्सान का जीवन सम्भव था ? यदि "काम" नाम की प्रवृति न होती तो क्या इन्सान का जीवन चक्र चल सकता था, यदि इन्सान में मोह न होता तो क्या वह अपने बच्चो का पालन पोषण कर पाता। मोहवश ही इन्सान अपने बच्चों से तथा रिश्तों नातों से प्यार करता है। इसी तरह यदि इन्सान में लोभ न हो तो क्या वह अपने जीवन में उन्नति कर पाता। यदि इन्सान में क्रोध न हो तो क्या वह अपने बच्चों को उचित राह पर चला पाता, सत्य इतना ही है कि जबतक इन्सान इन प्रवृतियों का जीवन में सदुप्रयोग करता है तबतक ये लाभदायक रहती हैं परन्तु जब इन्सान इन प्रवृतियों का दुरुप्रयोग करता है तो यह विकार का रूप धारण कर लेते हैं, जो इन्सान के विनाश का कारण बनते हैं। इसीलिए इन्सान को चाहिए कि वह इनका सदुपयोग करे। इन्सान जितना इन प्रवृतियों का सदुपयोग करता है वह जीवन में उतना ही महान बनता है तथा ईश्वर की कृपा का पात्र बनता है।

प्रश्न 19 : इन्सान गलती का पुतला है कैसे है ?

उत्तर : कहते हैं कि इन्सान गलती का पुतला है। प्रायः यह भी कहते सुना होगा कि इन्सान से गलती होना स्वभाविक है। ऐसा क्यों कहा जाता है जबकि इन्सान, ईश्वर द्वारा रचित सब प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ रचना है ? इन्सान को ही ईश्वर ने बुद्धितत्व् दिया है जिससे वह अच्छे बुरे की पहचान कर सके। विचारों को प्रकट करने लिए भाषा दी है, सभी प्राणियो का सरताज बनाया है, उसके बावजूद कहा जाता है कि इन्सान गलती का पुतला है। क्यों ? इसके कुछ कारण हैं जो निम्नलिखित हैं :

(1) पूर्वजन्म के संस्कारों के कारण।
(2) कर्मफल के कारण।
(3) विकारों के प्रभाव के कारण।
(4) वर्तमान जीवन में वातावरण एवं परिस्थितियों कारण।
(5) संगती के प्रभाव के कारण।

(6) अज्ञानता के प्रभाव कारण।

पूर्व जन्म के संस्कारों के आधार पर ही ईश्वर नया जीवन निर्धारित करते हैं कि उसे किस घर मे भेजना है, उसके माता– पिता, भाई–बहन, पति या पत्नी, संतान, परिस्थितियाँ तथा वातावरण कैसे होंगे। वह शारीरिक रूप से कैसा होगा। उसकी बुद्धि कैसी होगी आदि। इसके अतिरिक्त उसे जीवन में कर्मों के फल का भी भुगतान करना होता है। कर्मों का भुगतान करने के लिए उसे सुख व दुख के वातावरण में से गुजरना पड़ता है । इसके साथ–साथ उसके जीवन पर विकारों का भी प्रभाव पड़ता है। विकारों के अधीन वातावरण में फंसकर प्राय: इन्सान गलती करता है। परिस्थितियों एवं वातावरण के साथ-साथ उस पर वर्तमान जीवन में संगती का प्रभाव भी पड़ता है। यदि उसे संगती अच्छी नहीं मिलती तब भी वह कुसंगति के प्रभाव में गलतियाँ  करता है। कभी-कभी इन्सान अज्ञानतावश भी गलतियाँ करता है क्योंकि उसे इस सम्बन्ध में ज्ञान नहीं होता। इन्सान के पास क्या माप–दंड हैं जिससे वह जान सके कि उसने कहाँ गलती की है। उस माप-दंड के निम्न आधार हैं:-

(1) व्यवहार का नियम - व्यवहार का नियम है कि "दूसरों से वैसा व्यवहार करो जैसा आप दूसरों से अपने लिए चाहते हो। जो अपने लिए नहीं चाहते वो दूसरों से ना करो"। इन्सान एक सामाजिक प्राणी है। जन्म  से लेकर मृत्यु तक वह भिन्न–भिन्न लोगों से मिलता है। वास्तव में यह मेल-जोल रिश्तों पर आधारित होता है। इन्सान ऐसे हर प्रकार के मेल-जोल को बनाए रखने के लिए अलग-अलग नियमों या सिद्धान्तों का सहारा लेता है। इन्सान सुबह से लेकर रात तक व्यवहार ही करता है। अगर इन्सान अपने आप को दूसरों के स्थान पर रख कर सोचे तो उसे अहसास होगा कि उसने  यह नियम कहाँ तोड़ा है। जहाँ तोड़ा है समझो वहीं गलती की है।

(2) प्रशंसा एवं निंदा- इन्सान की एक बहुत बड़ी कमज़ोरी है कि वह अपनी प्रशंसा को सुनकर बहुत प्रसन्न होता है और जब उसकी निंदा होती है तो वह क्रोधित होता है। यदि इन्सान इन दोनों परिस्थितियों में संयम  से रहता है तो वह कोई गलती नहीं कर रहा होता और वह महान कहलाता है। ठीक इसके विपरीत जब इन्सान इन दोनों अवस्थाओं में संयम में नहीं रहता अर्थात उसमें परिवर्तन आ जाता है तो वह गलती कर रहा होता  है। इन्सान इस नियम को आधार बनाकर निर्णय ले सकता है कि उसने कहाँ-कहाँ पर गलती की है।

(3) अहंकार एवं क्रोधवश लिए गए निर्णय -जब इन्सान को दूसरों की अपेक्षा समाज में अधिक सुख-सुविधाएँ, धन-दौलत, यश-मान तथा सामाजिक रुतबा मिलता है तो उसमें अहं भाव आ जाता है। प्राय: इन्सान अहंकार में आकर गलती करता है क्योंकि अहंकार वश वह इन्सानियत को भूल जाता है। इसी तरह विपरीत परिस्थितियों में इन्सान क्रोध करने लगता है और क्रोध की अवस्था में केवल बदले की भावना होती है और जब इन्सान बदले की भावना के अधीन निर्णय करता है तो वह प्राय: गलत ही होता है।

उपरोक्त बताए गए माप-दंड के आधार पर इन्सान चिंतन कर सकता है कि उसने सुबह से रात तक कहाँ–कहाँ पर गलती की है। उन गलतियों के पश्चताप के लिए ईश्वर से सच्चे मन से प्रार्थना करे कि ईश्वर उस पर कृपा करे

ताकि जीवन में ऐसी गलतियाँ न हों। जब इन्सान विनम्र भाव से प्रार्थना करता है तो ईश्वर उसे क्षमा करते हुए अपनी कृपा का पात्र बनाते हैं जिससे इन्सान का जीवन सार्थक बनता है।

प्रश्न 20: स्वाभिमान एवं अभिमान में क्या अन्तर है?

उत्तर : प्राय: यह कहते सुना होगा कि वह इन्सान अभिमानी है अर्थात उसमें अहं है और यह कहते भी सुना होगा कि वह व्यक्ति स्वाभिमानी है। हालांकि ये दोनों ही अहंकार के रूप है लेकिन अभिमान और स्वाभिमान दोनों एक दूसरे के विपरीत हैं। इनका अन्तर निम्न प्रकार से है :-

स्वाभिमान : इन्सानियत के नियमों की मर्यादा का पालन करते हुए अपने गौरव को बनाए रखना ही स्वाभिमान कहलाता है।

अभिमान : इन्सानियत के नियमों की मर्यादा का उल्लंघन करते हुए अपने गौरव को बनाना अभिमान कहलाता है।

अब हमें यह जान लेना चाहिए कि इन्सानियत क्या है। वैसे तो इन्सान का व्यक्तित्व उसका आचरण, उसके इन्सानी तथा नैतिक मूल्य ही वास्तविक मूल्यांकन करते हैं। इन्सानियत शब्द का अर्थ है, व्यक्ति की सोच, विचारधारा एवं दृष्टिकोण। इससे स्पष्ट होता है कि इन्सान की विचारधारा, सिद्धांत, व्यवहार एवं दृष्टिकोण मिल कर ही इन्सान के व्यक्तित्व को निर्धारित करते हैं। व्यवहार के अंतर्गत सभी मानवीय मूल्य तथा व्यक्ति के नैतिक गुण आते हैं। सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक आचरण से अभिप्राय यह है कि इन्सान सिद्धांत को मानने वाला हो तथा उस सिद्धांत को अपने जीवन में व्यवहारिक रूप से लागू करने वाला हो और सभ्य हो। इन्सान में चारित्रिक गुणों का भी होना अति आवश्यक है। इन्सान दृढ़ चरित्र का हो। चरित्र में इन गुणों का होना आवश्यक है जैसे सत्य बोलना तथा सत्य का साथ देना। निष्ठावान होना, बड़ों का सम्मान तथा छोटों से प्यार करना आदि। नैतिक मूल्यों का ह्रास इन्सान को पतन की ओर अग्रसर करता है। इन्सान के जीवन के नैतिक मूल्यों का आधार क्या होना चाहिए।

सर्वप्रथम ईश्वर के अस्तित्व को मानना या स्वीकार करना। दूसरा ईश्वर के बारे में ज्ञान प्राप्त करना। तीसरा है नेक कर्म करना और चौथा है इन्सानी कर्तव्यों का पालन करना। यदि इन्सान उपरोक्त गुणों को अपने जीवन में ईमानदारी से क्रियान्वित करता है तो उसका जीवन सुखमय और आनंदमय बनता है। परन्तु जब इन्सान अपनी सुन्दरता का, धन-वैभव का, बल का तथा अपने यौवन आदि का अहंकार करता है और अहं वश दूसरों का शोषण करता है, मजबूरी का अनुचित लाभ उठाता है। दूसरों की भावनाओं को कुचल कर उनसे खिलवाड़ करता है। दूसरों को तुच्छ मान कर उनका उपहास उड़ाता है अर्थात जो इन्सान अपने लिए नहीं चाहता वह दूसरों से करता है। ईश्वर को भुला कर स्वयं को ही सब कुछ मानने लगता है तब इन्सान इन्सानियत को खो देता है अर्थात नैतिकता से गिर जाता है। ऐसे आचरण को अभिमान कहा जाता है।

## अध्याय – 5

## अध्यात्मवाद और भौतिकवाद से सम्बन्धित प्रश्न

प्रश्न 1: अध्यात्मवाद क्या है ?

उत्तर : वह अदृश्य शक्तियाँ जो इन्सान को उसकी आँखों से दिखाई नहीं देती, न ही उनका भार होता है और न ही वह स्थान घेरती हैं लेकिन फिर भी उनका इन्सानी जीवन पर प्रभाव पड़ता है, उनके बारे में ज्ञान प्राप्त करना ही अध्यात्मवाद है। इन दैवी शक्तियों के सम्बन्ध में जानना कि आत्मा से परम-आत्मा, शक्ति से परम शक्ति तक कौन क्या है ? इनके गुण, नियम क्या हैं ? विशेषकर उस सर्वशक्तिमान के बारे में जानना, जो इस सम्पूर्ण सृष्टि का रचियता है, अध्यात्मवाद कहलाता है।

प्रश्न 2 : अध्यात्मवादी कौन है ?

उत्तर : वह इन्सान जो दैवी शक्तियों के बारे में ज्ञान प्राप्त करता है जिन का इन्सानी जीवन पर प्रभाव पड़ता हैं परन्तु दिखाई नहीं देती, अध्यात्मवादी कहलाता है। वास्तविक अध्यात्मवादी वह कहलाता है जो इस सृष्टि के रचियता के बारे में जानने की कोशिश करता है। उसके अस्तित्व को स्वीकार करता है। इसके साथ-साथ वह संकीर्ण दिल का न होकर विशाल हृदय का होता है। वह सभी धर्मों व महान–आत्माओं का समान दृष्ट से आदर-सत्कार करता है।

प्रश्न 3 : भौतिकवाद क्या है ?

उत्तर : इस सृष्टि में जो कुछ भी इन्सान को उसकी आँखों से दिखाई देता है, जो स्थान घेरता है, जिसका भार है, जो इन्सान की ज्ञान इन्द्रियों को प्रभावित करता है, वह सब भौतिक है। इन सब का भी इन्सानी जीवन पर प्रभाव पड़ता है। इनके बारे में जानना भौतिकवाद कहलाता है।

प्रश्न 4 : भौतिकवादी कौन है ?

उत्तर : इस सृष्टि में इन्सान को जो आँखों से दिखाई देता है, जो स्थान घेरता है, जिसका भार होता है, वह सब भैतिक है। इन भैतिक वस्तुओं के सम्बन्ध में जो ज्ञान प्राप्त करता है, उन की खोज करता है कि वे इन्सानी जीवन को कैसे प्रभावित करते हैं, वह इन्सान भौतिकवादी कहलाता है। भौतिकवादी अधिकतर भौतिक पदार्थों की ओर ही आकर्षित होता है।

प्रश्न 1: अध्यात्मवाद क्या है ?

प्रश्न 2 : अध्यात्मवादी कौन है ?

प्रश्न 3 : भौतिकवाद क्या है ?

प्रश्न 4 : भौतिकवादी कौन है ?

प्रश्न 5 : अध्यात्मवादी और धार्मिक व्यक्ति में क्या अन्तर है ?

उत्तर : प्राय: समाज में अध्यात्मवादी और धार्मिक व्यक्ति में भेद नहीं माना जाता। उनका मानना है जो व्यक्ति धार्मिक होता है वह अध्यात्मवादी भी होता है। परन्तु यदि इसका गहन अध्यन किया जाए तो इनमें बहुत अन्तर दिखाई पड़ेगा। जो व्यक्ति धार्मिक होता है वह एक विशेष वर्ग से जुड़ा होता है। उसकी आस्था उसी वर्ग से होती है। वह किसी और वर्ग की सुनता ही नहीं और जिस वर्ग से सम्बन्ध रखता है उसे ही उच्च मानता है। वह संकीर्ण दिल का होता है। उसकी सोच संकुचित होती है।

अध्यात्मवादी व्यक्ति को सच्चाई का ज्ञान होता है। भले ही उसकी आस्था एक ईश्वर में होती है परन्तु वह बाकी सभी धर्मों एवं महान-आत्माओं का आदर-सम्मान एक दृष्टि से करता है क्योंकि उसे ज्ञान होता है कि इस सृष्टि को चलाने वाली एक शक्ति है जो न नर है न नारी है, वही कर्मफलदाता है वह ही सभी रूपों में कर्ता है। इसलिए अध्यात्मवादी व्यक्ति संकीर्ण ह्दय का न होकर विशाल ह्दय का होता है तथा सभी धर्मों का एक समान आदर सत्कार करता है। एक अध्यात्मवादी धार्मिक व्यक्ति तो हो सकता है परन्तु एक धार्मिक व्यक्ति का अध्यात्मवादी बनना यदि असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है।

प्रश्न 6 : अध्यात्मवाद के शिक्षण केन्द्र और प्रशिक्षण केन्द्र में क्या अन्तर है ?

उत्तर : संसार में जिन आध्यात्मिक केन्द्रों पर मौखिक रूप में ज्ञान दिया जाता है उन्हें अध्यात्मवाद के शिक्षण केन्द्र कहा जाता है, परन्तु जिस केन्द्र में ज्ञान क्रियात्मक रूप में दिया जाता है उसे प्रशिक्षण केन्द्र कहा जाता है। शिक्षण केन्द्रों की स्थापना परम शक्ति महापुरुषों, साधु-संतों, एवं गुरुओं से करवाती है और वहां पर उनके माध्यम से ही

मौखिक ज्ञान देती है जबकि प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना परम शक्ति स्वयं करती है जब वह इन्सानी रूप में स्वयं धरा पर आती है। वहां पर परम शक्ति अपने ही श्री मुख से अपने ही बारे क्रियात्मक रूप में ज्ञान देती है।

संसार में अध्यात्मवाद की शिक्षा का प्रशिक्षण केन्द्र कोई भी गुरु, ऋषि मुनि, साधु-सन्त, महान-आत्मा, देवी-देवता, वीर-पीर कोई भी स्थापित नहीं कर सकता, क्योंकि कोई भी अपने से उच्च शक्तिओं का क्रियात्मक रूप से ज्ञान नहीं करवा सकता। अध्यात्मवाद का प्रशिक्षण केन्द्र तो केवल वही स्थापित कर सकता है जो सभी शक्तियों के सम्बन्ध में पूर्ण ज्ञान रखता हो तथा उनके नियम, शक्तियाँ और गुण क्रियात्मक रूप में दर्शा सकता हो। वह केवल स्वयं परम शक्ति ही है जो सभी शक्तियों की स्रोत है। जब वह स्वयं अदृश्य से सदृश्य बन कर धरा पर इन्सानी रूप में आती है तो वह आध्यात्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित करती है और आने वाले श्रद्धालुओं को अदृश्य शक्तियों के बारे में क्रियात्मक रूप में ज्ञान देती है।

प्रश्न 7: अध्यात्मवाद तथा भौतिकवाद में परस्पर क्या सम्बन्ध है ?

उत्तर : अध्यात्मवाद का सम्बन्ध उन शक्तियों से है जो न तो इन आँखों से इन्सान को दिखाई देती हैं न उनका भार होता है और न ही स्थान घेरती हैं परन्तु फिर भी वह इन्सानी जीवन को प्रभावित करती हैं।

भौतिकवाद का सम्बन्ध सृष्टि में बनी उन सभी रचनाओं से है जो इन्सान को उसकी आँखों से दिखाई देती हैं, जिनका भार होता है, जो स्थान घेरती हैं और वे भी इन्सानी जीवन को प्रभावित करती हैं।

जैसा कि आप सब जानते हैं कि प्रकृति ने हर चीज़ का जोड़ा बनाया है जैसे दिन-रात, सुख-दुख, जीवन-मृत्यु, यश-अपयश, सफलता-असफलता, साकार-निराकार, सर्वगुण-निर्गुण इसी तरह अध्यात्मवाद और भौतिकवाद का भी जोड़ा है। एक के बिना दूसरे का महत्व नहीं।

इन्सान का शरीर भौतिक है, उसका भार है, वह स्थान घेरता है और आँखों से भी दिखाई देता है जब कि उस शरीर के अन्दर जो जीव-आत्मा है, वह न दिखाई देती है न ही उसका भार है, न ही वह स्थान घेरती है परन्तु शरीर का प्रयोग करती है। जिस तरह शरीर को स्वस्थ रखने के लिए स्वास्थ्य के नियमों पर चलने की तथा अच्छी खुराक लेने की आवश्यकता होती है उसी तरह जीव-आत्मा को सशक्त बनाने के लिए ईश्वर प्रेम की आवश्यकता होती है। जिस तरह जीव-आत्मा का अस्तित्व शरीर के अन्दर होते हुए भी वह दिखाई नहीं देता उसी तरह जो सृष्टि का मालिक है, जिसने जीव-निर्जीव बनाकर उन्हें नियमों में बांध दिया, जो कर्मफलदाता है, वह जग के कण-कण में विद्यमान होते हुए भी दिखाई नहीं देता। उसका सम्बन्ध भी अध्यात्मवाद से है। वह भी इन आँखों से दिखाई नहीं देता तथा शक्ति रूप में न स्थान घेरता है न ही उसका भार होता है लेकिन उसका अस्तित्व इन्सानी जीवन को प्रभावित करता है। उसका भी महत्व तभी है यदि यह भौतिक प्राणी हैं। यदि यह भौतिक संसार न हो तो ईश्वर का भी महत्व नहीं और यदि ईश्वर न हो तो भौतिकवाद हो ही नहीं सकता। इसलिए अध्यात्मवाद तथा भौतिकवाद का परस्पर गहरा सम्बन्ध है।

प्रश्न 8: अध्यात्मवाद को समझने में इन्सान असमर्थ क्यों है ?

उत्तर : वैसे इन्सान उसमें ही विश्वास करता है जो उसे इन आँखों से दिखाई देता है और उसी के अस्तित्व को स्वीकार करता है। प्रश्न है कि क्या इन्सान को जो कुछ इस सृष्टि में दिखाई देता है उसे पूर्ण रूप से समझ पाने में समर्थ

है ? उत्तर है, नहीं। जब जो इन्सान को दिखाई देता है उसे समझ पाने में असमर्थ है तो फिर अध्यात्मवाद का सम्बन्ध तो उन शक्तियों से है जिनका अस्तित्व तो है और वह इन्सानी जीवन को प्रभावित करती हैं परन्तु इन्सान के लिए अदृश्य हैं। जो हैं ही अदृश्य उसे इन्सान कैसे समझ सकता है। समाज में भी बहुत से भ्रम हैं। कोई कहता है कि ईश्वर है, कोई कहता है कि वह नहीं है। जो कहते हैं कि ईश्वर है उन में भी बहुत मतभेद हैं। कोई कहता है कि वह साकार है तो कोई कहता है वह निराकार है और कोई कहता है कि वह निराकार होते हुए भी साकार है और साकार होते हुए भी निराकार है। जो ईश्वर को साकार रूप में मानते हैं उनमें भी मतभेद हैं। कोई उसे ब्रह्म, कोई शिव, कोई राम तो कोई कृष्ण अथवा कोई यीशु भी मानता है। जो जिस रूप को मानता है वह दूसरे रूपों का खण्डन करता है। जो निराकार रूप में मानते हैं उनमें भी मतभेद हैं। कोई उसे बिन्दु, कोई चिराग, कोई शिवलिंग, कोई ओम, कोई एक ओंकार के रूप में मानता है। जो जिस रूप में मानता है उसे ही सर्वोच्च मानता है।

संसार में देवी-देवताओं, वीरों-पीरों, भगवानों के अनेक धार्मिक स्थान हैं। तांत्रिकों के अनेक स्थान हैं। इस संसार में हर इन्सान किसी न किसी समस्या में फंसा रहता है, क्योंकि इन्सान स्वार्थी है इसलिए वह अपने स्वार्थों की पूर्ति हेतु एवं अपनी समस्याओं के निवारण हेतु विभिन्न स्थानों पर जाता है। जहाँ उसका स्वार्थ पूरा होता है, वहीं उसकी आस्था बन जाती है। किसी की मनोकामना देवी-देवताओं के स्थानों पर पूर्ण होती है तो किसी की मनोकामना वीरों-पीरों के स्थान पर जा कर पूर्ण होती है। कुछ ऐसे लोग भी होते हैं जिनकी समस्या का समाधान तांत्रिकों के पास जाकर होता है। इस तरह जिसकी मनोकामना जहाँ पूर्ण होती है उसकी आस्था-विश्वास वहीँ बन जाता है।

वैसे कोई भी इन्सान अपने आप में कुछ नहीं होता। परम शक्ति ही कर्मफल-दाता है। वह इन्सानों को उनके द्वारा की गई भक्ति, श्रद्धा, प्यार, विश्वास लगन सद्कर्म का फल देकर उन्हें साधारण से महान बनाती है। परम शक्ति इन्सान को भक्ति और प्यार के आधार पर उसके माध्यम से प्रदर्शन करती है। इसलिए कई बार उस व्यक्ति के द्वारा कही हुई बात सत्य हो जाती है और ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे उसके पास कोई दैवी शक्ति है।

ईश्वर अपना अस्तित्व केवल अपनी इच्छा से ही दर्शाता है। कितने ही लोग ईश्वर की खोज में निकले परन्तु उनमें से अधिकतर को निराशा ही हाथ लगी। इसलिए कोई भी इन्सान ईश्वर के अस्तित्व को अपनी इच्छा से प्रमाणित नहीं कर सका। ईश्वर अपना अस्तित्व प्राकृतिक ढंगों से नहीं दर्शाता। ईश्वर जिसको अनुभव दे दे उसके लिए ईश्वर है और जिसे अनुभव नहीं मिलता उनके हज़ारों ही प्रश्न हैं, हज़ारों ही तर्क हैं। उनके लिए ईश्वर नहीं है। उनका तर्क है कि प्रकृति में सब कुछ अपने आप ही हो रहा है।

ईश्वर कर्मफल दाता है। कर्मफल के आधार पर ही इन्सान को ईश्वर का अनुभव मिलता है। जिसको अनुभव नहीं मिलता उसका विश्वास ईश्वर से उठ जाता है और वह नास्तिकता की ओर बढ़ जाता है।

उपरोक्त विवरण प्रमाणित करता है कि ईश्वर अपनी सर्वोच्चता सदा बनाए रखता है। ईश्वर अनादि, अनन्त, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान है, उसके अतिरिक्त सब कुछ उसकी रचना है। रचना कभी भी सर्वोच्च नहीं हो सकती इसलिए उसे किसी न किसी के आगे झुकना ही पड़ता है। जो रचयिता है वह किसी के आगे नहीं झुकता। उसकी रचना को ही उसके आगे झुकना पड़ता है। इसलिए ही महान-आत्माओं को कहना पड़ा कि 'हे ईश्वर ! तू बेअन्त, तेरी माया बेअन्त।' इसलिए ही इन्सान अध्यात्मवाद को समझ पाने में असमर्थ रहा है।

# अध्याय – 6

श्री मदन धाम संबंधी प्रशन

प्रश्न 1: धाम किसे कहते हैं ?

उत्तर : धाम शब्द का अर्थ है निवास स्थान। जब परम शक्ति अपना अस्तित्व सिद्ध करने के लिए किसी इन्सान का शरीर धारण करती है, मान्यता देती है या फिर स्वयं इन्सानी रूप में धरती पर आती है; उस समय जहाँ परम शक्ति स्वयं इन्सानी रूप में परिवार सहित निवास करती है या परम शक्ति जिन्हें अपने रूप में मान्यता प्रदान करती है या फिर जिनका शरीर धारण करके अपने गुणों, नियमों और शक्तियों का किसी सीमा तक प्रदर्शन करती है; जहाँ वे शरीरधारी परिवार सहित निवास करते हैं उस स्थान को धाम कहा जाता है। समय आने पर ऐसे स्थान तीर्थ स्थान बन जाते हैं।

प्रश्न 2 : इस दरबार का नाम "श्री मदन धाम" क्यों है और कैसे है ?

उत्तर : आरम्भ में इस दरबार का नाम "श्री मदन धाम" नहीं था। इस दरबार की कार्यप्रणाली जुलाई मास वर्ष 1985 में वीरों-पीरों, देवी-देवताओं के रूप में आरम्भ हुई। उस समय यहाँ आने वाले व्यक्तियों के दुखों का निवारण किया जाता था। इसलिए उस समय इस दरबार का नाम "दुख निवारण भवन" रखा गया था। वर्ष 1987 में इस दरबार में "भगवान शिव" और "आदि शक्ति" के रूप की भूमिका आरम्भ हुई जो दिसम्बर 1994 तक रही, इस दौरान इस दरबार का नाम "आदि शक्ति मंदिर" रखा गया। उसके पश्चात जनवरी 1995 में परम शक्ति रूप में भूमिका आरम्भ हुई। जब अनादि, अनन्त परम शक्ति ने यह घोषणा की कि "मैं अदृश्य से सदृश्य बनी हूँ। यह शरीर मेरा है, मेरा नाम 'मदन' है।" तब इस दरबार का नाम "श्री मदन धाम" रखा गया क्योंकि "परम शक्ति" ने अपना नाम 'मदन' रख लिया था।

"धाम" शब्द का अर्थ है घर या निवास स्थान, इसलिए "श्री मदन धाम" का अर्थ है वह स्थान जहाँ "श्री मदन जी" परिवार सहित निवास करते हैं। अब यह जानना आवश्यक है कि "श्री मदन जी" कौन हैं ? इस सम्बन्ध में इतना ही कहना है कि वह शक्ति जो अनादि, अनन्त और सर्वोच्च है, सृष्टि की रचयिता और पालनकर्ता है, जिसके हाथ में इन्सान का जीवन-मृत्यु, लाभ-हानि, यश-अपयश, सफ़लता-असफलता, सुख-दुख, खुशी-ग़मी, शान्ति-अशांति है, जो सत्य, न्याय और प्यार की प्रतीक है, जो कर्मफल दाता है, जिसके पास इन्सान शरीर त्याग कर जाता है, जिसकी अराधना ऋषि-मुनि, सन्त-फकीर, देवी-देवता, वीर-पीर और भगवान करते आए हैं, जिसे लोग ईश्वर, अल्लाह, गॉड, राधा-स्वामी, निरंकार, शिव, ब्रह्म आदि नामों से पुकारते हैं, जो लोग उसको किसी रूप में नहीं मानते अपितु उसे कुदरत, प्रकृति, नेचर, अदृश्य शक्ति, अनाम शक्ति आदि नामों से पुकारते हैं, उसी शक्ति ने इस दरबार की स्थापना प्रमाणों सहित स्वयं की है। उस शक्ति की घोषणा है कि "मैं इन्सान बनी हूँ, यह शरीर मेरा है, मेरा नाम मदन है।" अब श्री मदन जी परिवार सहित यहाँ निवास करते हैं। इस लिए इस दरबार का नाम श्री मदन धाम है।

उपरोक्त वर्णन से यह स्पष्ट होता है कि यह धाम किसी साधारण इन्सान का नहीं है और न ही किसी देवी-देवता, वीर-पीर या भगवान का है। यह धाम सर्वोच्च शक्ति का है जो इन्सानी रूप में परिवार सहित यहाँ निवास करती है, जिसका मौजूदा नाम श्री मदन है। इसलिए इस स्थान का नाम श्री मदन धाम है।

प्रश्न 3: श्री मदन धाम क्या है ?

उत्तर : श्री मदन धाम परम शक्ति द्वारा स्थापित किया गया आध्यात्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण केन्द्र है। यहाँ पर ईश्वर साकार रूप में परिवार सहित निवास करते हैं। यहाँ पर ईश्वर और ईश्वरीय शक्तियों, अर्थात आत्मा, महान-आत्मा, परम-आत्मा और परम शक्ति के बारे में 'परम शक्ति' स्वयं क्रियात्मक रूप में ज्ञान दे रही है जो इन्सान को दिखाई तो नहीं देतीं परन्तु उनका इन्सान को अनुभव होता है और उनके जीवन पर प्रभाव भी पड़ता है। यहाँ पर उन सभी रहस्यों, द्वन्द्वों पर से पर्दा उठाया जा रहा है जो इन्सान के मन में अध्यात्मवाद के सम्बन्ध में बने हुए हैं।

प्रश्न 4 : श्री मदन धाम की स्थापना किसने की है ?

उत्तर : श्री मदन धाम की स्थापना परम शक्ति ने धरा पर साकार रूप में आकर स्वयं की है। वैसे तो इन्सान ने जो भी सीखा है परम शक्ति से ही सीखा है। हर प्रयास के पीछे परम शक्ति की प्रेरणा होती है और हर सफ़लता के पीछे परम शक्ति की कृपा होती है मगर वह दिखाई नहीं देती। यहां पर वही अदृश्य शक्ति जो कि सृष्टि की हर्ता, कर्ता और धर्ता है; अनादि, अनन्त व सर्वोच्च है; जो न नर है न नारी है, घोषणा कर रही है कि वह एक इन्सान बनी है और जिस शरीर में वह बात कर रही है वही उसका शरीर है, अर्थात श्री मदन जी के शरीर में परम शक्ति बात करती है। परम शक्ति के आदेश से श्री मदन धाम की स्थापना हुई है। इस धाम की कार्य-प्रणाली न तो यहाँ की प्रबन्धक कमेटी चला रही है, न ही किसी व्यक्ति विशेष की इच्छा से कुछ होता है। केवल परम शक्ति के आदेश से ही हर कार्य होता है और परम शक्ति का आदेश ही सर्वमान्य होता है। इस लिए यहाँ परम शक्ति पर्दे के पीछे न हो कर स्वयं प्रत्यक्ष रूप में कार्य कर रही है। उसी ने इस धाम की स्थापना स्वयं की है।

प्रश्न 5: श्री मदन धाम की स्थापना के उद्देश्य क्या हैं ?

उत्तर : श्री मदन धाम आध्यात्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण केन्द्र है। यहाँ पर आध्यात्मिक शिक्षा क्रियात्मक रूप में दी जाती है। परम शक्ति ने स्वयं ही इस धाम की स्थापना की है और इस धाम की स्थापना के उद्देश्य निम्नलिखित हैं :-

1. श्री मदन धाम की स्थापना का उद्देश्य परम शक्ति या ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करना है।

2. परम शक्ति की घोषणा है कि "वैसे तो मैं न नर हूँ न नारी हूँ, मैं तो एक शक्ति हूँ। मैं अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए इन्सान बनी हूँ, यह शरीर मेरा है, मेरा मौजूदा नाम 'मदन' है।" इस तथ्य को सत्य सिद्ध करना।

3. परम शक्ति द्वारा अपने गुणों, नियमों और शक्तियों के बारे में क्रियात्मक रूप में ज्ञान देना।

4. अध्यात्मवाद के विषय में जो द्वंद्व हैं, उन पर से क्रियात्मक रूप में पर्दा उठाना और सत्य का ज्ञान देना।

5. समाज में फैली कुरीतियों, भ्रमों और आडम्बरों पर से पर्दा उठाना।

6. विश्वबन्धुत्व की स्थापना करना।

7. हर रूप में कर्ता परम शक्ति ही है। वही सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान है। वह इन्सानों में से ही देवी-देवतों, वीरों-पीरों और भगवानों का चुनाव अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए करती है और वह गिनती में एक है, इस तथ्य को क्रियात्मक रूप में सत्य सिद्ध करना।

प्रश्न 6 : श्री मदन धाम के मुख्य नियम व शिक्षाएँ क्या हैं ?

उत्तर : श्री मदन धाम के मुख्य नियम व शिक्षाएँ निम्नलिखित हैं :-

1. दूसरों से ऐसा व्यवहार करो जैसा आप दूसरों से अपने लिए चाहते हो।

2. नेक कर्म, सद्व्यवहार और सभी से प्यार करो।

3. किसी को भी अपना दुश्मन न समझो। जो आपको अपना दुश्मन भी समझता है उससे भी प्यार करो।

4. हर इन्सान को जाति, वर्ग, धर्म, लिंग आदि के भेदभाव से ऊपर उठा कर एक सच्चा अध्यात्मवादी बनाना, जो संकीर्ण दिल न होकर सभी धर्मों और महान-आत्माओं का समान दृष्टि से आदर-सत्कार करे।

5. हर इन्सान में इन्सानियत के गुण पैदा करना।

8. ईश्वर एक है और केवल वही सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान है। पूजा के योग्य भी वही है। इन्सान को उसी पर भरोसा रखना चाहिए। वही सबका सच्चा गुरु है। इस तथ्य से अवगत करवाना।

6. मानव को मानव समझना , जो वास्तव में सच्चा धर्म है।

7. किसी से भी ईर्ष्या, द्वेष, नफ़रत, वैर-विरोध, बदले की भावना न रखना, क्योंकि इस से मन अशांत रहता है जो ईश्वर प्राप्ति में बाधा बनता है।

8. सदा न्याय का साथ देना और अन्याय के विरुद्ध डट जाना, क्योंकि अन्याय करना और सहना दोनों ही पाप हैं।

9. होनी को सहज भाव से स्वीकार करना, अर्थात ईश्वर की रज़ा में राज़ी रहने का प्रयास करना।

10. दूसरों की वस्तु पर अपना हक न जतलाना ।

11. किसी की चुगली, निंदा, बुराई या नुक्ताचीनी न करना । किसी में दोष निकालने से पहले सोचना कि कहीं यह दोष मुझमें तो नहीं है।

12. जीवन में सच्चाई और ईमानदारी से सख्त मेहनत करके उन्नति करने का प्रयास करना।

13. ईश्वर-कृपा बिना किसी भी काम में सफ़लता मिलना असम्भव है। इस लिए किसी भी कार्य को करने से पूर्व ईश्वर के समक्ष प्रार्थना करनी और कार्य हो जाने पर शुक्रगुज़ार होना।

14. सभी धर्मों और महान-आत्माओं का आदर सत्कार करना क्योंकि वे सभी सच्चाई की ओर ही ले जाते हैं।

15. क्रोध मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है। इसे अपने अन्दर न पनपने देना, क्योंकि क्रोध में लिया गया निर्णय कभी भी ठीक नहीं होता।

16. ईश्वर से कभी नाराज़ न होना, क्योंकि ईश्वर सदैव ठीक होते हैं। सुख-दुख इन्सान के अपने ही कर्मों का फल होता है।

17. इन्सान का सुख में ईश्वर का शुक्रगुज़ार होना और दुख में प्रार्थना करना , क्योंकि ईश्वर न्यायकारी होते हुए भी परम दयालु होते हैं।

प्रश्न 7: आप श्री मदन धाम में क्यों आते हो और आप श्री मदन धाम से क्या प्राप्त कर सकते हो ?

उत्तर : जब भी व्यक्ति किसी धार्मिक स्थान पर जाते हैं तो उनके उद्देश्य अलग-अलग होते हैं, जैसे मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए, ज्ञान की प्राप्ति के लिए, कष्ट-परेशानियों से राहत पाने के लिए, पैतृक संस्कारों के कारण, अगले जन्म के सुधार के लिए, डर के कारण कि यदि वहां न गए तो कोई आपदा अथवा कष्ट न हो जाए इत्यादि। हर इन्सान का उद्देश्य अलग होता है। जिसे जहाँ विश्वास होता है कि वहाँ उसका उद्देश्य पूर्ण हो सकता है, वह वहीं जाता है। संक्षिप्त रूप में व्यक्ति शारीरिक सुख, मानसिक शान्ति और खुशहाली पाने के लिए धार्मिक स्थानों पर जाता है। श्री मदन धाम आध्यात्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण केन्द्र है। यहाँ पर परम शक्ति स्वयं श्री मदन जी के शरीर में बात करती है। यहाँ अध्यात्मवाद का ज्ञान क्रियात्मक रूप में दिया जाता है और साथ-साथ व्यक्तियों की संसारिक मनोकामनाएँ भी पूर्ण की जाती हैं। इसलिए व्यक्ति श्री मदन जी के मुख से ज्ञान प्राप्ति, उनके दर्शन करने, अपने कष्टों,

परेशानियों, समस्याओं से राहत पाने के लिए और उनका मार्गदर्शन व आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए आते है, जिससे उनका यह जीवन और भावी जीवन सुखमय और सार्थक हो सके।

अब प्रश्न है कि आप श्री मदन धाम से क्या प्राप्त कर सकते हैं। परम शक्ति ने स्वयं श्री मदन धाम की स्थापना की है और वह स्वयं ही यहाँ कार्यशील है। यहाँ जो भी ज्ञान दिया जाता है वह तर्क के साथ दिया जाता है। जब तक किसी बात के लिए प्रमाण नहीं मिलता, तब तक उस पर बात पर विश्वाश नहीं किया जा सकता। इस लिए जो भी ज्ञान यहाँ पर दिया गया है, प्रमाणों सहित दिया गया है अर्थात यहाँ पर इन्सान को अंधविश्वासी नहीं अपितु ज्ञानी बनाया जाता है, जिससे वह स्वयं निर्णय ले सके कि उसके लिए क्या ठीक है क्या ग़लत है। इसके साथ-साथ आने वाले व्यक्तिओं की मनोकामनाएँ भी पूर्ण की जाती हैं। यदि कोई व्यक्ति श्री मदन धाम में दिए गए ज्ञान को अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करता है और अपनी श्रद्धा, विश्वास, लगन और प्यार से परम शक्ति की कृपा प्राप्त करता है, तो वह व्यक्ति श्री मदन धाम से निम्नलिखित प्राप्ति कर सकता है :-

1. शंका रहित ज्ञान ।
2. परम शक्ति की शरण और मार्गदर्शन।
3. ईश्वर प्राप्ति।
4. शारीरिक तन्दुरुस्ती, मानसिक शान्ति और खुशहाली।
5. नेक इन्सान बनने का प्रशिक्षण।
6. व्यर्थ के वहमों, भ्रमों, आडम्बरों, कुरीतियों से रहित एक सरल और सार्थक जीवन शैली।
7. निम्न-स्तर के देवी-देवताओं और असुरी शक्तियों के बारे में सत्य का ज्ञान।
8. मोक्ष प्राप्ति।

प्रश्न 8: श्री मदन धाम और दूसरे धार्मिक स्थानों में क्या अन्तर है ?

उत्तर : संसार में जितने भी धार्मिक स्थान हैं उनकी स्थापना के पीछे प्रेरणा स्रोत तो परम शक्ति ही होती है। परम शक्ति उन स्थानों पर आने वालों लोगों की मनोकामनाएँ पूर्ण करती है। श्री मदन धाम में भी वही ताकत जिसे ईश्वर, अल्लाह, गॉड, वाहेगुरु, राधा-स्वामी, निरंकार के नाम से जाना जाता है, स्वयं अपनी अनोखी लीला कर रही है। इसलिए श्री मदन धाम में और अन्य धार्मिक स्थानों में अन्तर होना स्वाभाविक है। पाठकों की सुविधा के लिए कुछ अन्तर नीचे दिए गए हैं :-

1. श्री मदन धाम में सृष्टि की हर्ता-कर्ता सर्वोच्च्व शक्ति स्वयं प्रत्यक्ष रूप में कार्य करती है। यहाँ हर कार्य परम शक्ति के आदेश से होता है जबकि दूसरे धार्मिक स्थानों पर परम शक्ति परोक्ष रूप में कार्य करती है। वहाँ के सभी कार्य वहाँ के मुखिया या कुछ लोग़ों की सर्व-सम्मति से होते है।

2. यहाँ पर परम शक्ति अपने श्री मुख से ज्ञान प्रदान करती है। यहाँ पर किसी धार्मिक ग्रन्थ का वाचन नहीं किया जाता, जबकि अन्य धार्मिक स्थानों पर शास्त्रों व धार्मिक ग्रंथों का वाचन करके ज्ञान दिया जाता है।

3. यहाँ पर परम शक्ति अध्यात्मवाद का ज्ञान क्रियात्मक रूप में देती है जबकि दूसरे धार्मिक स्थलों पर ज्ञान मौखिक रूप में दिया जाता है।

4. यहाँ पर गुरु और इष्ट स्वयं परम शक्ति है जबकि अन्य धार्मिक स्थानों पर गुरु और इष्ट अलग-अलग होते हैं।

5. यहाँ पर पूजा-पाठ, जप-तप पर बल न देकर ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करते हुए, नेक-कर्म, सद्व्यवहार और सभी से प्यार करने पर ही बल दिया जाता है। इस के विपरीत दूसरे स्थानों पर केवल पूजा-पाठ, जप-तप, हवन-यज्ञ, स्मरण आदि पर बल दिया जाता है।

6. यहाँ माथा टेकने के लिए न तो किसी मूर्ति की और न ही किसी निर्जीव चिह्न की स्थापना की गई है। यहाँ माथा केवल इन्सानी रूपों या उन के चित्रों के आगे टेका जाता है।

प्रश्न 9 : श्री मदन धाम में निर्जीव चिह्न या प्रचलित मान्यता प्राप्त स्वरूपों की स्थापना क्यों नहीं ?

उत्तर : प्रत्येक विचारधारा का व प्रत्येक धर्म का एक आधार होता है जिस के इर्द-गिर्द समस्त विचार घूमते हैं। उसी तरह श्री मदन धाम की कार्य-प्रणाली का आधार परम शक्ति की घोषणा है कि "मैं अनादि अनन्त सर्वोच्च शक्ति, जो कि न नर है न नारी है, इस समय इन्सान बनी हूँ, यह शरीर मेरा है, मेरा नाम मदन है।" इस घोषणा के अन्तर्गत ही सब कुछ हुआ है या हो रहा है। श्री मदन धाम की कार्य-प्रणाली 'करो और सीखो' के सिद्धांत पर आधारित है। यहाँ अंध-विश्वाश नहीं फैलाया जाता। हर बात को प्रमाणों सहित सिद्ध किया जाता है और एक-एक बात को सिद्ध करने के लिए कभी-कभी वर्षों लग जाते हैं। अध्यात्मवाद में ईश्वर को सजीव और निर्जीव दोनों रूपों में याद किया जाता है। कुछ लोग अपने धर्म के संस्थापक को ईश्वर का रूप मान कर याद करते है तो कुछ लोग संस्थापक को साधन मानते है और निर्जीव चिह्न को ईश्वर का प्रतीक मान कर याद करते हैं और कुछ लोग ईश्वर को निराकार मानते हैं और अपने धर्म के संस्थापक को उस निराकार शक्ति का माध्यम मानते हैं। श्री मदन धाम में परम शक्ति श्री मदन जी के शरीर में बात करती है। उसने हर बात को प्रमाणों सहित सिद्ध किया है। श्री मदन जी ही परम शक्ति का इन्सानी रूप हैं। इस बात पर आने के लिए अनेक ही कष्टों, परेशानियों में से गुज़रना पड़ा है। श्री मदन धाम में श्रद्धालुओं की सोच के अनुसार व सनातन धर्म पद्धति के अन्तर्गत शिवलिंग की स्थापना तीन बार की गई। परन्तु हर बार विपरीत प्रमाण मिले। हर बार असहनीय कष्ट सहन करना पड़ा और वह कष्ट तब तक रहा जब तक कि शिवलिंग को उठा नहीं दिया गया। इसी तरह श्री मदन धाम में पांच मंज़िला पूजा स्थल बनाया गया जहां पांचवीं मंजिल का स्थान निराकार शक्ति का बनाया गया। समाज में शक्ति को सर्वोच्च माना गया है। उस पांचवीं मंजिल पर एक-एक करके समाज में प्रचलित परम शक्ति के निर्जीव चिह्न स्थापित किए गए, परन्तु हर बार श्री मदन जी को नब्ज रुकने का असहनीय कष्ट सहन करना पड़ा। चार साल तक यह परीक्षण चलता रहा मगर राहत नहीं मिली, परन्तु जब श्री मदन जी को परम शक्ति के स्थान पर बैठा कर पचास दिन पूजन किया गया तब कोई कष्ट नहीं हुआ। अंततः वह स्थान परम शक्ति के आदेश से गिरा दिया गया और सिद्ध हुआ कि परम शक्ति जब यह कह रही है कि वह इन्सान बनी है और श्री मदन जी का शरीर उसका शरीर है तो निर्जीव चिह्न उसका स्वरूप कैसे हो सकता है। यदि निर्जीव चिह्न स्थापित हो जाता तो परम शक्ति की घोषणा का क्या अर्थ रह जाता ? इस लिए परम शक्ति ने श्री मदन धाम में अपना निर्जीव चिह्न स्थापित नहीं होने दिया। आज श्री मदन जी के स्वरूप के समक्ष प्रार्थना करने से लोगों की मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं। श्री मदन जी के रूप में श्रद्धालुओं को दर्शन होते हैं और उस समय जो उनसे कहा जाता

वह पूर्ण होता है। ये सब प्रमाणित करता है कि श्री मदन ही परम शक्ति हैं और परम शक्ति ही श्री मदन है। इस लिए श्री मदन धाम में कोई निर्जीव चिह्न स्थापित नहीं हो सका।

प्रश्न 10: श्री मदन धाम में आने वालों को पूज़ा-पाठ, जप-तप, हवन-यज्ञ आदि पर बल क्यों नहीं दिया जाता ?

उत्तर : श्री मदन धाम में परम शक्ति स्वयं जन समूह को सम्बोधित करती है। उसने अपने श्री मुख से ज्ञान दिया है कि हर इन्सान को कर्मफल भोगना पड़ता है और कर्मफल देने के नियम का आधार है कि "दूसरों से ऐसा व्यवहार करो जैसा आप अपने लिए दूसरों से चाहते हो। जो अपने लिए नहीं चाहते, वह दूसरों से न करो।" श्री मदन धाम में आने वाले श्रद्धालुओं के लिए आज पूजा–पाठ, जप-तप की जरूरत नहीं है, आज ज़रूरत है नेक कर्म, सद्व्यवहार और सभी से प्यार करने की। यदि हमारा कर्म ठीक नहीं, व्यवहार ठीक नहीं, हम निंदा, चुगली, द्वेष, नफ़रत आदि करने में ही संलिप्त रहते हैं, तो हमारा पूज़ा–पाठ, व्यर्थ है। पूज़ा–पाठ, जप-तप इन्सान ईश्वर की प्राप्ति और उसे प्रसन्न करने के लिए करता है। आज ईश्वर साकार है। वह कह रहा है, आज ज़रूरत है कि इन्सान ईश्वर के बारे में ज्ञान प्राप्त करे, उसके अस्तित्व को स्वीकार करे, उससे प्यार करे, उसका शुक्रगुज़ार रहे, क्योंकि ईश्वर ने इन्सान के लिए ही सब कुछ बनाया है। इन्सान का फर्ज़ है कि वह उसकी देन के लिए उसका धन्यवाद करे, यदि सुख है तो उसका शुक्रगुज़ार रहे, यदि दुख है तो इन्सान ईश्वर से नाराज न हो क्योंकि ईश्वर कर्मफल दाता है, वह किसी के साथ अन्याय नही करता। इस लिए वह दुख में विनम्र भाव से प्रार्थना करे और ईश्वर का डर हमेशा अपने मन में बनाए रखे। आज ज़रूरत है ईश्वर की कार्य-प्रणाली में भाग लेने की और साथ चलने की। यदि इन्सान के पास समय है और वह चिंतन-मनन करता है तो अच्छी बात है पर ज्यादा जरूरी है एक नेक इन्सान बनना और दूसरों को अपने जैसा समझना।

प्रश्न 11: श्री मदन धाम का विरोध क्यों है ?

उत्तर : जब भी कोई महान-आत्मा धरती पर आई तो उसका समाज के ठेकेदारों ने बहुत विरोध किया। यदि देखा जाए तो विरोध उन महान-आत्माओं का नहीं हुआ। विरोध उन के विचारों का हुआ जो विचार उन्होंने दिए। चाहे अध्यात्मवाद हो या भौतिकवाद, नए विचारों का सर्वदा विरोध ही हुआ है। आज जब परम शक्ति स्वयं इन्सानी रूप में है और इन्सान को आदर्श जीवन जीना सिखा रही है, उसके द्वारा दिया ज्ञान और शिक्षा, समाज के ठेकेदारों को कैसे स्वीकार हो सकती है ? इस लिए श्री मदन धाम के विरोध का कारण भी यहाँ दिया जाने वाला ज्ञान और शिक्षा है। यह ज्ञान नवीन और आधुनिक इन्सान की जीवन शैली के अनुकूल है। यह ज्ञान इन्सान के ऊपर व्यर्थ का बोझ नहीं बढ़ाता अपितु उसके जीवन को सरल और सार्थक बनाता है। इस ज्ञान और शिक्षाओं पर चल कर यहाँ आने वाला इन्सान सदियों पुरानी कुरीतिओं और आडम्बरों को त्याग कर सत्य मार्ग पर चलता है और अपना जीवन सफल बनाता है। इन क्रान्तिकारी नियमों और शिक्षाओं का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है जिनके कारण समाज में श्री मदन धाम का विरोध हो रहा है :

1. परम शक्ति ने दैवी शक्ति का अस्तित्त्व सिद्ध करने के लिए 17 जुलाई 1985 को कार्य प्रणाली कुल देवता के रूप में शुरू की। इसके उपरान्त 38 प्रकार के देवी-देवता, वीर-पीर आदि के रूप में भूमिका निभानी शुरू कर दी गई। जो भी व्यक्ति आता, उसके इष्ट के रूप में उससे बात की जाती जिससे उस व्यक्ति को विश्वास हो जाता था कि उसका आराध्यदेव उससे बात कर रहा है और उसके मन में जो भी प्रश्न होता, उसका उत्तर और समाधान दे दिया जाता था। इसके अतिरिक्त हर रूप की सुखना माणकपुर में स्वीकार करके राहत

प्रदान की जाती थी। इन सब का उद्देश्य आने वाले लोगों को यह विश्वास करवाना था कि कोई दैवी शक्ति होती है और वही यहाँ पर कार्य कर रही है। परन्तु इस कार्य-प्रणाली का बहुत विरोध हुआ। लोग कहने लगे कि श्री मदन जी ढोंग कर रहे हैं। क्या सभी देवी-देवता माणकपुर में ही आ गए हैं ? परन्तु सच्चाई तो कुछ और ही थी, जिसने समय आने पर स्पष्ट होना था।

2. जब दूसरा पड़ाव आया और महामाया ने श्री मदन धाम में प्रवेश किया तो महामाया ने स्पष्ट कर दिया कि कोई भी अपने आप में कुछ नही होता। महामाया ही हर रूप में कार्य करती है। वास्तव में किसी के पास कोई शक्ति नहीं होती, न ही कोई देवी-देवता किसी को खोट करता है (सज़ा देता है), और न ही किसी को राहत दे सकता है। महामाया ही उनके नाम रखने के लिए उनके श्रद्धालुओं की मनोकामनाएँ पूर्ण करती है और उनका निरादर करने पर कष्ट देती है। वास्तव में अध्यात्मवाद में जितने भी नाम हैं उनका महत्व महामाया ने ही रखा हुआ है जो कि उन के पूर्व जन्म की भक्ति का फल होता है। जितनी किसी की भक्ति है उतना ही उसका नाम है। इस के उपरान्त महामाया के आदेश से दरबार से सभी देवी-देवताओं के चित्र उठा दिए गए और उनका भोग लगना भी बंद हो गया। यह एक बहुत ही साहसिक परिवर्तन था। पहले तो किसी का अस्तित्व सिद्ध करना और फिर उसका अस्तित्व नकार देना। यह कार्य केवल वही कर सकता है जो सब का स्वामी हो, सब कुछ करने में समर्थ हो। परन्तु सच्चाई से अनजान लोगों ने विरोध करना शुरू कर दिया कि सभी देवी-देवता माणकपुर दरबार से चले गए हैं, अब वहाँ कुछ नहीं रहा। चित्र उठाना हमारे देवी-देवताओं का अपमान है, परन्तु ईश्वर का कार्य निर्विघ्न चलता गया।

3. परम शक्ति ने बाबा बालक नाथ की भूमिका में स्पष्ट किया कि महान वह होता है जो सद् गुणों का भण्डार हो, जो दूसरों के लिए जिए, दूसरों की भलाई करे, ईर्ष्या–द्वेष, नफ़रत, चुगली, निंदा, बुराई से दूर हो। केवल भगवें कपड़े पहन लेने से और दाढ़ी–मूँछ बढ़ा लेने से कोई महान नहीं हो जाता। इससे पाखंडी लोग, जिनके हितों को चोट लगी, वे सब दरबार के विरोधी हो गए।

4. श्री मदन धाम में गुरु प्रथा का ज्ञान देने के लिए गुरु की भूमिका निभाई गई और गुरु-दीक्षा भी दी गई। परम शक्ति ने बताया कि सब का सच्चा गुरु तो परम शक्ति है क्योंकि इन्सान ने जो कुछ भी सीखा है वह परम शक्ति से ही सीखा है। परन्तु हर इन्सान परम शक्ति तक नही पहुँच सकता। इस लिए इन्सान को गुरु धारणा करना चाहिए। गुरु वह होना चाहिए जिसका परम शक्ति से सम्पर्क हो और जो अपने शिष्य को परम शक्ति तक पहुंचा सकता हो, वही गुरु कहलाने का हकदार है। बाकी जो गुरु बन बैठे हैं वे परम शक्ति की दृष्टि में दोषी हैं। वह खुद तो डूबते हैं, दूसरों को भी ले डूबते हैं। इस बात का उन लोगों ने विरोध शुरू कर दिया जो पाखंडी गुरु बनकर लोगों को गुमराह कर रहे थे।

5. कुछ समय पश्चात् गुरु और शिष्य के सम्बन्ध में ज्ञान देने के उपरान्त गुरु-दीक्षा देने पर परम शक्ति ने रोक लगा दी । अब भगवान की भूमिका शुरू हुई और भगवान के बारे में ज्ञान देना शुरू कर दिया गया । परम शक्ति ने यहाँ स्पष्ट किया कि भगवान भी परम शक्ति के माध्यम होते हैं । वे सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान नहीं होते । वह भी परम शक्ति के उद्देश्य की पूर्ति के लिए धरा पर भेजे जाते हैं । परम शक्ति उनकी बुद्धि पर नियन्त्रण करके उन्हें अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रयोग करती है और उनके द्वारा चमत्कार भी करवाती है । जितना ज़रूरी होता है, उनके माध्यम से प्रदर्शन भी करती है परन्तु वे भी परम शक्ति के समक्ष लाचार और बेबस रहते हैं अर्थात उन्हें भी कष्ट–परेशानियों का सामना करना पड़ता है । वास्तव में हर रूप में कर्ता परम शक्ति ही रहती है । तब भगवानों में आस्था रखने वालों और उनको ही सर्वशक्तिमान मानने वालों के मन को ठेस लगी और उन्होंने अज्ञानतावश इस दरबार का विरोध करना शुरू कर दिया ।

6. परम शक्ति ने यहाँ बताया कि सभी दिन-वार या महीने परम शक्ति ने ही बनाए हैं । वे सभी शुभ हैं । हर इन्सान को कर्मफल भोगना पड़ता है । जब कर्मफल भोगना ही है तो दिन–वार, महीने अच्छे या बुरे कैसे हो सकते हैं ? जब यहाँ पर पोष मास में, आषाढ़ मास में, तारा डूबने पर, पंचक नक्षत्रों आदि में शादियाँ करके बताया कि यह सब इन्सान के वहम हैं । इनका कोई अर्थ नहीं है । सुख-दुख पूर्व जन्म के कर्मों का फल है न कि दिन–वार, महीने के शुभ-अशुभ होने से कोई अन्तर पड़ता है । इस से ब्राह्मण समाज और पंडित लोग यहाँ के विरोधी बन गए ।

7. परम शक्ति की घोषणा है कि "मैं अनादि, अनन्त, अगम्य, अगोचर, सर्वोच्च शक्ति हूँ । मैं न नर हूँ न नारी हूँ, मैं तो एक शक्ति हूँ । इस समय मैं एक इन्सान बनी हूँ, यह शरीर मेरा है, मेरा नाम मदन है ।" सत्य को जाने बिना लोगों ने यह कहना शुरू कर दिया कि कल "मदन" एक अध्यापक था, आज ईश्वर बन बैठा है । यह सत्य है कि ईश्वर व्यक्ति नहीं, शक्ति है । परन्तु वह शक्ति कह रही है कि मैं इन्सान बनी हूँ, यह घोषणा परम शक्ति ने की है, न कि श्री मदन जी ने कहा है कि "मैं परम शक्ति बन गया हूँ ।" यह घोषणा ही श्री मदन धाम की कार्य-प्रणाली का आधार है । इसी घोषणा के आधार पर ही श्री मदन जी और उनका परिवार पूजनीय हैं, और समाज में प्रचलित त्योहार न मनाकर श्री मदन धाम में श्री मदन जी और उनके परिवार से सम्बन्धित त्योहार ही मनाए जाते हैं । पूर्ण सत्य को जाने बिना समाज में श्री मदन धाम का विरोध है ।

8. समाज में लोग जल, वायु, धरती, अग्नि, ग्रहों की तथा जानवरों, वृक्षों, आदि की पूजा करते हैं । यह सत्य है कि अपने पूर्व जन्म के कर्मों के आधार पर ही इन्सान को सुख–दुख मिलता है । इन्सान सुख की कामना और दुखों से छुटकारा पाने के लिए पूजा-अर्चना करता है परन्तु पूजा तो उसी की होनी चाहिए जो चेतन है और सर्वशक्तिमान है । इस बात का पंडित लोगों ने विरोध किया । इसके साथ-साथ तांत्रिक विद्या का भी यहाँ

खण्डन किया गया और कहा कि जो परम शक्ति की शरण में चला जाता है उस पर ये चीजें असर नहीं करती, तो सभी तांत्रिक लोगों ने भी विरोध करना शुरू कर दिया।

9. जब कहा गया कि यहाँ आने वाले लोगों को पूजा-पाठ, जप-तप, हवन-यज्ञ की जरूरत नहीं। ज्यादा जरूरी है नेक-कर्म, सद्व्यवहार और सभी से प्यार। जो व्यक्ति ईश्वर की शरण में चला जाता है और उसके बताए नियमों पर चलने की कोशिश करता है तो उसे ये सब करने की आवश्यकता नहीं होती। तब भी उन बातों पर बल देने वालों ने विरोध किया।

10. परम शक्ति ने यहाँ कहा कि सभी पुराण कल्पना पर आधारित हैं। यह ऋषि-मुनियों की देन हैं। यह इन्सान को आस्तिक बनाने का तथा ईश्वर की ओर आकर्षित करने का एक साधन मात्र हैं तो पुराणों को मानने वाले भी इस दरबार के विरोधी बन गए।

11. यह सिद्ध करने के लिए कि दैवी शक्ति होती, जिसके हाथ में इन्सान का सुख-दुख, लाभ-हानि, यश-अपयश होता है और वही कर्मफल दाता होती है। बीमारियाँ, कष्ट-परेशानियाँ इन्सान का कर्मफल ही होता है। इसको क्रियात्मक रूप में सिद्ध करने के लिए, वो लोग जो इलाज करवाने और दवाइयाँ लेने पर भी ठीक नहीं हो रहे थे, उन्हें दवाइयाँ लेने से मना कर दिया गया और उन्हें केवल पवित्र जल के सेवन से ठीक किया गया। इस बात से समाज में यह धारणा बन गई कि दवाई पर प्रतिबंध लगाकर अन्ध-विश्वासी बनाया जा रहा है। इस कारण चिकित्सक वर्ग दरबार का विरोधी बन गया।

यहाँ यह कहना उपयुक्त होगा कि श्री मदन धाम का विरोध समाज में अज्ञानतावश या व्यक्तिगत ईर्ष्या-द्वेष के कारण हो रहा है। क्योंकि असंख्य लोग श्री मदन धाम में आए परन्तु स्वार्थी लोग टिक नहीं सके। जिनके स्वार्थ पूरे हो गए वो दोबारा नहीं आए और जिनके स्वार्थ पूरे नहीं हुए वो भी दोबारा नहीं आए। जो उन्होंने देखा, वह पूर्ण सत्य नहीं था जिस कारण उन्होंने भ्रांतियाँ फैलाईं और आधा-अधूरा ज्ञान विरोध का कारण बना। दूसरा कारण यह था कि परम शक्ति ने अपने समीप बहुत कम लोगों को टिकने दिया क्योंकि परम शक्ति तक बहुत कम लोग पहुँचने के योग्य होते हैं। यही कहा जा सकता है कि परम शक्ति ने ही यहाँ की संख्या सीमित रखने के लिए अपना विरोध करवाया है। वरना परम शक्ति के साकार रूप, उसके परिवार और कार्य-प्रणाली का विरोध कौन कर सकता है ?

प्रश्न 12 : श्री मदन धाम में आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या सीमित क्यों है ?

उत्तर : श्री मदन धाम में आने वालों की संख्या सीमित होने के निम्नलिखित कारण हैं :-

1. श्री मदन धाम आध्यात्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण केन्द्र है। यहाँ क्रियात्मक रूप में शिक्षा दी जाती है। इसके लिए श्रद्धालुओं का साकार रूप से निजी सम्पर्क होना ज़रूरी है। इसीलिए श्रद्धालुओं की संख्या सीमित रखी गई है।

2. यहाँ पर परम शक्ति स्वयं विद्यमान है। उन्होंने स्वयं पूर्व जन्म के संस्कारों के आधार पर जिन-जिन इन्सानों से जो-जो वायदे किए थे उन वायदों को निभाने के लिए केवल उनको ही अपने पास बुलाया है।

3. परम शक्ति जब स्वयं अपनी इच्छा से इन्सानी रूप में धरा पर आती है तब उसे अपनी कार्यप्रणाली को सुचारू रूप से चलाने के लिए कुछ इन्सानों की आवश्यकता पड़ती है। वह अपनी इच्छा से पूर्व जन्म के संस्कारों के आधार पर कुछ ही इन्सानों को अपने निकट बुलाती है। इसलिए भी आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या सीमित है।

4. आदिकाल से इन्सान ज्यादातर देवी-देवताओं, वीरों-पीरों या भगवानों की पूजा-पाठ, भक्ति, चिंतन, मनन आदि करते आए हैं। ऐसे इन्सानों की संख्या बहुत कम है जिन्होंने उस शक्ति की पूजा-पाठ व भक्ति की है जो इस समस्त सृष्टि की हर्ता-कर्ता है। जब वह शक्ति सदृश्य रूप में धरा पर आती है तो केवल उन्हीं इन्सानों को अपनी शरण में लेती है जिन्होंने उसकी पूजा-पाठ व भक्ति की होती है। इसलिए भी श्रद्धालुओं की संख्या सीमित है।

5. इन्सान स्वभाव से ही स्वार्थी है। वह वहाँ पर ही जाता है जहाँ उसका स्वार्थ पूर्ण होता है। श्री मदन धाम में भी समय-समय पर ऐसे इन्सान अधिक संख्या में आए। परम शक्ति अपने समीप उसको ही रखती है जो नि:स्वार्थ भाव से आता हो। इसलिए परम शक्ति परिस्थिति एवं वातावरण बनाकर कुछ ऐसी अप्रिय घटना घटित कर देती है जिससे स्वार्थी इन्सान स्वयं पीछे हट जाते हैं। इसलिए भी संख्या सीमित है।

6. परम शक्ति जो सृष्टि की मालिक है, वह असीम है। उसी शक्ति ने सदृश्य रूप में धरा पर आकर श्री मदन धाम की स्थापना की है तथा अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए अपनी कार्यप्रणाली को चलाया है। जो सृष्टि का मालिक है उसे अब तक कोई भी समझ नहीं पाया है। इसलिए उसकी कार्यप्रणाली भी इन्सान की समझ से परे रही जिसके फलस्वरूप श्रद्धालुओं की संख्या सीमित है।

7. श्री मदन धाम, आध्यात्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण केन्द्र है। यहाँ पर परम शक्ति उन श्रद्धालुओं को, जिन्हें शरण में लिया है, बलपूर्वक अपने नियमों पर चला रही है। इस कारण इन्सान को जीवन में कष्टों-परेशानियों का सामना करना पड़ता है। उनके कष्टों-परेशानियों को देख कर भी आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या सीमित है।

प्रश्न 13: परम शक्ति यहाँ स्वयं सदृश्य रूप में विराजमान है फिर भी श्री मदन धाम में आने वाले श्रद्धालुओं को दूसरों लोगों की तरह दुख , कष्ट, परेशानियाँ क्यों हैं ?

उत्तर : श्री मदन धाम में परम शक्ति ने सीमित गिनती में ही श्रद्धालुओं को अपनी शरण में लिया है। श्री मदन धाम आध्यात्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण केन्द्र है इस लिए जो भी यहाँ सिखाया जाता है वह क्रियात्मक ढंग से सिखाया जाता है। यूँ तो हर इन्सान किसी न किसी कारण से दुखी है जिसका कारण है कि हर इन्सान पूर्व जन्म के कर्मों का फल भोगने के लिए ही जन्म लेता है और परिस्थितियों के अधीन ही कर्मफल भोगता है। जब कर्मफल दाता ही स्वयं इन्सान बना हो तो उसके नज़दीक आने वाले इन्सानों को कष्ट क्यों ? इसके कुछ कारण हैं जो निम्न पंक्तियों में दिए गए हैं :-

1. पूर्व जन्म के कर्म : इन्सान अपने जीवन में अच्छे व बुरे बहुत से कर्म करता है जिस कारण उसका जीवन सुख-दुख का मिश्रण होता है। कुछ कर्म ऐसे होते हैं जो क्षमा योग्य होते हैं। जब इन्सान उनका कर्मफल भोग रहा होता है, उस समय यदि इन्सान क्षमा याचना करता है तो उसे राहत मिल जाती है। मगर कुछ कर्म क्षमा-योग्य नहीं होते जिस कारण ईश्वर स्वयं भी राहत नहीं देते और इन्सान को कर्म भोगना ही पड़ता है।

2. परम शक्ति की परख : जब ईश्वर इन्सान को अपनी शरण में लेता है तो सर्व-प्रथम इन्सान की परख करता है कि यह स्वार्थी है या सच में ही ईश्वर से प्यार करता है। श्री मदन धाम में क्योंकि हर ज्ञान क्रियात्मक रूप में दिया जाता है, इस लिए वह इन्सान के समक्ष कष्ट परेशानियाँ, विपरीत परिस्थितियां पैदा कर देता है। यदि इन्सान स्वार्थी हो तो भाग जाता है और अगर सत्य में ही प्यार करने वाला हो तो विपरीत परिस्थितियों में भी अटल विश्वास बनाए रखता है।

3. परम शक्ति द्वारा दिए कष्ट : परम शक्ति जिसे अपनी शरण में लेती है उसे एक नेक इन्सान बनाती है। गलती करने पर उसे कष्ट होता है या दृष्टांत मिलता है और जब इन्सान अपनी गलती को स्वीकार नहीं करता उसका कष्ट बढ़ता जाता है। जब उसे अपनी गलती का अहसास हो जाता है तब ईश्वर क्षमा मांगने पर राहत दे देते हैं। यह आध्यात्मिक शिक्षा देने का ढंग है जो परम शक्ति ने यहाँ अपनाया है।

4. इन्सान को अपने माध्यम के रूप में प्रयोग करना : परम शक्ति जब इन्सान बनी है तो उसे अपनी कार्य-प्रणाली चलाने के लिए कुछ लोग साधन या माध्यम के रूप में चाहिए होते हैं। लेकिन इन्सान अपनी सोच के अनुसार जीवन जीना चाहता है तो परम शक्ति उसे कष्ट देती है या दृष्टांत देती है। उसको तब तक राहत नहीं मिलती जब तक वह व्यक्ति परम शक्ति के आगे समर्पण नहीं करता।

5. परम शक्ति द्वारा मोक्ष प्रदान करना : जिस व्यक्ति को परम शक्ति की शरण मिल जाती है, उसके पूर्व जन्म के कर्मों के साथ-साथ इस जन्म के किए गए कर्मों का फल भी साथ-साथ ही इन्सान को दिया जाता है। जिसके कारण श्रद्धालु आम इन्सान से ज्यादा कष्ट परेशानियों में झेलता है। परम शक्ति जिसे अपनी शरण में लेती है उसे मोक्ष देने के लिए उसके कर्मों का फल इसी जन्म में ही दे कर समाप्त कर देती है।

6. इन्सान के अहम् को तोड़ना और अपना अस्तित्व बताना : इन्सान विकारों के अधीन है। जब इन्सान में अहं आ जाता है तो वह ईश्वर के अस्तित्व को भी नहीं मानता। यदि परम शक्ति उसे अपनी शरण में लेना चाहती है तो उस इन्सान को पहले ऐसे वातावरण में डाल देती है जहां वह कष्टों, परेशानियों में उलझ कर अपने आप को असमर्थ और असहाय महसूस करता है। उस समय उसे ईश्वर का ध्यान आता है और वह ईश्वर के समक्ष प्रार्थना करता है। ईश्वर उसकी प्रार्थना सुनते हैं और उसकी मदद करते हैं। इससे उसे ईश्वर के अस्तित्व का अनुभव होता है।

7. ईश्वर और इन्सान की सोच में अन्तर : कभी कभी इन्सान ईश्वर के किए हुए कार्य में हस्तक्षेप करने लगता है और ईश्वर के कार्य में बाधा बनने लगता है। इन्सान की सोच और ईश्वर की सोच में ज़मीन आसमान का अन्तर होता है क्योंकि ईश्वर त्रिकालदर्शी है, वह जो कार्य करता है वह इन्सान की सोच-समझ से परे होता है। इन्सान अपनी सोच से ईश्वर को चलाना चाहता है। आज ईश्वर साकार रूप में है। उसकी प्रसन्नता और नाराज़गी का प्रभाव इन्सान पर पड़ता है। इस कारण भी श्री मदन धाम के श्रद्धालु कष्टों, परेशानियों के दौर में से गुज़र रहे हैं।

8. श्री मदन धाम में आध्यात्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण केन्द्र होना : आध्यात्मिक शिक्षा के प्रशिक्षण केन्द्र में परम शक्ति स्वयं इन्सानी रूप में अध्यात्मवाद में जितने भी द्वंद्व हैं उन पर से क्रियात्मक रूप में पर्दा उठा रही है। इस लिए कुछ श्रद्धालु जिन्हें परम शक्ति की शरण मिली है, उन्हें परम शक्ति ही अध्यात्मवाद का ज्ञान क्रियात्मक रूप में दे रही है। श्री मदन जी अक्सर कहते हैं कि कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है। यही कारण है कि श्री मदन धाम में आने वाले श्रद्धालु चाहे साधारण इन्सानों से अधिक कष्ट–परेशानियाँ सहन कर रहे हैं, परन्तु अपनी मंजिल की ओर निरन्तर बढ़ रहे हैं।

प्रश्न 14: श्री मदन धाम में श्री मदन परिवार का महत्व क्यों है ?

उत्तर : श्री मदन धाम आध्यात्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण केन्द्र है अर्थात यहाँ उन दैवी शक्तियों के बारे में क्रियात्मक रूप में ज्ञान दिया जाता है जो दिखाई नहीं देती परन्तु जिनका प्रभाव इन्सान के जीवन पर पड़ता है। इस प्रशिक्षण केन्द्र का मुख्य कार्य, देवी-देवता, वीर-पीर, गुरु, भगवान, शक्तियाँ, महाशक्तियाँ, परम शक्ति, इत्यादि क्या हैं ? इनकी शक्तियाँ क्या हैं ? इनके गुण क्या हैं ? क्या ये इन्सान की प्रार्थना सुनते हैं ? क्या ये किसी की मनोकामनाएँ पूर्ण करते हैं ? आदि बातों का क्रियात्मक रूप में ज्ञान देना है। परम शक्ति ने शुरू से ही हर बात का प्रमाणों सहित ज्ञान दिया है। परम शक्ति घोषणा कर रही है कि "मैं अनादि, अनन्त, सर्वोच्च शक्ति, जो कि न नर है न नारी है इस समय इन्सान बनी हूँ। यह शरीर मेरा है। मेरा नाम मदन है।" यहाँ पर जो कुछ भी हुआ, इस घोषणा के अन्तर्गत ही हुआ है। जब परम शक्ति अदृश्य है तो वह एक शक्ति है। उस समय उसका इन्सान से रिश्ता केवल रचना और रचयिता का होता है। परम शक्ति चाहे अदृश्य है या सदृश्य है, वह कर्मफल-दाता है। इन्सान कर्मफल भोगने के लिए

जन्म लेता है। ईश्वर को कुछ विशेष कर्मफल देने के लिए इन्सान बनना पड़ता है। जब इन्सान ईश्वर की अदृश्य रूप में भक्ति करते हैं तो ईश्वर उनकी भक्ति एवम् प्रेम के आधार पर प्रसन्न हो कर वर देते हैं, वायदे करते हैं। उन्ही वायदों को पूरा करने के लिए ईश्वर को इन्सान बन कर आना पड़ता है। उसी भक्ति के अनुरूप फल देने के लिए परम शक्ति इन्सान बन कर आई है और किसी को माता, किसी को पिता, किसी को पत्नी, पुत्र, पुत्रियाँ, भाई, बहन, सहायक, सेवादार व भक्त, बनाया है। जिसकी जितनी भक्ति है, उसको उतना ही महत्व दिया है।

श्री मदन धाम में परम शक्ति ने श्री मदन जी के सगे-सम्बन्धियों के अतिरिक्त बहुत से श्रद्धालुओं को भी स्थान दिए हैं और मान्यता प्रदान की है। जिसको जिस रूप में मान्यता दी गई है, उसे उसी रूप में मान-सम्मान दिया गया है। परम शक्ति ने श्री मदन जी के परिवार के सदस्यों को महा शक्तियों के रूप में मान्यता दी है और उन्हें मान्यता के अनुरूप मान-सम्मान भी दिया है।

प्रश्न 15 : श्री मदन धाम में गुरु-दीक्षा क्यों नहीं दी जाती ?

उत्तर : श्री मदन धाम न तो किसी गुरु का स्थान है, न गुरु गद्दी है, न यह किसी देवी-देवता का और न ही किसी वीर-पीर का स्थान है। यहाँ पर न तो रोगों का इलाज किया जाता है और न ही यह किसी तांत्रिक विद्या का स्थान है। यह आध्यात्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण केन्द्र है। यहाँ आध्यात्मिक शिक्षा क्रियात्मक रूप में दी जाती है। अध्यात्मवाद में जितने भी नाम है वह सब गुणों के आधार पर हैं, जैसे देवी-देव, वीर-पीर, गुरु, भगवान, ऋषि-मुनि, संत, महात्मा, भक्त इत्यादि। इन सभी के माध्यम से परम शक्ति अपना अस्तित्व सिद्ध करती है। ये सब गुणों पर आधारित नाम हैं। जैसा गुण है, वैसा प्रदर्शन है और उसी तरह के लोग उनके पास आते हैं। जिसकी जैसी मनोकामना होती है वह वहीं जाता है परन्तु प्रमाण हर जगह परम शक्ति ही देती है। इन्ही विशेषणों में एक नाम है गुरु। इसका शाब्दिक अर्थ है बड़ा। यदि संधि विच्छेद करें तो, गु = गुणातीत अर्थात जिसके गुण हैं पर दिखाई नहीं देता, रु = रूपातीत अर्थात जिसका रूप और आकार है। अतः गुरु वह है जो अव्यक्त को व्यक्त कर दे, अँधेरे में से निकाल कर रोशनी में लाए, अर्थात जो अज्ञान के अँधेरे को ज्ञान के प्रकाश से दूर करता है। चाहे कोई भी शिक्षा क्यों न हो उसमें गुरु का होना अनिवार्य होता है। बिना शिक्षक के शिक्षा ग्रहण करना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है। इसी तरह अध्यात्मवाद में भी गुरु का होना अनिवार्य है। जब तक आप को ज्ञान नहीं तब तक आप अपनी मंजिल प्राप्त नहीं कर सकते। गुरु का कार्य है कि वह अपने शिष्य को सत्य का ज्ञान दे और सद् मार्ग पर चलने की प्रेरणा दे। गुरु वह होना चाहिए जो स्वयं ईश्वर तक पहुँचा हुआ हो और अपने शिष्य को ईश्वर तक पहुँचा सकता हो। परन्तु समाज में गुरु-दीक्षा का अर्थ केवल इतना ही है कि गुरु आपको ईश्वर का नामदान दे और व्यक्ति घर बैठकर ईश्वर का नाम सिमरन करे, अर्थात गुरु वह विधि अपने शिष्य को बताता जिससे वह ईश्वर को याद कर सके, और स्मरण करते करते ईश्वर को प्राप्त हो सके।

श्री मदन धाम परम शक्ति ने स्वयं इन्सानी रूप में आने पर स्थापित किया है। परम शक्ति ने कुल-देवता से लेकर परम शक्ति तक हर भूमिका निभा कर सत्य का ज्ञान दिया है। इसी तरह परम शक्ति ने गुरु की भूमिका निभाई और एक गुरु के गुण और कर्तव्य भूमिका निभा कर बताए। गुरु -दीक्षा भी दी और शिष्य भी बनाए। परन्तु कुछ समय उपरान्त प्रमाणों सहित यह प्रथा बन्द कर दी गई और बताया कि परम शक्ति जब इन्सान बनती है तो वह किसी को गुरु-दीक्षा नहीं देती अपितु अपनी शरण में लेती है। जिसे वह शरण में लेती है उसे बलपूर्वक सद् मार्ग पर चलाती है। उसके संकल्प मात्र से परिस्थितियाँ ऐसी बन जाती हैं कि इन्सान को वह कार्य करना पड़ता है। परम शक्ति कर्मफल दाता है। वह साधारण इन्सानों में से ही चुनाव करके देवी-देवता, वीर-पीर, गुरु, भगवान इत्यादि के रूप में मान्यता

प्रदान करती है। वह समस्त गुरुओं की गुरु है। वह चाहे अदृश्य हो या सदृश्य, वह गुरु-दीक्षा नहीं देती पूजा–पाठ, जप–तप, हवन-यज्ञ आदि करना इन्सान का अपना कर्तव्य है। ईश्वर ने इन्सान के और अपने कार्यक्षेत्र में एक सीमा रेखा खींच रखी है। जो कार्य इन्सान के कार्यक्षेत्र में है वह इन्सान ने ही करना है। जो काम इन्सान के वश में नहीं होता वह ईश्वर करता है। ईश्वर तो कर्मफल दाता है और उसने इन्सान को उसके कर्मों का फल देना है। परन्तु ईश्वर, इन्सान से चाहता है कि वह उसके अस्तित्व को स्वीकार करे, उसके बारे में जाने, उससे प्यार करे, उसके बताए हुए नियमों पर चले। इसलिए श्री मदन धाम में पूजा–पाठ, जप-तप पर बल न देकर परम शक्ति के बताए नियम "नेक कर्म, सद्व्यवहार और सभी से प्यार" और "दूसरों से ऐसा व्यवहार करो जैसा व्यवहार आप अपने लिए दूसरों से चाहते हो" पर बल दिया जाता है। जिनको परम शक्ति ने अपनी शरण में लिया है उन्हें यह नियम तोड़ने पर कष्ट–परेशानी का सामना करना पड़ता है। जब तक वो अपनी गलती स्वीकार नहीं करते, उन्हें राहत नहीं मिलती और जब वो अपनी गलती मान लेते हैं, क्षमा याचना करते हैं, तो परम शक्ति उन्हें राहत प्रदान करती है। इस तरह का प्रशिक्षण कोई गुरु नहीं दे सकता। परम शक्ति स्वयं इन्सानी रूप में विराजमान है। वह अपने समस्त नियमों और गुणों को क्रियात्मक ढंग से प्रदर्शित कर रही है। वह सर्वगुण सम्पन्न है, सर्वभुवन वन्दनीय है, सर्वरूपिणी है, समस्त गुरुओं की गुरु है, उसे किसी एक भूमिका में नहीं बांधा जा सकता। इसलिए श्री मदन धाम में गुरु-दीक्षा नहीं दी जाती।

# अध्याय – 7

## कर्मफ़ल से सम्बन्धित प्रश्न

प्रश्न 1: क्या कर्मफ़ल होता है ?

उत्तर : इसका उत्तर है हाँ। कर्मफल का अर्थ है कर्मों का फल। यदि कर्मफ़ल न होता तो सभी इन्सान सुखी होते। सभी इन्सान शारीरिक रूप से बलशाली होते। कोई भी इन्सान गरीब न होता और न ही शारीरिक रोग होते। सभी की संतान अच्छी होती, कोई विकलांग न होता। सभी विद्यार्थी अपनी परीक्षा में अच्छे अंक लेकर उतीर्ण होते। अध्यात्मवाद हो या भौतिकवाद दोनों ही अवस्थाओं में किए गए कर्मों का फ़ल होता है।

प्रश्न 2 : कर्मफल क्या होता है ?

उत्तर : यदि कर्मफल का शाब्दिक अर्थ लें तो कर्म का अर्थ है किया गया कार्य और फल का अर्थ है उसका परिणाम या प्राप्ति। भौतिकवाद में इन्सान जैसा कार्य करता है उसका परिणाम भी वैसा ही मिलता है। अर्थात भौतिकवाद में यदि इन्सान अच्छा कार्य करता है तो उसका फल भी अच्छा मिलता है यदि बुरा कार्य करता है तो उसके परिणाम भी बुरे ही मिलते हैं। इसी तरह अध्यात्मवाद में है। उसके अन्तर्गत इन्सान को मन में सोचने का, वाणी से किसी से कुछ कहने का तथा शारीरिक रूप से कार्य करने का भी फल है। भौतिकवाद में यदि इन्सान अपने मन में किसी के प्रति अच्छे या दुर्विचार रखता है तो उसका कोई फल नहीं, क्योंकि मन के विचारों का किसी को पता नहीं चलता जब तक कि व्यक्ति उसे व्यक्त न कर दे। भौतिकवाद में वाणी तथा शरीर द्वारा किए गए कर्म का ही कर्मफल होता है।

इस सृष्टि को बनाने वाली तथा नियमों में बांधने वाली एक शक्ति है जो न नर है न नारी है। उसी शक्ति ने इन्सान की रचना की है और उसे प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ बनाया है। इन्सान को ही उसने बुद्धि तत्व सबसे अधिक दिया और अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए भाषा दी। अच्छे बुरे की पहचान दी ताकि इन्सान अपना कार्य स्वतन्त्र रूप से कर सके। इन्सान को ही अपना साझीदार बनाया तथा अपने बारे में ज्ञान करवाया। इसलिए ही इन्सान पर कर्मफल का नियम लागू होता है।

प्रश्न 3: कर्मफ़ल का आधार क्या है ?

उत्तर : यह तो आप जान ही चुके हो कि कर्मफल क्या होता है। अब प्रश्न है कि कर्मफ़ल देने का आधार क्या है। इन्सान जिस समाज में रहता है, जिस देश में रहता है, उस देश तथा समाज के कुछ नियम तथा कानून होते हैं। जब इन्सान उन नियमों या कानून का उलघंन करता है तो उसे उसकी सज़ा देश का कानून या समाज देता है। जिस तरह भौतिकवाद में कानून व नियम हैं उसी तरह अध्यात्मवाद में भी ईश्वर जो सत्य, न्याय और प्यार का प्रतीक है उसने भी इन्सान को कर्मफल देने के लिए कुछ नियम बनाए हैं। जब इन्सान उन नियमों को तोड़ता है तो वह ईश्वर की दृष्टि में दोषी होता है और उसे उसका फल भुगतना पड़ता है। ईश्वर ने इन्सान को कर्म फल देने के लिए निम्नलिखित सिद्धान्त बनाए हैं :

1. दूसरों से वैसा ही व्यवहार करो जैसा आप अपने लिए दूसरों से चाहते हो।
2. जो आप अपने लिए नहीं चाहते, वह दूसरों से न करो।

3. सदा नेक कर्म, सद्व्यवहार तथा सब से प्यार करो।
4. किसी को अपना दुश्मन न समझो। यदि कोई आपको अपना दुश्मन समझता भी है तो भी उससे प्यार करो।

जो इन्सान उपरोक्त नियमों की पालना सच्चे मन से करता है वह ईश्वर की कृपा का पात्र बनता है तथा वह अपना वर्तमान जीवन तो सार्थक बनाता ही है लेकिन उसके साथ-साथ जन्म-मरण के बन्धन से भी मुक्त हो जाता है।

प्रश्न 4 : क्या इन्सान कर्मफ़ल भोगता है ?

उत्तर : पाठकगण उपरोक्त प्रश्नोत्तरी में यह जान ही चुके हैं कि संसार में सब प्राणियों में से ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना इन्सान ही है। ईश्वर ने इन्सान को ही वह बुद्धि दी है जिससे वह अच्छे-बुरे की पहचान कर सके। विचार व्यक्त करने के लिए भाषा दी, विवेकशीलता दी, इस के साथ ही ईश्वर ने इन्सान के अन्दर पांच प्रवृतियों काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार का समावेश किया ताकि सृष्टि का संचालन एवं आवागमन का चक्र सुचारू रूप से चलता रहे। इन्सान को ही ईश्वर ने अपना राज़दार बनाया। समय-समय पर महान-आत्माओं को धरा पर भेजकर इन्सान को अपने सम्बन्ध में ज्ञान करवाया। ईश्वर ने ही इन्सान के अस्तित्व में आने से पहले ही उसकी हर आवश्यकता का उचित प्रबन्ध किया अर्थात इन्सान जिन वस्तुओं का प्रयोग करता है उनको ईश्वर ने ही बनाया है, इन्सान ने तो उनकी खोज की है। इन्सान कर्म करता है और कर्म का फल भोगता है। इन्सान के जीवन में सुख-दुख, खुशी-गमी, सफ़लता-असफ़लता, लाभ-हानि, यश-अपयश, जीवन-मृत्यु सभी कुछ ईश्वर की देन होती है जो पूर्व जन्म के संस्कारों का ही फल होती है।

इन्सान को माता-पिता, भाई-बहन, पति-पत्नी तथा सन्तान कैसी मिलेगी यह भी उसके किए गए संस्कारों का ही फल होता है। इसके साथ-साथ उसकी सोच, रुचिएँ, आदतें, स्वभाव आदि भी संस्कारों के आधार पर ही निश्चित होते हैं। वह शारीरिक दृष्टि से कैसा होगा, उसका रंग रूप कैसा होगा उसकी बुद्धि कैसी होगी आदि भी इन्सान के पूर्व जन्म में किए गए संस्कारों पर आधारित होते हैं। उपरोक्त से प्रमाणित होता है कि इन्सान कर्मफल भोगता है।

प्रश्न 5 : क्या कर्मफल इसी जन्म में मिलता है या कुछ आगे भी मिलता है ?

उत्तर : यह तो आप जान ही चुके हैं कि इन्सान को कर्मफल मिलता है और वह उस फल को भोगता है। इस जन्म में इन्सान ने अपने जीवन में जो कुछ पाया है वह उसके पूर्व संस्कारों का ही फल है। जैसे आप देखते ही हैं कि एक व्यक्ति जो कि न तो पढ़ा-लिखा है न ही उसमें कोई अच्छा गुण होता है, न ही उसका व्यव्हार अच्छा होता है, इसके बावजूद उसके पास धन-दौलत, दुनिया का हर ऐश्वर्य होता है। उसका जीवन सुखी होता है। समाज में स्थान होता है। ठीक इसके विपरीत एक दूसरा व्यक्ति है जो व्यवहारिक दृष्टि से भी अच्छा है, अच्छे गुण हैं, कर्मठ है, ईमानदारी से अपना कार्य करता है परन्तु उसका जीवन सुखी नहीं होता। इसका क्या कारण है ? इसका कारण है पूर्व जन्म में किए गए संस्कार। क्योंकि वर्तमान जीवन में इन्सान के सुख-दुख, सफ़लता-असफ़लता, खुशी-गमी, यश-अपयश, लाभ-हानि पूर्व संस्कारों के आधार पर ही मिलती है। इससे यह स्पष्ट होता है कि वर्तमान जीवन में इन्सान जो अच्छे या बुरे कर्म करता है उसका फल भोगने के लिए उसे पुन: जन्म लेना पड़ता है और उस जन्म में वर्तमान जीवन में किए गए कर्मों का भुगतान करना पड़ता है। क्योंकि इन्सान अपने जन्म में नए कर्म करता है उसके फल को भोगने के लिए उसे बार-बार जन्म लेना पड़ता है। आप देखते ही हैं कई बार जब बच्चे का जन्म होता है वह जन्म से

ही विकलांग होता है या शारीरिक रोग से ग्रसित होता है। यह क्या है? यह पूर्व जन्म के संस्कारों का ही फल होता है।

प्रश्न 6 : कर्मफल-दाता कौन है?

उत्तर : कर्मफल देने वाला कौन हो सकता है ? वह वही हो सकता है जो हर समय हो, हर जगह हो, हर इन्सान के मन की बात भी जानने वाला हो अर्थात जो सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान तथा अनादि, अनन्त एवं अन्तर्यामी हो। उपरोक्त गुण केवल परम शक्ति में ही हैं। परम शक्ति के अतिरिक्त कोई भी क्यों न हो, चाहे देवी-देवता, वीर-पीर, भगवान या महान-आत्मा हो, न वे अनादि, अनन्त हैं न ही सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान हैं न ही अन्तर्यामी हैं।

परम शक्ति न नर है न नारी है वह तो एक शक्ति है। वह अनादि, अनन्त, अगम्य, अगोचर और सर्वोच्च है। केवल वही सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान है। जीव-निर्जीव को बनाने वाली तथा उन्हें नियमों में बांधने वाली है। वह जीवों की पालन-कर्ता और संहार-कर्ता करता है। परम शक्ति ही अजर, अमर, अविनाशी है। परम शक्ति ही त्रिकालदर्शी, अन्तर्यामी है। वह ही सभी शक्तियों की स्रोत है।

कर्मफल-दाता केवल वही हो सकता है जो गिनती में एक हो और जो उपरोक्त गुणों का स्वामी हो। वह केवल परम शक्ति है, वह गिनती में एक है तथा सत्य, न्याय और प्यार की प्रतीक है। इसलिए परम शक्ति के अतिरिक्त कोई भी कर्मफलदाता नहीं है।

प्रश्न 7 : केवल इन्सान ही कर्मफ़ल क्यों भोगता है?

उत्तर : जब कुछ भी नहीं था तब भी कुछ था। वह थी परम शक्ति जिसे अनादि, अनन्त, अगम्य, अगोचर और सर्वोच्च कहा गया है। तब परम शक्ति ने विचार किया कि "भले ही मैं सर्वशक्तिमान हूँ परन्तु उसका क्या लाभ, जब मुझे कोई जानने वाला ही नही है।" तब परम शक्ति ने इन्सान की कल्पना की कि मैं ऐसा जीव बनाऊँ जो मेरे बारे जाने, मुझे माने, मुझ से प्यार करे तथा मेरे बनाए हुए नियमों पर चले परन्तु पहले इन्सान बनाया नहीं। पहले जो इन्सानी जीवन के लिए आवश्यक था उसे बनाया। सबसे पहले पाँच मूल तत्व बनाए जो सृष्टि निर्माण तथा इन्सानी जीवन के लिए आवश्यक थे। उसके बाद निर्जीव तथा जीव बनाए तथा उन्हें नियमों में बांध दिया। जब सब कुछ बन कर तैयार हो गया तब अन्त में इन्सान की रचना की। परम शक्ति ने जो कुछ बनाया इन्सान के प्रयोग के लिए बनाया और इन्सान को केवल अपने लिए बनाया।

परम शक्ति ने इन्सान को ही संसार के सब प्राणियों में से सर्वश्रेष्ठ तथा सरताज बनाया। इन्सान को ही विकसित बुद्धि तत्व दिया जिससे वह अच्छे बुरे की पहचान कर सके। उसे भाषा दी ताकि वह अपने विचार व्यक्त कर सके। इन्सान को ही विवेकशीलता दी। इन्सानी ढांचे का निर्माण भी इस ढंग से किया कि वह अपना कार्य स्वतन्त्र रूप से कर सके। इन्सान को ही परम शक्ति ने अपना साझीदार एवं राज़दार बनाया। परम शक्ति ने इन्सान के प्रति अपना कर्तव्य निभाते हुए समय-समय पर उसे अपने बारे में ज्ञान भी करवाया। जब परम शक्ति ने किया ही सब कुछ इन्सान के लिए है तो वह भी इन्सान से कुछ चाहती है। परम शक्ति जड़ नहीं चेतन है। वह भी हर चीज़ का एहसास करती है। वह चाहती है कि जिसके लिए मैंने सब कुछ किया वह उसके अस्तित्व को स्वीकार करे, उसको प्यार करे, उसके बारे में ज्ञान प्राप्त करे तथा इन्सानी कर्तव्यों का निर्वाह करते हुए उसके बनाए नियमों पर चले।

क्योंकि परम शक्ति ने कर्मफल देने के लिए जिन नियमों को आधार बनाया है उन्हें समझने व उन पर चलने, उन्हें अपने जीवन में लागू करने की बुद्धि केवल इन्सान को ही दी है। इस लिए कर्मफल केवल इन्सान को ही भोगना होता है। संसार के बाकी प्राणी जब इन नियमों को समझ ही नहीं सकते तो उन्हें जीवन में लागू कैसे करेंगे ? जब वे इन्हें लागू ही नहीं कर सकते तो उन्हें कर्मफल कैसे दिया जा सकता है। जैसे किसी भी देश का कानून जो कि दंड का आधार होता है केवल इन्सान पर ही लागू होता है इसी तरह ईश्वर के नियम जो कि कर्मफल का आधार हैं वे भी इन्सान पर ही लागू होते हैं। इसलिए कर्मफल भी इन्सान को ही भोगना पड़ता है।

प्रश्न 8: जब कर्मफ़ल ही भोगना है तो ईश्वर की पूजा, भक्ति का क्या लाभ ?

उत्तर : प्राय: व्यक्ति सोचता है कि जब कर्मफ़ल ही भोगना है तो फिर पूजा-पाठ, भक्ति आदि से क्या लाभ है ? इन्सान का मानना है कि यदि पूजा-पाठ, भक्ति न भी करूँ तब भी मुझे कर्मफ़ल भोगना है और यदि करता हूँ तब भी मुझे कर्मफ़ल भोगना है, तो मुझे पूजा-पाठ से क्या लाभ ? इस सम्बन्ध में इतना ही स्पष्ट करना है कि ईश्वर कर्मफल दाता है, वह हर इन्सान को उसके कर्मों का फल देता है। इन्सान अपने जीवन में जो भी सुख-दुख भोगता है वह उसके कर्मो का ही फल होता है। इन्सान कर्म करता है ईश्वर उसे उसका फल देता है। ईश्वर सत्य, न्याय और प्यार का प्रतीक है लेकिन इसके साथ-साथ वह परमदयालु और कृपालु भी है।

ईश्वर भी इन्सान से कुछ चाहता है। वह चाहता है कि इन्सान उसके अस्तित्व को स्वीकार करे, उसे माने, उसके बारे में ज्ञान प्राप्त करे तथा उससे नि:स्वार्थ प्यार करे। वह चाहता है कि इन्सान उसका स्मरण करे, पूजा-पाठ, भक्ति करे तथा ईश्वर द्वारा इन्सान के लिए बनाए गए नियमों का अनुसरण करे। जब इन्सान ईश्वर से प्यार करता है, उसकी पूजा-पाठ, भक्ति करता है तथा नेक कर्म, सद्व्यवहार और सभी से प्यार करता है तब ईश्वर प्रसन्न होता है। परम शक्ति दया की सागर है। वह केवल न्यायधीश ही नहीं जो इन्सान को केवल सज़ा ही देती है। वह चेतन है और हर चीज़ का एहसास करती है। जब इन्सान परम शक्ति से नि:स्वार्थ प्यार करता है तो परम शक्ति भी इन्सान से प्यार करती है तथा उसका मार्ग-दर्शन करती है। उसे गलत कार्य करने से रोकती है। धीरे-धीरे इन्सान दुष्कर्मो को छोड़कर सत्कर्मों की ओर बढ़ने लग जाता है। जिससे उसका जीवन सार्थक बन जाता है। यदि परम शक्ति प्रसन्न हो जाती है तो वह इन्सान के बड़े से बड़े दुष्कर्म को भी क्षमा कर देती है और इन्सान को जीवन-मरण के बन्धन से भी मुक्त कर देती है। इसलिए कह सकते हैं कि इन्सान को ईश्वर की पूजा-पाठ, भक्ति से लाभ पहुँचता है।

प्रश्न 9 : क्या कर्मफ़ल काटा भी जा सकता है ?

उत्तर : यह तो आप जान ही चुके हैं कि हर इन्सान कर्मफल भोगता है। इन्सान अपने जीवन में अच्छे व बुरे कर्म करता है इसलिए उसका जीवन दुखों-सुखों का मिश्रण होता है। इन्सान ज्यादातर दुष्कर्म, विकारों के अधीन ही करता है।

कर्मफल दाता गिनती में एक है। वह सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान है, वह न्यायकारी होते हुए भी परमदयालु और परमकृपालु है, दया का सागर है। वह भी हर चीज़ का एहसास करता है। वह इन्सान की नफ़रत और प्यार का भी एहसास करता है क्योंकि वह जड़ नहीं चेतन है। जब इन्सान उसका चिंतन-मनन, पूजा-पाठ, भक्ति आदि करता है। उससे नि:स्वार्थ प्यार करता है और प्यार के साथ-साथ ईश्वर से डरता भी है। उसका आदर-सम्मान

करता है। इन्सान मन में ईर्ष्या, द्वेष, नफ़रत वैर भाव नहीं रखता है। हर किसी के साथ सद्व्यवहार करता है। ईश्वर के बनाए नियमों का पालन करता है और जो इन्सानी कर्तव्य हैं उनका निर्वाह करते हुए नेक कर्म, सद्व्यवहार तथा सभी से प्यार करता है। तब वह ईश्वर की कृपा का पात्र बनता है और ईश्वर उस पर प्रसन्न होता है। जब ईश्वर प्रसन्न होता है तब वह इन्सान का बड़े से बड़ा दुष्कर्म भी काट देता है तथा उसको नेक राह पर चलाकर उसका जीवन सार्थक बना देता है। जब इन्सान अपने किए गए दुष्कर्मों के लिए सर्वशक्तिमान से सच्चे मन और विनम्र भाव से क्षमा याचना करता है और वह भविष्य में दोवारा न करने का वायदा करता है, तो सर्वशक्तिमान उस को क्षमा कर देते हैं।

उपरोक्त से स्पष्ट होता है कि ईश्वर से नि:स्वार्थ प्यार करने से कर्मफल कट सकता है।

प्रश्न 10 : ईश्वर ने इन्सान के प्रति क्या क्या उपकार किए हैं ?

उत्तर : ईश्वर ने अपना अस्तित्व सिद्ध करने के लिए सृष्टि की रचना से पहले इन्सान की कल्पना की, जो उसके अस्तित्व को माने, उसे जाने तथा उससे प्यार करे। परन्तु इन्सान को बनाया नहीं। इन्सान की रचना से पहले जो कुछ इन्सान के जीवन के लिए आवश्यक था उसे बनाया। जब सब कुछ बन कर तैयार हो गया तो अन्त में इन्सान की रचना की।

इन्सान के कुछ शारीरिक अंग ऐसे हैं जिन्हें वह अपनी इच्छानुसार चला सकता है लेकिन कुछ शारीरिक प्रणालियाँ ऐसी भी हैं जिन पर उसका नियन्त्रण नहीं है। जैसे श्वास प्रणाली, रक्तसंचार प्रणाली तथा पाचन प्रणाली आदि। इन सब का नियन्त्रण ईश्वर करता है।

ईश्वर ने इन्सानी जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए धरती में गुरुत्वाकर्षण शक्ति को उत्पन्न किया ताकि इन्सान धरती पर रह सके। धरती के अन्दर उपजाऊ शक्ति उत्पन्न की ताकि इन्सान पैदावार प्राप्त कर सके। धरती के अन्दर खनिज पदार्थों के भण्डार बनाए आदि। इन्सानी जीवन को जीने के लिए अनुकूल वातावरण तथा जलवायु का भी प्रबन्ध किया। धरती पर समुद्रों, नदियों, पहाड़ों, जंगलों, रेगिस्तानों को तथा जीव-निर्जीव को भी बनाया ताकि सन्तुलित वातावरण बना रह सके। पर इन्सान प्रायः इन सब को महत्व नहीं देता।

उपरोक्त के अतिरिक्त ईश्वर ने अपना दायित्व निभाते हुए इन्सान को अपने बारे में तथा इन्सानी जीवन कैसे जीना है, उसका ज्ञान करवाने के लिए समय-समय पर महान-आत्माओं को धरती पर भेजकर अपने बारे में ज्ञान करवाया तथा इन्सानी जीवन किस ढंग से जीना है उसके बारे में भी इन्सान को ज्ञान करवाया ताकि वह अपना जीवन सार्थक बना सके। इस के साथ-साथ इन्सान जो भी कर्म करता है ईश्वर उसको उसका फल भी देता है। इन्सानी जीवन को सन्तुलन बनाए रखने के लिए प्राकृतिक ढंग अपनाकर भू-तल पर परिवर्तन भी करता है।

इन्सान के जीवन में ईश्वर का महत्व सर्वोपरि है क्योंकि अगर ईश्वर न चाहता तो इन्सान अस्तित्व में ही नहीं आ सकता था। इन्सान के जन्म से लेकर मृत्यु तक हर पल ईश्वर का इन्सान के लिए महत्व है क्योंकि ईश्वर की इच्छा के बिना इन्सान एक साँस भी नहीं ले सकता। इन्सान आज जो कुछ भी भोग रहा है वह सब ईश्वर ने ही तो दिया है। इस सब के लिए इन्सान को ईश्वर का सदा शुक्रगुजार होना चाहिए। आप घर में यदि बिजली का प्रयोग करते हैं तो उसका बिल आ जाता है, क्या आप साँस लेने के लिए जिस वायु का प्रयोग करते हो ईश्वर ने कभी उसका बिल

आपको भेजा है ? इन्सान पर ईश्वर के अनगिनत उपकार हैं जिन का बदला इन्सान कभी चुका ही नहीं सकता। ईश्वर के उपकारों को गिनाया ही नहीं जा सकता।

# अध्याय – 8

## विविध प्रश्न

प्रश्न 1: दान और पुण्य का क्या महत्व है ?

उत्तर : परम शक्ति ने इस सृष्टि की रचना की और उसे नियमों में बांधा है। उसी तरह इन्सान का जीवन भी नियमों में बंधा है। इन्सान कर्म करता है और कर्मफल भोगता है। इन्सान के जीवन में सुख-दुख, लाभ-हानि, यश-अपयश, जीवन-मृत्यु, शारीरिक तन्दरुस्ती, मानसिक शान्ति, खुशहाली, सब कुछ उसके पूर्व जन्म के कर्मो के फल होते हैं। प्रायः देखने में आता है कि जब इन्सान पर कोई शारीरिक, मानसिक या आर्थिक समस्या आती है और इन्सान के प्रयासों के बावजूद उसे राहत नहीं मिलती तो वह दान-पुण्य का सहारा लेता है। ऐसा माना जाता है कि दान-पुण्य करने से इन्सान का कर्मफल कट जाता है।

श्री मदन धाम आध्यात्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण केन्द्र है। यहाँ पर हर प्रश्न का उत्तर क्रियात्मक रूप में तर्क के साथ दिया जाता है। परम शक्ति ने यहाँ पर स्वयं ज्ञान दिया है और बताया है कि दान का अर्थ है, कोई वस्तु या धन किसी ज़रूरतमंद व्यक्ति या संस्था को देना और पुण्य का अर्थ है वह कर्म जो मन और वचन से ईश्वर के निमित्त किया जाए या किसी की भलाई के लिए किया जाए। कर्म चाहे अच्छा हो या बुरा, उसका कर्मफल इन्सान को आने वाले जन्म में मिलना ही है। यदि देखा जाए तो दान-पुण्य का कोई महत्व नहीं है। हर इन्सान को कर्मफल भोगना पड़ता है। परम शक्ति ने अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए महान आत्माओं को धरती पर भेजा, उनके माध्यम से चमत्कार भी किए और ज्ञान भी दिया। उस ज्ञान को लुप्त होने से बचाने के लिए और उन महान आत्माओं के नाम रखने के लिए उनके स्थान बनाए जाते हैं और वहाँ पर श्रद्धालुओं को भेज कर उनकी मनोकामनाएँ पूर्ण की जाती हैं। ऐसी धार्मिक संस्थाओं को चलाने के लिए परम शक्ति को दान का महत्व रखना पड़ता है। जब कोई इन्सान उचित और ज़रूरतमंद संस्था में दान करता है तो परम शक्ति उसे उस दान का फल अवश्य देती है जिससे उस इन्सान को कष्ट परेशानियों से राहत मिलती है और उसके दुष्कर्म भी कटते हैं। परन्तु वह दुष्कर्म जो अक्षम्य है यदि उनके कारण कष्ट है तो इन्सान को उनका कर्मफल भोगना ही पड़ता है। इस लिए इन्सान को दान-पुण्य अवश्य करना चाहिए और साथ में सर्वशक्तिमान से प्रार्थना करते हुए अपने द्वारा किए हुए अपराधों के लिए क्षमा भी मांगनी चाहिए। परन्तु दान उचित व्यक्ति को या वहाँ पर ही देना चाहिए जहाँ ईश्वरीय ज्ञान दिया जाता हो और इन्सान को सत्य मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया जाता हो।

प्रश्न 2 : निर्जीव चिह्न का क्या महत्व है ?

उत्तर : आस्था और तर्क दो अलग-अलग विषय हैं। तर्क का सम्बन्ध इन्सान की बुद्धि से है और आस्था का सम्बन्ध इन्सान के मन से है, विश्वास से है। जहाँ तर्क है वहाँ आस्था का कोई स्थान नहीं और जहा आस्था है वहाँ तर्क नहीं होता। कुछ लोग अध्यात्मवाद को तर्क से समझने की कोशिश करते हैं। वे उन बातों पर विश्वाश नहीं करते जो उन्हें समझ नहीं आतीं। इस लिए कुछ धर्म ऐसे हैं जो ईश्वर के अस्तित्व को ही नहीं मानते। कुछ लोग अपने

आराध्य देव पर अटूट विश्वाश करते हैं और उन्हें यह पता नहीं होता कि जिसकी वह पूजा कर रहें है वह कौन है ? उसका जीवन क्या था ? उसकी शिक्षा या ज्ञान क्या है ? जिस के समक्ष वह प्रार्थना कर रहे हैं क्या वह उनकी प्रार्थना पूर्ण कर सकता है ? उन लोगों को इससे कोई मतलब नहीं होता। उनका यह मानना होता है कि उनका आराध्यदेव उनकी प्रार्थना सुन रहा है और वही उनकी प्रार्थना पूर्ण भी करेगा। समाज में अनेकों ही देवी-देवता, वीर-पीर, भगवान इत्यादि के नाम हैं, उनके स्थान हैं, उनके चिह्न हैं। ईश्वर के भी अनेक मान्यता प्राप्त रूप हैं, नाम हैं और निर्जीव चिह्न हैं जैसे शिव-लिंग, बिन्दु, ओम, ज्योति, चिराग इत्यादि। अब प्रश्न यह है कि इनका क्या महत्व है ? वास्तव में अध्यात्मवाद में जितने भी नाम हैं उनमें से कोई भी अपने आप में कुछ नहीं है। न तो वे किसी को कष्ट देते हैं और न ही किसी की मनोकामना पूर्ण करते हैं। परम शक्ति जिसको भी मान्यता प्रदान करती है उनके मान-सम्मान का ध्यान स्वयं रखती है। उसी तरह परम शक्ति निर्जीव चिह्नों को भी मान्यता प्रदान करती है। जो भी उनके समक्ष प्रार्थना करता है, अपनी श्रद्धा व्यक्त करता है तो परम शक्ति ही उसे प्रमाण देती है और उसकी आस्था सुदृढ़ करती है। परम शक्ति जो सृष्टि की रचयिता है उसने ही इन्सान की रचना की है और उसके जीवन यापन के लिए जो जरूरी था, उस की उचित व्यवस्था की है। परम शक्ति तो अदृश्य है, उसे देखा नहीं जा सकता। न उसका कोई रूप है, न नाम है, न स्थान है। इस लिए उसकी पूजा, अर्चना, ध्यान नहीं हो सकता। अदृश्य रूप में परम शक्ति का ध्यान करना गृहस्थ लोगों के लिए असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है। परम शक्ति ने समय-समय पर महान आत्माओं द्वारा अपने निर्जीव चिह्नों की स्थापना करवाई और उन्हें अपने रूप में मान्यता प्रदान की। लोग कहते है पत्थरों पर पानी डालने से क्या लाभ ? ठीक है पत्थरों पर पानी डालने से कोई लाभ नहीं परन्तु जिस पत्थर को परम शक्ति अपने रूप में मान्यता प्रदान करती है, उसकी पूजा-अर्चना करने से इन्सान की मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं और मानसिक शान्ति मिलती है।

प्रश्न 3: पाप और पुण्य की क्या परिभाषा हैं ?

उत्तर : पाप और पुण्य को परिभाषित करने से पूर्व यह समझना आवश्यक है कि धर्म क्या है ? क्योंकि धर्म ही निर्धारित करता है कि क्या पाप है और क्या पुण्य है। धर्म कुछ नियमों का समूह होता है। ये नियम ईश्वर नहीं बनाता। परम शक्ति ने तो केवल महान आत्माओं को ज्ञान दिया। उन्होंने वह ज्ञान इन्सान को दिया। समय, स्थान और परिस्थितियों के अनुसार ज्ञान आस्था में बदला और आस्था धर्म में बदल गई। इस कारण हर धर्म के अपने कुछ नियम होते हैं जो वहाँ के वातावरण और परिस्थितियों के अनुकूल होते हैं। एक धर्म मास खाना पाप मानता है और दूसरा धर्म उसे पाप नहीं मानता। एक इन्सान के लिए कोई कर्म पाप है तो दूसरे इन्सान के लिए वह पुण्य कैसे हो सकता है जब कि कर्मफल देने वाला तो एक ही है। वह इन्सानों के लिए अलग-अलग नियम कैसे बना सकता है ? वास्तव में कोई कर्म अपने आप में सही या गलत नहीं होता। सही या गलत तो सोच होती है जिस सोच के साथ वह कर्म किया जाए। श्री मदन धाम में परम शक्ति स्वयं विराजमान है। वह अपने श्री मुख से ज्ञान दे रही है। उसने पाप और पुण्य की बहुत सरल और सटीक परिभाषा दी है कि:-

" जो हम अपने लिए नहीं चाहते परन्तु दूसरों से करते हैं वह पाप है "

"जो हम अपने लिए चाहते हैं और वही दूसरों से करते हैं वह पुण्य है "

प्रश्न 4 : धर्म क्या है ? इन्सान का सच्चा धर्म क्या है ?

उत्तर : संसार में जो लोग किसी भी दैवी शक्ति में आस्था रखते हैं उन्हें धार्मिक व्यक्ति कहा जाता है। यह संसार अनेक धर्मों और मिशनों में बंटा हुआ है। अनेकों ही धर्म हैं उनकी अपनी-अपनी आस्था है और अपने-अपने नियम हैं। जबकि सभी धर्म कह रहे हैं कि ईश्वर एक है तो फिर इनमें अन्तर विरोध या मत-मतान्तर क्यों हैं ?

धर्म क्या है ?

धर्म की कोई निश्चित परिभाषा नहीं है। यह समय, काल और देश के अनुसार बदलती रहती है। यह इतना विस्तृत विषय है कि इसे शब्दों में बांध पाना कठिन है। जब ईश्वर शब्दों से परे है, विचारों से परे है, उसे किसी परिभाषा में नहीं बांधा जा सकता तो धर्म कैसे परिभाषित हो सकता है ? धर्म कुछ नियमों का समूह है, जिनके आधार पर समाज बना और इन्सान एक सामाजिक जीव बना अर्थात धर्म इन्सान को जानवर से इन्सान बनाता है। उसे "रोटी, कपड़ा और मकान" से ऊपर उठ कर दूसरों के बारे में सोचने के लिए बाध्य करता है। धर्म दूसरों के प्रति कर्तव्यों को पूरा करने का रास्ता बताता है। जब इन्सान स्वार्थ और परमार्थ में उलझा होता है तो धर्म का कार्य उसे सही रास्ता बताना होता है। अँधेरे में से निकाल कर रोशनी में लाना होता है। हम किसी भी धर्म के नियमों को चार भागों में बाँट सकते हैं जिनसे धर्म की मौलिक विचारधारा का पता चलता है।

1. शरीर के सम्बन्ध में नियम : प्रत्येक धर्म अपने अनुयायियों को उस देश और वातावरण के अनुसार वेशभूषा, खान-पान और शरीर की देख-भाल के लिए नियम बताता है। जैसे सनातन धर्म में तिलक-धारण करना, जनेऊ धारण करना, सुबह नहाना, प्राणायाम, सूर्य-नमस्कार, योग-आसन करने, शाकाहारी भोजन करने को धर्म मानते हैं। इस्लाम में सुन्नत करना, टोपी-पहनना, औरतों का बुरका पहनना और मांस खाना धर्म है। ऐसे ही और धर्मों में अलग-अलग मान्यताएँ हैं।

2. सामाजिक नियम : प्रत्येक धर्म में जन्म, मरण और शादी आदि के नियम, रस्में, रिवाज अलग-अलग हैं। जैसे इस्लाम में एक से ज्यादा शादियाँ की जा सकती हैं परन्तु दूसरे धर्मों में ऐसा करना धर्म के विरुद्ध है। इस्लाम में बेटों की सुन्नत के जाती है, सनातन धर्म में जनेऊ धारण करवाया जाता है।

3. ईश्वर के बारे ज्ञान और नियम : प्रत्येक धर्म की ईश्वर के बारे में अपनी अलग-अलग विचारधारा है। कोई कहता है कि ईश्वर साकार है, कोई कहता है कि ईश्वर निराकार है। कोई कहता है कि वह न तो निराकार है न साकार है, वह अदृश्य है। हर धर्म में ईश्वर के प्रति प्रश्न, जैसे ईश्वर क्या है ? क्या करता है ? कहाँ है ? उसके नियम, सिद्धांत, गुण, शक्तियाँ क्या हैं ? के उत्तर अलग-अलग हैं।

4. पूजा पद्धति और उपासना के नियम :- संसार के सभी धर्म अपने अनुयायियों को ईश्वर को याद करने के लिए अलग-अलग विधियाँ बताते है। कुछ लोग अपने धर्म के संस्थापक को ही ईश्वर का रूप मान कर उसे ही याद करते हैं, कुछ ईश्वर का काल्पनिक रूप बना कर उसे याद करते हैं, जबकि कुछ धर्म ईश्वर को निराकार मानते हैं। कुछ धर्म निर्जीव चिह्न को ही मान्यता देते हैं। हर धर्म की पूजा पद्धति भी अलग-अलग है। कोई नमाज पढ़ता है, कोई आरती करता है, कोई अपने गुरु की रचना को पढ़ता है, कोई शब्द का सिमरन करता है, कोई निर्जीव चिह्न का ध्यान करता है, कोई निराकार का ध्यान करता है। हर धर्म अपनी पूजा-पद्धति, अपने विचार, अपने नियम और सिद्धांतों को ही श्रेष्ठ मानता है। इसी कारण द्वंद्व हैं, मत-मतान्तर हैं। आज धर्म के नाम पर जो खटास है, नफ़रत है उसका कारण इन्सान है धर्म नहीं। हर धर्म इन्सान को अच्छा इन्सान बनाने का प्रयास करता है परन्तु इन्सान धर्म के अनुसार नहीं चलता अपितु धर्म को अपने अनुसार चलाने की कोशिश करता है। अपनी इच्छाओं और अपनी आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए धर्म को साधन के तौर पर प्रयोग करता है। यदि हर इन्सान दूसरों को अपने जैसा समझे और अपने धर्म का निष्ठापूर्ण पालन करे तो यह संसार स्वर्ग बन सकता है क्योंकि इन्सान का सच्चा धर्म तो इन्सानियत ही है। यदि हर इन्सान ईश्वर के सिद्धांत कि "दूसरों से ऐसा व्यवहार करो जैसा व्यवहार आप अपने लिए दूसरों से चाहते हो" को अपने जीवन में लागू करे तो इन्सान का जीवन इस संसार में स्वर्ग समान अपने आप हो जाएगा।

प्रश्न 5: पुरुषार्थ और कर्मफल से क्या अभिप्राय है ?

उत्तर : पुरुषार्थ और कर्मफल जीवन रूपी नदी के दो किनारे हैं जिनमें से इन्सान की जीवन धारा गुज़रती है। जब एक किनारा टूट जाता है तो जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है। ईश्वर ने इन्सान और अपने बीच एक सीमा-रेखा खींच रखी है। जो कार्य ईश्वर का है वह ईश्वर ने करना है, जो कार्य इन्सान का है वह इन्सान ने करना है। ईश्वर कर्मफल दाता है, वह इन्सान को उसके कर्मों का फल देता है और इन्सान का कार्य पुरुषार्थ करना अर्थात कर्म करना है। अपने शरीर की देख-भाल करना, अपने परिवार का पालन-पोषण करना, समाज और देश के प्रति दायित्वों का निर्वाह करना, ईश्वर के बारे ज्ञान प्राप्त करना और उसे हमेशा याद रखना यह इन्सान का कर्म है। यदि कोई कहे कि रोटी अपने आप मेरे मुख में चली जाए तो यह नहीं होगा, क्योंकि ईश्वर वही कार्य करता है जो इन्सान के वश में नहीं होता। जैसे धरातल के नीचे पानी, खनिज पदार्थ, पैट्रोल इत्यादि को पैदा करना ईश्वर का कार्य है परन्तु इनको खोजना और निकालना इन्सान का कार्य है। ईश्वर यश या अपयश अपने ऊपर नहीं लेते। आज तक जितनी भी खोजें हुई हैं या हो रही हैं उन सब का प्रेरणा स्रोत ईश्वर ही हैं। वे ही इन्सान के मन में जिज्ञासा उत्पन्न करते हैं और सफ़लता प्रदान करते हैं। ईश्वर तो दिखाई नहीं देते, इस लिए यश उस इन्सान को ही मिलता है जिस ने खोज की हो। परन्तु यदि किसी कारणवश सफ़लता नहीं मिलती तो इन्सान दोष ईश्वर को देता है। ईश्वर तो कर्मफल दाता है वह सबके साथ न्याय करते हैं परन्तु वह न्यायप्रिय होते हुए भी दयालु हैं। इन्सान कर्म तो कर सकता है परन्तु फल उसके वश में नहीं है। प्रत्येक इन्सान कोशिश करता है परन्तु सफ़लता किसी-किसी को मिलती है। इसलिए इन्सान को चाहिए कि अपने कर्तव्यों को पूर्ण करने के लिए ईश्वर में विश्वास रखते हुए यथा सम्भव प्रयास करे। कोई भी महत्त्वपूर्ण कार्य करने से

पूर्व इन्सान को चाहिए कि वह ईश्वर के समक्ष प्रार्थना करे और जब वो कार्य पूर्ण हो जाए तो उसका धन्यवाद करे। यदि किसी कारणवश उसे सफ़लता नहीं मिलती तो उसे ईश्वर से नाराज नहीं होना चाहिए अपितु प्रार्थना करनी चाहिए और अपना प्रयास जारी रखना चाहिए। ईश्वर दया का सागर है, करुणा का सागर है। जब इन्सान सच्चे मन से सर्वशक्तिमान से प्रार्थना करता है तो वह उसकी रक्षा भी करता है, मार्गदर्शन भी करता है और मदद भी करता है। पुरुषार्थ और ईश्वर की कृपा दोनों मिल कर ही इन्सान का जीवन सफल और सार्थक बनाते हैं।

प्रश्न 6 : अक्षम्य अपराध और क्षम्य अपराध क्या होते हैं ?

उत्तर : इन्सान अपने जीवन में अनेक गलतियाँ करता है। कुछ जान बूझ कर करता है और कुछ अनजाने में हो जाती हैं। ईश्वर कर्मफल दाता है जो इन्सान को कर्मफल देता है। पर वे दयालु और कृपालु हैं। गलती मान कर पश्चाताप कर लेने पर वे उसे क्षमा भी कर देते हैं। क्या सभी गलतियाँ और अपराध क्षमा योग्य होते है ? आज ईश्वर साकार रूप में हैं और स्वयं अपने बारे में ज्ञान दे रहे हैं। उस ज्ञान के आधार पर अक्षम्य और क्षम्य अपराध कौन से हैं, इनका विवरण निम्नलिखित दिया जा रहा है :-

(क) क्षम्य अपराध :

1. अनजाने में किए गए अपराध।
2. अज्ञानतावश किए गए अपराध।
3. मजबूरी में किए गए अपराध।
4. परिस्थितिवश किए गए अपराध।
5. अधर्म के नाश के लिए किसी भी नीति का प्रयोग करते समय किए गए अपराध ।
6. समूची मानवता की रक्षा हेतु किए गए अपराध।
7. मानवता की भलाई के लिए किए गए अपराध।
8. मानवता के अहित के विरोध में किए गए अपराध।
9. निःस्वार्थ रहकर किसी इन्सान की भलाई के लिए किया गया अपराध।
10. आत्म-रक्षा या परिवार की रक्षा हेतु किया गया अपराध।

(ख) अक्षम्य अपराध :-

1. नास्तिक होना अर्थात ईश्वर के अस्तित्व को नकारना।
2. माता-पिता का निरादर एवं अवहेलना करना।
3. किसी के किए गए उपकार को भूल जाना।
4. विश्वासघात करना।
5. अपने दुख, कष्ट परेशानियों के लिए ईश्वर से नाराज होना
6. ईश्वर द्वारा मान्यता प्राप्त रूपों का निरादर करना।

7. ईश्वर के सम्पर्क के बिना गुरु बन बैठना।
8. किसी के प्रति झूठी गवाही देना।
9. ईश्वर के साकार रूप का निरादर करना।

प्रश्न 7 : क्या प्रार्थना करनी चाहिए ? यदि हाँ तो प्रार्थना किससे, क्यों और क्या करनी चाहिए ?

उत्तर : ईश्वर और इन्सान एक दूसरे के पूरक हैं। ईश्वर रचयिता है और इन्सान उसकी रचना है। ईश्वर के बिना इन्सान का अस्तित्व हो ही नहीं सकता और ईश्वर को जानने वाला इन्सान ही न हो तो ईश्वर का भी क्या महत्व ? ईश्वर और इन्सान के अपने-अपने कार्य क्षेत्र हैं। इन्सान कर्म करने में स्वतंत्र है, यह उसका कार्य क्षेत्र है। ईश्वर कर्मफल दाता है। कर्मफल देना ईश्वर के कार्य-क्षेत्र के अंतर्गत है, उसने इन्सान को उसके कर्मों का फल देना है। भले ही इन्सान ईश्वर के अस्तित्व को माने या न माने ईश्वर का सम्बन्ध हर इन्सान से रहना ही है। जब इन्सान कर्मफल भोगता है और कष्ट परेशानियों में घिर कर अपने आप को विवश पाता है तो वह उस समय कोई सहारा ढूंढता है जो उसकी सहायता कर सके। उस समय इन्सान ईश्वर से प्रार्थना करता है, क्योंकि अधिकार माँगा जाता है और सहायता के लिए प्रार्थना की जाती है। ईश्वर चाहे कर्मफल दाता है परन्तु वह न्याय-प्रिय होने के साथ-साथ दयालु और कृपालु भी है। ईश्वर ने इन्सान को प्रार्थना करने का अधिकार दिया है। परन्तु प्रार्थना विनम्रभाव और सच्चे मन से सर्वशक्तिमान के समक्ष करनी चाहिए क्योंकि सृष्टि में सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान गिनती में एक ही है। जब इन्सान अपने मन में या बोल कर प्रार्थना करता है तो उसकी प्रार्थना वही सुन सकता है जो उसके भीतर भी हो और बाहर भी हो अर्थात जो हर जगह हो। देवी-देवता, वीर-पीर, भगवान, गुरु, ऋषि-मुनि सर्वव्यापक नहीं होते। परम शक्ति सर्वव्यापक, सर्वरूपिणी और सर्वभुवन वन्दनीय है। इन्सान जिस रूप के समक्ष प्रार्थना करता है, ईश्वर उसी रूप में उसकी प्रार्थना सुनता है और किसी सीमा तक पूर्ण भी करता है। जो भक्त यश स्वयं न लेकर यश ईश्वर को देते हैं, ईश्वर भी यश स्वयं न लेकर यश अपने भक्तों को देते है, अर्थात स्वयं पर्दे के पीछे रह कर अपने भक्तों के नाम रखते हैं। इन्सान का भी कर्तव्य है कि वह ईश्वर के बारे जाने और उसी की शरण में जाए क्योंकि हर रूप में कर्ता परम शक्ति ही है।

प्रत्येक इन्सान की प्रार्थना अलग होती है क्योंकि इन्सान की सोच, रुचियाँ, स्वभाव, आदतें, संस्कार, प्राथमिकताएँ अलग-अलग होती हैं। प्रार्थना तो प्रत्येक इन्सान को करनी चाहिए। जब सुबह नींद से जागे तो सर्वप्रथम प्रत्येक इन्सान को निम्नलिखित प्रार्थना करनी चाहिए —

## सुबह की प्रार्थना

हे ! अनादि-अनंत अगम्य-अगोचर, सर्वोच्च शक्ति के साकार रूप, सर्वगुणसंपंन, सर्वश्रेष्ठ, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, त्रिकालदर्शी, अन्तर्यामी, पूर्ण और अजय, सृष्टि के कर्ता, धर्ता, हर्ता, पूर्ण परमेश्वर, श्री मदन जी ! आपजी के श्री चरणों में हाथ जोड़ कर, सिर झुका कर, विनम्र प्रार्थना है कि मैं एक साधारण इन्सान हूँ, विकारों के वशीभूत हूँ, गलतियों का पुतला हूँ। आज की दिनचर्या में विचरने जा रहा हूँ। मुझ से

जाने या अनजाने में कोई ऐसी कोई भूल न हो जो मुझे आपसे दूर करदे या किसी के मन को ठेस पहुँचाए। मैं मन, वचन और कर्म से वही कार्य करूँ, जिस में आपकी प्रसन्नता हो। कृपया मझे बल व सद् बुद्धि प्रदान करते हुए शुभ आशीर्वाद दें, ताकि मैं सारा दिन व्यवहारिक जीवन में अच्छे कार्य और दूसरों से सद्व्यवहार कर सकूँ और मुझ पर आपकी कृपा दृष्टि बनी रहे। मैं आप का सदैव ऋणी और शुक्रगुज़ार रहूँगा।

रात को जब सोने लगो तो सारे दिन में अपने किए कार्यों का विश्लेषण करें कि आप ने कौन-कौन सी भूलें की हैं। यह विचार करने उपरांत सर्वशक्तिमान से निम्नलिखत प्रार्थना करनी चाहिए —

## शाम की प्रार्थना

हे ! अनादि-अनंत, अगम्य-अगोचर, सर्वोचशक्ति के साकार रूप, सर्वगुणसंपंन, सर्वश्रेष्ठ, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, त्रिकालदर्शी, अन्तर्यामी, पूर्ण और अजय, सृष्टि के कर्ता, धर्ता, हर्ता, पूर्ण परमेश्वर, श्री मदन जी ! आपके श्री चरणों में हाथ जोड़ कर, सिर झुका कर, विनम्र प्रार्थना है कि मैं एक साधारण इन्सान हूँ, विकारों के वशीभूत गलतियों का होना स्वाभाविक है। सारे दिन में अनेकों प्रकार के वातावरण में से गुज़रा हूँ। जाने अनजाने में मुझ से अनेकों भूलें हुई होंगी। आप दया के सागर हो, आनंद के दाता हो, कृपालु हो, सत्य, न्याय और प्यार के प्रतीक हो। कृपया मेरी भूलों को क्षमा करते हुए सद् बुद्धि प्रदान करें ताकि मैं आगे के लिए मन, वचन और कर्म से नेक इन्सान बन सकूँ। मैं आप का आभारी हूँगा।

इस के अतरिक्त इन्सान को कोई भी कार्य आरंभ करने से पूर्व ईश्वर से उस कार्य की सफ़लता के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। जब वो कार्य पूर्ण हो जाए तो उसके लिए धन्यवाद भी करना चाहिए। कई लोगों का मानना है कि ईश्वर से मांगने की क्या जरूरत है, वो तो बिन मांगे ही दे देता है। ईश्वर सर्वगुण सम्पन्न है, उससे बड़ा दाता और कौन हो सकता है ? वह चाहता है कि इन्सान उसे याद करे और उससे प्यार करे। प्रार्थना भी ईश्वर को याद करने का एक ढंग है। प्रार्थना वही करेगा जो ईश्वर में विश्वाश करता है और मानता है कि कोई उसकी प्रार्थना सुनता है और पूरी कर सकता है। इस लिए इन्सान को ईश्वर से प्रार्थना भी करनी चाहिए और मांगना भी चाहिए परन्तु मांग शुभ और उचित होनी चाहिए। यदि किसी कारणवश ईश्वर उसकी मांग पूर्ण नहीं करते तो इन्सान को ईश्वर से नाराज नहीं होना चाहिए क्योंकि ईश्वर तो सदैव ही ठीक होते है। विनम्रतापूर्वक और सच्चे मन से सर्वशक्तिमान से की गई प्रार्थना में बहुत शक्ति होती है।

प्रश्न 8 : श्री मदन धाम में धार्मिक ग्रंथों का वाचन क्यों नहीं किया जाता?

उत्तर : श्री मदन धाम आध्यात्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण केन्द्र है। यहाँ परम शक्ति श्री मदन जी के शरीर द्वारा जनसमूह से सम्बोधित होती है और अपने बारे में ज्ञान क्रियात्मक रूप में स्वयं दे रही है। परम शक्ति वह ताकत है जिसने सृष्टि की रचना की है और उसे नियमों में बांधा है। इन्सान ने जो कुछ भी सीखा है उसी से सीखा है। वही सब की सच्ची गुरु है। उसी ने महान-आत्माओं के साथ सम्पर्क किया और समय, काल व स्थान के अनरूप जितना जरूरी समझा उतना ही ज्ञान दिया। इस लिए कोई भी महान आत्मा परम शक्ति को पूर्ण रूप में नहीं जान पाई। जिसे जितना ज्ञान हुआ उस महान आत्मा ने उसी ज्ञान को आगे लोगों में फैलाया। उस ज्ञान को और महान आत्माओं के जीवन की घटनाओं को कलमबद्ध करने से ही धार्मिक ग्रंथो की रचना हुई है। श्री मदन धाम में परम शक्ति स्वयं अपने ही श्री मुख से आज के इन्सान की सोच, समय, काल और स्थान के अनुरूप जितना जरूरी है उतना ज्ञान क्रियात्मक रूप में दे रही है। उसे ज्ञान देने के लिए ग्रन्थों का वाचन करने की कोई जरूरत नहीं क्योंकि सभी ग्रंथ उसी ने ही लिखवाए हैं। वह तो सर्वज्ञ है और जानती है कि किस ग्रंथ में क्या लिखा है और वह कहाँ तक सत्य है। श्रद्धालुओं को परम शक्ति द्वारा क्रियात्मक रूप में शंका रहित सर्वतःसत्य ज्ञान मिल रहा है, इसलिए यहाँ धार्मिक ग्रंथो का वाचन नहीं किया जाता।